सत्र–03 04 अगस्त, 2025

खण्ड– 08 ------------ सोमवार, ------------

अंक– 13 13 श्रावण,1947(शक)

# दिल्ली विधान सभा

# की

# कार्यवाही

आठवीं विधान सभा

तीसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–08 सत्र–03 में अंक 13 से 17 तक सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विभान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग

**EDITORIAL BOARD**

रंजीत सिंह

सचिव

**RANJEET SINGH**

**Secretary**

महेन्द्र गुप्ता

उप सचिव (सम्पादन)

**MAHENDRA GUPTA**

**Deputy Secretary) Editing(**

# विषय सूची

## सत्र–3 सोमवार, 04 अगस्त, 2025 / 13 श्रावण,1947(शक)अंक–13

### दिल्ली विधान सभा


| क.सं. | विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1 | सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची | 4 |
| 2 | बधाई प्रस्ताव | 5–17 |
| 3 | निधन संबंधी उल्लेख | 18–20 |
| 4 | बधाई प्रस्ताव(नियम–114) | 21–80 |
| 5 | सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात | 81–82 |
| 6 | दिल्ली विद्यालय शिक्षा विधेयक,2025 | 83–100 |
| 7 | सदन में अव्यवस्था | 101–102 |
| 8 | विशेष उल्लेख (नियम–280) | 103–111 |

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र–3 सोमवार, 04 अगस्त, 2025 / 13 श्रावण,1947(शक)अंक–13

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

| क्र.सं. | सदस्य का नाम | क्र.सं. | सदस्य का नाम |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री अहिर दीपक चौधरी | 36. | श्री प्रवेश साहिब सिंह |
| 2. | श्री आले मोहम्मद इकबाल | 37. | श्री पवन शर्मा |
| 3. | श्री अभय कुमार वर्मा | 38. | श्रीमती पूनम शर्मा |
| 4. | डॉ. अजय दत्त | 39. | श्री प्रवेश रत्न |
| 5. | श्री अजय कुमार महावर | 40. | श्री प्रेम चौहान |
| 6. | श्री अनिल झा | 41. | श्री पुनरदीप सिंह साहनी |
| 7. | श्री अनिल कुमार शर्मा | 42. | श्री राज करन खत्री |
| 8. | श्री अरविन्दर सिंह लवली | 43. | श्री राज कुमार भाटिया |
| 9. | श्री आशीष सूद | 44. | श्री राज कुमार चौहान |
| 10. | श्री अशोक गोयल | 45. | श्री राम सिंह नेताजी |
| 11. | सुश्री आतिशी | 46. | श्री रवि कान्त |
| 12. | श्री चन्दन कुमार चौधरी | 47. | श्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह |
| 13. | चौधरी जुबैर अहमद | 48. | श्री रविन्दर सिंह नेगी |
| 14. | डॉ. अनिल गोयल | 49. | श्रीमती रेखा गुप्ता |
| 15. | श्री गजेन्द्र दराल | 50. | श्री सही राम |
| 16. | श्री गजेन्द्र सिंह यादव | 51. | श्री संदीप सहरावत |
| 17. | श्री हरीश खुराना | 52. | श्री संजय गोयल |
| 18. | श्री इमरान हुसैन | 53. | श्री संजीव झा |
| 19. | श्री जरनैल सिंह | 54. | श्री सतीश उपाध्याय |
| 20. | श्री जितेन्द्र महाजन | 55. | श्रीमती शिखा रॉय |
| 21. | श्री कैलाश गहलोत | 56. | श्री श्याम शर्मा |
| 22. | श्री कैलाश गंगवाल | 57. | श्री सोम दत्त |
| 23. | श्री कपिल मिश्रा | 58. | श्री सुरेन्द्र कुमार |
| 24. | श्री करनैल सिंह | 59. | श्री सूर्य प्रकाश खत्री |
| 25. | श्री करतार सिंह तंवर | 60 | श्री तरविन्दर सिंह मारवाह |
| 26. | श्री कुलदीप कुमार | 61 | श्री तिलक राम गुप्ता |
| 27. | श्री कुलदीप सोलंकी | 62 | श्री वीर सिंह धिंगान |
| 28. | श्री कुलवन्त राणा | 63 | श्री विजेन्द्र गुप्ता |
| 29. | श्री मनोज कुमार शौकीन | 64 | श्री वीरेन्द्र सिंह कादियान |
| 30. | श्री मोहन सिंह बिष्ट | | |
| 31. | श्री मुकेश कुमार अहलावत | | |
| 32. | श्रीमती नीलम पहलवान | | |
| 33. | श्री नीरज बैसोया | | |
| 34. | श्री पंकज कुमार सिंह | | |
| 35. | श्री प्रद्यूम्न सिंह राजपूत | | |

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

---

आठवीं विधान सभा, सत्र–3 सोमवार, 04 अगस्त, 2025 ⁄ 13 श्रावण 1947 (शक् )

---

सदन अपराह्न 02.04 बजे समवेत हुआ ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता ) पीठासीन हुए ।

(राष्ट्र–गान जन गण मन)

माननीय अध्यक्ष(श्री विजेन्द्र गुप्ता): एक–एक करके।

## बधाई प्रस्ताव

श्री हरीश खुरानाः जी अध्यक्ष जी, सबसे पहले तो अध्यक्ष जी, आज निश्चित तौर के ऊपर ये एक ऐतिहासिक क्षण है हमारी इस दिल्ली विधानसभा के लिये कि।

माननीय अध्यक्षः आतिशी जी मैं, ऐसा है कुछ आपके और भी मुद्दे रहेंगे तो मैं, एक बार उनको बात कर लेने दीजिये फिर आप कर लीजिये।

सुश्री आतिशी(माननीय नेता, प्रतिपक्ष): नहीं आप बधाई के पात्र तो हैं ही।

माननीय अध्यक्षः बधाई तक सीमित रहेगे तो ठीक रहेगा, हां फिर क्या है कि सदन फिर उसी हिसाब से चल पायेगा ना।

सुश्री आतिशीः सबसे पहले में माननीय अध्यक्ष जी को बधाई देना चाहती हूं।

माननीय अध्यक्षः मैं बधाई तक की इजाज़त दूंगा आपको ठीक है।

सुश्री आतिशीः बिल्कुल, मैं माननीय अध्यक्ष जी को बधाई देना चाहती हूं सभी पक्ष और विपक्ष दोनों के विधायकों की ओर से कि उन्होंने जो दिल्ली विधानसभा को पेपरलैस किया और जो विधानसभा का पूरा उन्होंने revamp किया तो सभी विधायकगणों की तरफ से अध्यक्ष जी को बहुत–बहुत बधाई। एक छोटी सी शिकायत हमारी लेकिन ये है कि आपने विधानसभा का सत्र इतने समय बाद बुलाया लेकिन क्वेश्चन हॉवर नहीं रखा।

माननीय अध्यक्षः फिर करेंगे वो भी करेंगे, आगे बधाई शुरू करो, आगे।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः हरीश खुराना जी।

श्री हरीश खुरानाः आज एक ये दिल्ली विधानसभा के लिये ऐतिहासिक दिन है कि आज दिल्ली विधानसभा हमारी आज पेपरलैस होने जा रही है। हिन्दुस्तान के अंदर बहुत सारी विधानसभायें ऐसी थीं जो पेपरलैस ऑलरेडी हो चुकी थीं अब सामने वालों की मर्जी थी क्यों नहीं किया लेकिन आप बधाई के पात्र हैं, आपको बहुत–बहुत बधाई कि आपने इस ऐतिहासिक क्षण के आज हम लोग गवाह बने हैं और जिस प्रकार से रिकार्ड टाइम के अंदर इसको आपने पूरा किया सदन की ओर से आप बधाई के पात्र होते हैं, बहुत–बहुत बधाई हो।

माननीय अध्यक्षः सतीश उपाध्याय जी, सतीश उपाध्याय जी।

श्री सतीश उपाध्यायः अध्यक्ष जी मैं आपको बधाई देना चाहता हूं वास्तव में देशभर की विधानसभाओं में जिस तरह से आपने ई–विधानसभा पेपरलैस विधानसभा देश के

प्रधानमंत्री मोदी जी के मिशन को आपने रिकार्ड समय में पूरा किया है मैं इसके लिये आपको बधाई देना चाहता हूं और ये बधाई इसलिये भी है कि वास्तव में जिस प्रकार का एप्लिकेशन और जो आपने ट्रैनिंग हम सब लोगों को दी है, समय–समय पर जो अस्सिटेंस जो आपने दी है आज मैं कह सकता हूं कि बहुत ही सुगम तरीके से इस पूरी सिस्टम को हम यूज़ कर सकते हैं 100 दिन में जो आपने उपलब्धि की है उसके लिये हृदय से मैं आपको बधाई देना चाहता हूं, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः तरविन्दर सिंह मारवाह जी।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, आपको बधाई क्योंकि आपने ऐसा काम करके दिखाया है जो कहा है करके दिखाया है। जो मोदी जी के मिशन को आपने दिल्ली क्योंकि दिल्ली राजधानी है अध्यक्ष जी, राजधानी से एक मैसेज जाता है लेकिन निकम्मी सरकार ने जो इसको रोके रखा। 11 साल जो पांच–छः साल पहले हो जाता ये अध्यक्ष जी लेकिन जो विपक्ष का भी, आतिशी जी ने कहा है पक्ष–विपक्ष का हम इकट्ठा करते हैं हम इकट्ठे नहीं हैं इनके साथ क्योंकि इधर करप्शन है इधर ईमानदारी है तो ईमानदारी के साथ रहना चाहिये करप्शन के साथ नहीं रहना चाहिये।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी जो–जो आपने करके दिखाया। तीन महीने में इसको ऐतिहासिक जो इमारत आपने विधानसभा बना दी उसके लिये आपको बहुत–बहुत बधाई। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि आप पर आर्शीवाद बनाकर रखे।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद–धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः इसी तरह सेवा करते रहो यही मैं कहता हूं आपका धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, अनिल शर्मा जी, में अनुरोध करूंगा कि कम से कम सैकेंड मतलब आधा मिनट से कम में बात कहेंगे तो कर पायेंगे सब लोग बात, हांजी। अनिल शर्मा जी का माइक खोल दीजिये।

श्री अनिल शर्मा: आदरणीय स्पीकर साहब, मैं आपको बहुत–बहुत बधाई देना चाहता हूं जो आपने इतने कम समय में ये जो पेपरलैस किया जिससे कि हमारे खाली पेपरलैस होने से एक देश के अंदर काफी विधानसभायें हमारी हो चुकी थीं हमारी दिल्ली विधानसभा उसमें नहीं हुई थी जो उससे पहले जो सरकार थी उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया आपने आते ही इस पर ध्यान दिया और खाली पेपरलैस से पर्यावरण को बहुत फायदा मिलता है जिसके लिये माननीय मोदी जी और हमारी मुख्यमंत्री जी भी उस को को आगे बढ़ा रहीं हैं पर्यावरण को, मुझे लगता है कि ये काम अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है और साथ–साथ जो सौर ऊर्जा। आज जो हम जो ये हॉल चल रहा है चाहे ए.सी. चल रहे हैं जितनी भी चीज़ें यहां पर लाइट चल रही है वो सौर ऊर्जा से चल रही है उसके लिये भी मैं आपको बहुत–बहुत बधाई देना चाहता हूं अध्यक्ष जी, बहुत–बहुत बधाई।

माननीय अध्यक्ष: मनोज शौकीन जी।

श्री मनोज शौकीन: बेहद खुशी की बात है हम सबके लिये कि जो पेपरलैस विधानसभा आज आपने और पिछले रिकार्ड समय के अंदर 100 दिनों के अंदर ना केवल 100 दिनों के अंदर ये कार्य पूरा किया बल्कि इससे सौर ऊर्जा जो आपने यहां सारा का सारा खर्चा जो है जो भारी लागत आती थी सत्र चलने के दौरान और लगभग डेढ़ करोड़ रूपये सालाना इसमें बचत आयेगी। डिज़िटल होने की वजह से बहुत सारी सुविधायें इसमें आपने की हैं, आप बहुत ही बधाई के पात्र हैं और हम सबका सौभाग्य है कि आप जैसा विधानसभा के अध्यक्ष के रूप में हमें मिला है बहुत–बहुत आपको बधाई और बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: अब कुलदीप कुमार जी।

श्री कुलदीप कुमार: सबसे पहले तो अध्यक्ष जी मैं आपने विधानसभा को पेपरलैस किया है उसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं आपका।

माननीय अध्यक्ष: एक चीज़ में और जोड़ दूं ये सब जो लाइट चल रही है ए.सी. चल रहा है ये सोलर पर है इस समय।

श्री कुलदीप कुमार : हां, ये भी अध्यक्ष जी बहुत, बहुत खुशी की और बधाई की बात है कि आपने इसको।

माननीय अध्यक्षः पेपरलैस और सोलर में हमारी एसेम्बली इस समय रन कर रही है।

श्री कुलदीप कुमार : विधानसभा को सौर ऊर्जा पर करने का काम किया है और आप इसके लिये बहुत बधाई के पात्र हैं बस साथ–साथ अध्यक्ष जी जहां विधायकों का संरक्षण के लिये विधायकों की विधानसभा के कामों के लिये।

माननीय अध्यक्षः मेरा इतना कहना है कुलदीप जी इसको।

श्री कुलदीप कुमार : अध्यक्ष जी बटन आपके पास ही है क्या, बार–बार बंद हो जाता है।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं ये देखिये अभी ये जिस विषय पर बात हो रही है उस पर आप करिये बाकी आपको मौका मिलेगा।

श्री कुलदीप कुमार : नहीं अध्यक्ष जी ये तो विधायकों का विशेषाधिकार का विषय है ये तो होना चाहिये था।

माननीय अध्यक्षः कौन सा।

श्री कुलदीप कुमार : क्वेश्चन आज कौन सा।

माननीय अध्यक्षः वो करेंगे ना बात आपसे, अगला अभी करनैल सिंह जी, करनैल सिंह।

....व्यवधान........

श्री करनैल सिंहः माननीय अध्यक्ष जी, आपको मैं बहुत–बहुत शुभकामनायें देता हूं जो सारे सदस्यों के लिये आपने ये पेपरलैस विधानसभा को बनाया है। जब हम पिछली बार आये थे तो मैंने जितने हमें क्वेश्चन और बिल पेश हुये और ये सारी चीज़ें थीं एक–एक विधायक के लिये 20–20, 25–25 किलो ये कागज़ लगता था उसको आपने जो सेव किया पर्यावरण को बचाया उसके लिये आपको शुभकामनायें देता हूं और उसके

साथ–साथ जो आपने ऊर्जा का 500 किलो वॉट का जो लगाया है और जैसा कि अभी आपने बताया पूरी विधानसभा में हमें हर साल तकरीबन पौने दो करोड़ रूपये की इससे बचत भी होगी और सारा का सारा हमारा ये सब कम्प्यूटर, ए.सी और सब सौर ऊर्जा से चलेंगे इसके लिये आपका बहुत–बहुत शुभकामनायें देता हूं जय श्रीराम।

माननीय अध्यक्षः अशोक गोयल जी।

श्री अशोक गोयलः दिल्ली देश की राजधानी है राजधानी में ई–विधानसभा नहीं थी जबकि ज्यादातर विधानसभा में थी और जब हम चुनकर आये तो आपने इसको एक चैलेंज के रूप में लिया और 100 दिन के अंदर करके दिखाया इसके लिये आप अभिनंदन के पात्र हैं इस बार सभी मिलकर जोरदार अभिनंदन करेंगे क्योंकि ये जो प्रधानमंत्री जी का मिशन है डिजीटल इण्डिया उस मिशन को भी आगे बढ़ायेगा और साथ ही साथ ये जो सौर ऊर्जा जिसको लेकर आपने 500 किलो वॉट का यहां पर लगाया, बचत शुरू हुई जो हम पेड़ लगाने का अभियान पर्यावरण के लिये लेते हैं कि एक पेड़ माँ के नाम, आपने इतने टन जो कागज़ बचा दिये उससे पेड़ बचेगा इसके लिये भी आपने ये जो पहल की है निश्चित रूप से आप बधाई के पात्र हैं और सौर ऊर्जा विधानसभा से लगने से जो पूरे दिल्ली के अंदर जो प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना है उससे भी लोगों को प्रेरणा मिलेगी और उस योजना के अन्तर्गत मोदी सरकार 78 हज़ार रूपये की सब्सिडी दे रही है और रेखा गुप्ता जी की सरकार 30 हज़ार सब्सिडी दे रही है और मुझे ये लगता है कि विधानसभा में ये आपने जो सौर ऊर्जा का यहां पर लगवाया है उससे दिल्ली के नागरिकों को भी प्रेरणा मिलेगी और बढ़ी संख्या में लोग अपने घरों पर भी सौर ऊर्जा लगायेंगे आप इसके लिये बहुत ही बधाई के पात्र हैं मैं अभिनंदन करता हूं आपका।

माननीय अध्यक्षः हरीश खुराना जी।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः अच्छा हो गया, एक मिनट, अजय महावर जी।

श्री अजय महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं भी अपनी ओर से मैंने आपकी पिछले 100 दिनों की मेहनत देखी है। जब–जब भी हम विधानसभा आते थे और कई बार कमेटी की बैठकों के कारण भी आते थे कई बार अन्य कामों से भी आते थे तब आपको रात–दिन यहां पर मेहनत करके और एक लिमिटिड टाइम लाइन में इसको पूरा करने का जो अदम्य आपने प्रयास किया उसके लिये पूरे सदन की ओर से आपको बहुत–बहुत बधाई। एक निश्चित टाइम लाइन में आपने इसको पूरा किया और सच बात तो ये है कि ये पहले भी हो सकता था पर कुछ लोगों ने सोचा कि प्रधानमंत्री जी को क्रैडिट ना मिल जाये इस वजह से इसको डिले करते रहे, स्वीकार नहीं किया लेकिन आपने केन्द्र के साथ मिलकर सहयोग करके जो दिल्ली को जो सचमुच अशोक जी भी कह रहे थे राजधानी है और राजधानी के एक हैरिटेज़ होने के बावजूद आपने इतनी सुन्दर ढंग से इसकी बैठने की व्यवस्था लाइटें, माइक, टैब्स और यहां तक कि मैं देख पा रहा हूं की पांच–पांच स्क्रीन आपने कर दिये हैं ताकि किसी भी मैम्बर्स को देखने में असुविधा ना हो, मैं पुनः दिल की गहराईयों से आपका बहुत–बहुत अभिनंदन करता हूं और माननीय रेखा गुप्ता जी उनके Council Of Ministers सभी ने मिलकर के इसमें सहयोग किया आप सबका भी बहुत–बहुत आभार प्रकट करता हूं।

माननीय अध्यक्षः शिखा रॉय।

सुश्री शिखा रॉयः धन्यवाद अध्यक्ष जी बोलने के लिये समय दिया। अध्यक्ष जी आपकी जो प्रतिबद्धता है इस सरकार की जो प्रतिबद्धता थी कि जनता के पैसे का सदुपयोग हमें करना ही करना है उसका पहला उदाहरण आपने इस विधानसभा परिसर को पेपरलैस करके और सौर ऊर्जा से उसको लैस करके किया है क्योंकि जो बचत होगी उसकी चर्चा मेरे साथियों ने की है। मैं तो आपकी personal dedication of precision को यहां साधुवाद देती हूं कि जब पिछले सत्र में आपने ये कहा कि मैं इसको कर दूंगा या मैं करना चाहता हूं तो मुझे लगा की एक परिकल्पना होगी एक विषय को लिया जा रहा है जो साल दो साल मैं कम्प्लीट होगा और हम बीच दौरान में कभी आते भी थे तो लगता नहीं था की इतनी जल्दी लेकिन मुझे लगता है कि जो आपकी इसके प्रति

प्रतिबद्धता है उसने इस परिसर को इतना सुन्दर और सुसज्जित किया है कि जो पहले आकर के एकदम से ऐसा लगता था कि कुछ अंधेरे वाली उसमें हम आ गये हैं आज आपने पूरे उजाले के साथ एक नई ऊर्जा के साथ इस हॉल को सुसज्जित किया है और 100 दिन तो पूरे के पूरे हैं अभी तो पिछले सत्र से और इस सत्र के बीच में ये सब कुछ हुआ है तो आपको बहुत–बहुत साधुवाद है अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः संजीव झा जी, संजीव झा जी का माइक।

श्री संजीव झाः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, मेरी बाकी साथियों का जैसा मानता हूं कि ये ऐतिहासिक कदम है और ऐतिहासिक कदम इसलिये कि आपने पिछले सत्र में कहा और 100 दिन में इसको पूरा कर लिया। मैं बीच में कई बार आता था और मैं देखता था तो जैसे शिखा जी कह रही हैं मुझे भी लगता था ये पूरा कैसे होगा ये नहीं होने वाला, मैंने आपसे डिस्कस भी किया था 15 दिन पहले तो सबकुछ उधेड़ा हुआ है ये कैसे हो पायेगा, आपने कहा हो जायेगा तो मुझे लगा कि शायद इसमें समय लग सकता है लेकिन आप एक–एक दिन समय देकर के और जो इसको संजोया है आप तारीफ के पात्र हैं। सौर ऊर्जा से संचालित हो रही है विधानसभा ये भी मुझे लगता है कि बहुत अच्छा कदम है और आपने विधायक को भी किसी भी तरह का बहाना ना बनें सबको गैजेट भी दे दिया है कि घर पर भी रहे तो काम करे ये बहाना ना रह जाये कि नहीं हम विधानसभा नहीं पहुंच पाये थे, अटेंडेंस भी आपने यहीं करा दिया है तो सबके लिये बहुत शुभकामनायें, आपकी प्रतिबद्धता की मैं तारीफ करता हूं काश सरकार भी इतनी प्रतिबद्ध होती सवाल पूछने से ना डरती क्वेश्चन हॉवर होता तो चार चांद लग जाता मुझे लगता है कि आपकी प्रतिबद्धता से सरकार को भी सीखनी चाहिये कि सवाल से डरे नहीं, काम करें बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद, नीरज बैसोया जी और फिर दीपक चौधरी जी बस और इसके फिर अभी और एजेंडा रह जायेगा और फिर बाद में अंत में हमारे मंत्री श्री रविन्दर इन्द्राज जी।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः अच्छा एक मिनट नीरज बैसोया जी, शोर्ट में दो–दो, बहुत देर हो जायेगी फिर इसमें ।

श्री नीरज बैसोयाः अध्यक्ष जी मैं आपको बहुत–बहुत बधाई देता हूं हम सबकी तरफ से आपको बहुत–बहुत बधाई है जितना बड़ा दिल आपने रखा है अब संजीव झा जी ने बात की वैसे विषय नहीं है सिर्फ इतना ऐसा विषय नहीं है लेकिन एक बात में कहना चाहता हूं संजीव झा जी हमारे अध्यक्ष की और हमारे मंत्रियों की काबिले तारीफ मत करो।

....व्यवधान........

श्री नीरज बैसोयाः देखो आपके स्पीकर साहब ने 10 साल में पूरा नहीं किया, हमारे अध्यक्ष जी ने 100 दिन में कर दिया। अध्यक्ष जी इससे आप समझो खैर हमारे अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद जी। अब दीपक चौधरी जी।

श्री दीपक चौधरीः अध्यक्ष जी, मैं बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं आपको जो आपने पेपरलैस इतने सौ दिनों से कम समय में हमें दिया है और सौर ऊर्जा से लैस जो विधानसभा आप बधाई के पात्र हैं सारे सदन से कहूंगा कि ज़ोरदार तालियों से अध्यक्ष जी का स्वागत करें इस चीज़ के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद भाई साहब।

माननीय अध्यक्षः सूर्य प्रकाश जी और उसके बाद मोहन सिंह बिष्ट जी और अंत में बस हां जी माननीय सदस्य सूर्य प्रकाश जी।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः सारे सदन ने जिस तरीके से आज आपके कार्य की सराहना की है ये तो आपने एक हिस्ट्री कायम कर दी है लेकिन पिछली 11 साल की सरकारों के अंदर जो काम नहीं हो पाये और मैं ये पूरी दिल्ली में इसको छोड़कर बाकी भी विधानसभाओं में पेपरलैस होगा लेकिन सबसे अच्छी बात यह है कि दिल्ली की यह जो विधानसभा है, यह विधानसभा नहीं यह कभी हिंदुस्तान की पार्लियामेंट होती थी। आज उस पार्लियामेंट

के अंदर जो सबसे पहली पार्लियामेंट एक ही पार्लियामेंट इस हिंदुस्तान में थी, जिसका स्वरूप आपने बदला है। आप इस पद पर जिस पद पर आप बैठे हैं आज और आपने तो हमें सीधा खड़ा होना भी सिखा दिया। पहले लोग झुककर बात करते थे. आज मैं पूरे सदन को बताता हूं कि अगर आप छह फुटे भी हैं आप खड़े होकर भी बात कर सकते हैं सीना तानकर अपनी बात को रख सकते हैं। चाहे वह विपक्ष हो और चाहे वह सत्ता पक्ष हो लेकिन अध्यक्ष जी एक बात मैं कहना चाहूंगा कि विपक्ष आज जिस तरीके से हमारी तारीफ कर रहा है, 99 परसेंट काश शर्म के मारे 100 परसेंट करता तो ज़्यादा अच्छा था। क्वेश्चनों से हम नहीं डरते।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अभी आपके पास बहुत समय है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः हम मैदान में भी जवाब देंगे. दिल्ली के मैदानों में भी और यहां भी बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य मोहन सिंह बिष्ट जी।

....व्यवधान........

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी आपके आज के इस और इस विधानसभा में जो आपके माध्यम से ऐतिहासिक फ़ैसला लेकर के दिल्ली ही नहीं पूरे देश के अंदर जिस प्रकार से हम और जगह जाते थे और विधानसभाओं में देखते थे और आज इसको पूरी तरह से नोवा के साथ इसको जोड़ने का जो आपने प्रयास किया वास्तव में इसके लिए आप अभिनंदन के पात्र भी हैं धन्यवाद के पात्र भी हैं। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हो कई बार वो चेयर पर आरोप पर प्रतिरोप करते थे कि हमें बोलने नहीं देंगे और बोलने नहीं देते अध्यक्ष महोदय मैं विपक्ष के जितने भी अपने मित्र हैं मैं उनसे कहूंगा सामने देख लीजिए आप कितने मिनट बोल रहे हैं ये अब आपकी टाइम को भी बतायेगा स्पीकर

की पारदर्शिता को भी दर्शायेगा ये मैं कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय इससे सिर्फ कंप्यूटराइज सिस्टम सिर्फ इतना नहीं वास्तव में इससे पर्यावरण जो हमारा सपना था जो मेरे प्रधानमंत्री का सपना था जिसकी वजह से हम किताबों का बोझ लेकर पेपरों का बोझ लेकर के हाउस के अंदर आते थे उस पर्यावरण को भी बचाने का काम आपने इस दिल्ली की विधानसभा से करके दिखाया उसके लिए तो अभिनंदन है लेकिन आपने सबसे बड़ी बात यहां से हुआ यह दिल्ली या अन्य प्रदेशों के लोग आयेंगे तो जब हमारी विधानसभा को देखेंगे तो हमें भी उनको भी गर्व होगा ये भी हमारी श्रेणी में जुड़ गया है इतना ही मैं कहना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद–धन्यवाद।

श्री मोहन सिंह बिष्टः और मैं वास्तव में आभार प्रकट करना चाहता हूं, विपक्ष को भी दिल खोल के करना चाहिए उसमें क्या ऐसी बात है, यदि अध्यक्ष जी ने या सरकार ने कोई ऐसा काम किया हो जिससे हमारा मान–सम्मान, स्वाभिमान बढ़ता हो तो अभिनंदन करने में बिल्कुल पीछे नहीं हटना चाहिए।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः और इन्हीं शब्दों के साथ आपका बहुत–बहुत आभार बहुत–बहुत धन्यवाद

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य कुलवंत राणा जी और उसके बाद हमारे मंत्री श्री रविन्दर इन्द्रराज जी।

श्री कुलवंत राणाः अध्यक्ष महोदय आपने सच में 100 दिन के अंदर जो निर्णय लिए हैं और जो विधानसभा को आपने बिजली में आत्मनिर्भर बनाया पेपरलैस किया और इसको बेहतर बनाने पर काम किया है और बहुत सारे प्रमुख लोगों को बुलाकर के उनसे भी शुभारंभ और उद्घाटन कराये हैं यह सभी समान सदस्यों के लिए एक दिशा का काम है कि ये किस प्रकार से विधानसभा अध्यक्ष काम करें उसी प्रकार सरकार काम कर रही है और ये विपक्ष के लोगों के सामने एक सीखने की भी आवश्यकता है कि जो काम 11 साल

बाद हो रहा है 11 साल पहले हो सकता था और आप लोग नाकाम रहे दिल्ली को भी ठीक करने में और विधानसभा में भी जो कि जो आज की आवश्यकता थी, नीड्स थीं उनको भी पूरा करने में यह आपके लिए भी एक दिशा देने वाला कार्य है तो निश्चित रूप से अध्यक्ष जी आपने और सम्मानीय सदस्यों को भी मैं बताना चाहूंगा कि आपके भी इस प्रकार के लक्ष्य हों अपनी विधानसभा के लिए दिल्ली के लिए कि मुझे आने वाले 100 दिन में या इस एक साल में यह करना है। अध्यक्ष जी आप निरंतर विकास के अभिप्राय रहे हैं, आपने बहुत काम किया है आपने विधानसभा में भी और अन्य–अन्य जो आप नेता विपक्ष रहे, कॉर्पोरेशन में स्थाई समिति के अध्यक्ष रहे उसमें भी आपने बहुत अच्छे निर्णय किये हैं और आपने अपनी उपस्थिति दिल्ली में अध्यक्ष के नाते दर्ज करा दी है कि कैसे काम होता है, निश्चित रूप से आप बधाई के पात्र हैं और आप इसी दिशा में और आगे बढ़ते रहें और मैं यह भी चाहूंगा कि सुखदेव साहब का अस्तित्व और भगत सिंह साहब का स्टैच्यु जो यह सही स्थान उसके लिए निश्चित नहीं कर पाई विपक्ष के लोग।

माननीय अध्यक्षः चलिये।

श्री कुलवंत राणाः उसके लिए जिस प्रकार की उनकी गरिमा है ठीक है तो वह स्टैच्यु एक सही स्थान।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद धन्यवाद अब आदरणीय मंत्री श्री रविन्दर इन्द्राज जी।

माननीय समाज कल्याण मंत्री(श्री रविन्द्र इन्द्रराज सिंह): आदरणीय अध्यक्ष जी जिस प्रकार से

100 दिन की जहां दिल्ली की सरकार की व्याख्या पूरी दिल्ली की जनता के बीच रखी गई उसकी सराहना की गई वैसे ही 100 दिन के अंदर पेपरलेस और उसके साथ–साथ सोलर पर अभी आपने कहा कि ये जितना ए.सी का आनंद अभी सब लोग ले पा रहे हैं वो सोलर ऊर्जा से मिल पा रही है तो आपको बधाई है, बधाई के साथ–साथ एक दृष्टिकोण है जो पिछले 27 साल में नहीं हुआ वह आपने पांच महीने कुछ दिनों में कर दिखाया आप इसके लिए बधाई के पात्र हैं। तो मैं आपको धन्यवाद देता हूं और आभार

व्यक्त करता हूं कि आपने जिस दृष्टिकोण से इस विधानसभा को ऐतिहासिक थी, और ऐतिहासिक बनाकर दिखाया है उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं बहुत–बहुत आभार।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण, आप सबका आज के इस तीसरे सत्र में ह्रदय की गहराइयों से अभिनंदन और स्वागत है। ये बात तो सही है कि जब दूसरा सत्र समाप्त हो रहा था तीन अप्रैल को तो हम सब ने ये संकल्प लिया था कि तीसरे सत्र के लिए जब हम लोग आयेंगे तो हम विधानसभा को एक नए रूप में सोलर से प्रकाशवान और नेशनल ई–विधान एप्लीकेशन से युक्त पायेंगे और मुझे खुशी इस बात की है कि हम अपने संकल्प को सिद्धी में परिवर्तित करने में सफल हुए और मैं देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का भी आभार प्रकट करना चाहता हूं इस अवसर पर कि उनके प्रेरणा से नेशनल ई–विधान एप्लीकेशन में जो हमें केन्द्र सरकार का सहयोग मिला है वो अतुलनीय है। जिस तरह से Ministry of Parliamentary Affairs ने जिस तरह से एनआईसी ने और बाकी सभी विभागों ने जहां भी हमें आवश्यकता पड़ी हमारा पूरा सहयोग किया है उसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूं। सूर्य प्रकाश जी ने एक बात जो विशेष कही, मेरे कान पर आप देख रहे हैं लगा हुआ ये आप सबके पास भी उपलब्ध है, सबको दे दीजिए इयरफोन। ये हर सीट पर होना चाहिए। हमने जो माइक की व्यवस्था की है इस बार वो बेहतरीन है और अगर सदन में कुछ शोरगुल भी होगा तो आप इसका इस्तेमाल करेंगे तो आपको जो माइक पर जो बात कर रहे हैं वो आपको बहुत स्पष्ट सुनाई देगी उसका उस पर असर नहीं पड़ेगा, कार्यवाही चल सकती है। तो इसलिए इसमें साउंड और ई–विधान सोलर से युक्त और एक ये नया स्वरूप पूरा सदन का उसके लिए हम सब लोग आज इस अवसर पर इसका जो खुशी का इजहार आपने किया है मैं उसके लिए आपका बहुत–बहुत आभारी हूं। मैं दिल्ली की सरकार में मुख्यमंत्री जी का भी बहुत हृदय से आभार और अभिनंदन करना चाहता हूं। उनकी पूरी टीम ने इस पर पूरा सहयोग किया है। सभी मंत्रियों का, सभी विभागों का पूरा सहयोग इसमें मिला है तभी ये काम हो पाया है। ये कोई एक व्यक्ति के करने से संभव नहीं था। ये सबके मिलेजुले प्रयासों से एक टीम वर्क के तौर पर ये काम हुआ है उसके

लिए मैं मुख्यमंत्री जी का बहुत–बहुत अभार प्रकट करता हूं। साथियों, मुझे उम्मीद है कि पिछले सत्रों की तरह यह सत्र भी चर्चा, संवाद और सुझावों से भरपूर रहेगा तथा हम सब मिलकर जनहित के महत्वपूर्ण फैसले ले सकेंगे। मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे सदन की कार्यवाही को शांतिपूर्ण, अनुशासित तथा मर्यादित ढ़ंग से चलाने में सहयोग दें और शालीनता से अपने विचार सदन में प्रकट करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि सदन का समय खराब न हो, साथ ही कार्यसूची में सूचीबद्ध विषयों के अतिरिक्त किसी भी अन्य विषय को अनुमति के बिना न उठाये। सदस्यों के विचार अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन हमें एक–दूसरे के विचारों का सम्मान करते हुए कार्य करना चाहिए। मुझे आशा है कि आप सदन की कार्यवाही को सुचारु रूप से चलाने में मुझे सहयोग देंगे और इस सत्र को जनहित में सार्थक और सफल बनाएंगे। माननीय सदस्यगण, जब सदन की कार्यवाही अभी शुरु होनी थी कि माननीय नेता विपक्ष, आतिशी जी ने बधाई संदेश पर चर्चा प्रारंभ कर दी। अब विपक्ष की तरफ से बधाई संदेश आए इससे बढ़िया सदन का माहौल और क्या हो सकता है इसलिए मैंने भी उत्साह में उनको अलाओ किया और फिर वो चर्चा चलती गई लेकिन चूंकि इसमें मैं आतिशी जी का विशेष आभारी हूं कि उन्होंने इस चर्चा को शुरु किया और ये वास्तविकता में इस सदन से जुड़ा हुआ मामला है, ये कोई राजनीति से प्रेरित विषय नहीं है ये हम सबके लिए एक गर्व का विषय है तो मैं उनका भी आभार प्रकट करता हूं उन्होंने जो सहयोग प्रकट किया।

## निधन संबंधी उल्लेख

अब मैं कुछ सदन के समक्ष जो हमारे शोक संदेश हैं वहां से कार्यवाही को प्रारंभ कर रहा हूं।

दिल्ली विधानसभा के पूर्व विधायक श्री जयकिशन जी के निधन पर शोकसंवेदना। माननीय सदस्यगण, गत 17 अप्रैल, 2025 को दिल्ली विधानसभा के पूर्व विधायक श्री जयकिशन जी का निधन हो गया। वे 67 वर्ष के थे, वे 4 बार विधायक चुने गये और

पहली, तीसरी, चौथी और पांचवीं विधानसभा के सदस्य रहे। उन्होंने सुलतानपुर माजरा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था। सामाजिक कार्यों में उनकी गहन रूचि थी और वे अपने क्षेत्र की जनता के मुद्दों को सक्रियतापूर्वक सदन में उठाते थे। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से स्वर्गीय श्री जयकिशन जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

दूसरा शोक संदेश, पहलगाम हमले में मारे गये नागरिकों के प्रति शोक संवेदना। माननीय सदस्यगण, आप सब जानते हैं कि जम्मू एवं कश्मीर के पहलगाम क्षेत्र में दिनांक 22 अप्रैल, 2025 को आतंकी हमले में 26 निर्दोष नागरिकों की निर्मम हत्या कर दी गई। यह कायरतापूर्ण हमला पर्यटकों को लक्ष्य बनाकर किया गया तथा इसने पूरे देश की आत्मा पर गंभीर प्रहार किया। यह घटना देश की राष्ट्रीय एकता और अखंडता तथा सार्वजनिक सुरक्षा के विरुद्ध सुनियोजित और संगठित आतंकवाद की कुटिल मानसिकता का परिचायक है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इस हमले में दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

माननीय सदस्यगण, आपको विदित होगा कि दिनांक 4 जून, 2025 को बैंगलूरू स्थित चिन्नास्वामी स्टेडियम में आईपीएल के विजय समारोह के अवसर पर भीषण भगदड़ में 11 लोगों की मौत हो गई और कम से कम 33 लोग घायल हो गये। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा शोकसंतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

माननीय सदस्यगण, आपको विदित है कि दिनांक 12 जून, 2025 को अहमदाबाद में एयर इंडिया का विमान एआई–171 क्रैश हो गया और इसमें सवार यात्रियों और

चालक दल के सदस्यों सहित 241 लोगों की मौत हो गई जिनमें गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी भी थे। साथ ही इस प्लेन के टकराने में अहमदाबाद मेडिकल कालेज के डॉक्टरों की जान भी चली गई और कई अन्य गंभीर रूप से घायल हुए। इस घटना में कम से कम 270 नागरिकों की मौत हो गई जो एक अपूर्णीय क्षति है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें तथा पीड़ित परिवारों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

माननीय सदस्यगण, आज सुबह एक दुखद सूचना आई । आप सबको जानकर दुख होगा कि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन का आज दिनांक 4 अगस्त, 2025 को निधन हो गया। वे 81 वर्ष के थे और लंबे समय से बीमार थे। उन्होंने आदिवासी अधिकारों, सामाजिक न्याय तथा झारखंड राज्य के निर्माण में योगदान दिया। वे लगभग 4 दशकों तक सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय रहे। उनके निधन से झारखंड और राष्ट्रीय राजनीति में एक युग का अंत हो गया। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से स्वर्गीय श्री शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। अब दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए सदन द्वारा 2 मिनट का मौन धारण किया जाएगा।

(सदन द्वारा 2 मिनट का मौन धारण किया गया।)

ओम शांति–शांति–शांति।

## बधाई प्रस्ताव (नियम–114)

माननीय सदस्यगण, भारतीय वायुसेना के एक ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने Axiom Mission-IV के माध्यम से अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन आईएसएस की सफल यात्रा की और भारत का गौरवशाली प्रतिनिधित्व किया। उनकी यह उपलब्धि वैज्ञानिक क्षेत्र में भारत की मजबूती को दर्शाती है और युवाओं को प्रेरणा प्रदान करती है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो, रक्षा मंत्रालय और सभी सहयोगी संस्थाओं को इस सफलता के लिए बधाई देता हूं।

माननीय सदस्यगण, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो ने 30 जुलाई 2025 को Nisar, NASA ISRO Synthetic Aperture Radar उपग्रह का प्रक्षेपण किया है। आंध्र प्रदेश के श्री हरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से निसार को GSLV S-16 रॉकेट के जरिये लांच किया गया। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो और सभी सहयोगी संस्थाओं को इस सफलता के लिए बधाई देता हूं। माननीय सदस्यगण, ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव की सफलता पर बधाई। पहलगाम आतंकी हमले के बाद दिनांक 7 मई, 2025 को शुरु किया गया ऑपरेशन सिंदूर ऐतिहासिक रूप से निर्णायक और सफल रहा। भारत की सशस्त्र सेनाओं ने सीमा पार आतंकवादी ठिकानों को लक्ष्य बनाते हुए उनको नेस्तनाबूत कर दिया। इस ऑपरेशन का बहुत कुशलता और संयम के साथ क्रियान्वयन हुआ जिसमें भारत की कुशल और मजबूत सैन्य क्षमता को पूरी दुनिया ने देखा। इस अभियान ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारत किसी भी आतंकी कार्यवाही को सहन नहीं करेगा। इसी कड़ी में दिनांक 28 जुलाई, 2025 को ऑपरेशन महादेव के तहत सुरक्षा बलों ने पहलगाम आतंकी हमले में शामिल 3 आतंकवादियों को श्रीनगर में मार गिराया गया। ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव की सफलता के लिए मैं अपनी ओर से

तथा पूरे सदन की ओर से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, गृह मंत्री श्री अमित शाह जी और रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी और इस कार्यवाही में सम्मिलित सभी सेनाओं, सुरक्षा बलों और खुफिया एजेंसियों को हार्दिक बधाई देता हूं। सेना के उन तमाम जवानों को जिन्होंने इस पूरे घटना चक्र में अपनी जान की बाजी लगाकर और जिस तरह से दुश्मन देश को एक प्रकार से हताशा पर लाकर खड़ा कर दिया, मैं उन सबको भी बधाई देता हूं तथा उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जिन्होंने बहुत योजनाबद्ध तरीके से इस ऑपरेशन को सफल बनाया। यह सदन भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान को नमन करता है और राष्ट्र की सेनाओं और सुरक्षा बलों के योगदान की सराहना करता है। इस विषय पर श्री अभय वर्मा माननीय मुख्य सचेतक ने भी बधाई प्रस्ताव की सूचना दी है। मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि वह अपने विचार व्यक्त करें।

**श्री अभय वर्मा( मुख्य सचेतक):** आदरणीय अध्यक्ष जी, अभी आपके माध्यम से ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव के बारे में हाउस को आपने बताया। जब यह घटनाक्रम 22 अप्रैल को पहलगाम में निहत्थे भारतीय, जो टूरिस्ट बनकर गए थे, तीन आतंकवादी जो कि अब साबित हुआ है कि वह तीनों पाकिस्तानी थे वो धर्म पूछकर सबको मौके पर छलनी कर दिया, उनकी पत्नी उनके बच्चे वहीं खड़े थे और यह निर्दयी नृशंस जो भी शब्द कहा जाए वह कम होगा, करने के बाद देश के लोग सकते में आ गए थे कि कट्टरता की यह प्रकाष्ठा कि आप धर्म पूछ रहे हैं, कपड़े उतरवा रहे हैं और उसके बाद उसके परिवार के सामने उसको मार रहे हैं। जब यह घटना घटित हुआ तो देश के प्रधानमंत्री जी दिल्ली से बाहर थे, तुरंत वापस आए और मुझे आज भी याद है कि बिहार के मधुबनी जिले में एक रैली में उन्होंने बड़े दुःख और हुंकार के साथ यह कहा था कि एक–एक मौत का बदला आतंकवाद से ही नहीं आतंक के सरगना से लिया जाएगा और फिर सेना को सरकार ने खुली छूट दी। दिन सेना तय करेगी, जगह सेना तय करेगी और समय सेना तय करेगी और इस प्रकार से।

..... व्यवधान .....

श्री अभय वर्मा: अरे भैया ट्रंप भी बताऊंगा, अभी बता दूंगा ट्रंप भी बता दूंगा। सुन लो, सुनो, सुनो अभी हम सेना की वीरता।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्ष: आप अपनी बात को जारी रखिये। देखिए, ये विषय गंभीर विषय है इस पर।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्ष: हां जी।

श्री अभय वर्मा: हां तो रुको ना अभी बताते हैं ना, अभी रुको ना, अभी ट्रंप का भी बताऊंगा, बात पूरी सुन लो।

..... व्यवधान .....

श्री अभय वर्मा: सर जब सेना को।

..... व्यवधान .....

श्री अभय वर्मा: कुलदीप भाई, बैठ जाओ, बैठ जाओ। जब सेना को खुली छूट मिली तो छः और सात मई की रात में 1 बजे, 1 बजे मात्र 23 मिनट में पाकिस्तान स्थित बहावलपुर और पाक आक्युपाइड कश्मीर स्थित मुज्फराबाद और कोखली में सेना ने हमला बोला और जो आतंकी के सरगना थे

माननीय अध्यक्ष: मेरा विपक्ष के सदस्यों से है अनुरोध है कृपया।

श्री अभय वर्मा: उनके अड्डे को ध्वस्त करके 23 मिनट में भारतीय सेना अपने देश वापस आई मैं इस सेना का नमन करता हूं और इनकी वीरता का भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूं।

माननीय अध्यक्ष: कुलदीप जी, आप बैठ जाईये, आप बैठ जाईये।

श्री कपिल मिश्रा (विधि एवं न्याय मंत्री): अध्यक्ष महोदय ये जानबूझकर चर्चा रोक रहे हैं। ये जानबूझकर सेना के खिलाफ सेना के बारे में चर्चा रोक रहे हैं। यह चर्चा जानबूझ कर रोकी जा रही है। इनके पेट में दर्द हो रहा है, इनके पेट में दर्द हो रहा है।

..... व्यवधान .....

श्री अभय वर्माः और जो आक्रमण भारतीय सेना ने की।

..... व्यवधान .....

श्री अभय वर्माः दिल्ली की जनता इस तमाशे को देखकर हंस रही होगी कि आम आदमी पार्टी उन आतंकवादियों की तरफ से खड़े होकर हाउस को डिस्टर्ब कर रही है कहीं न कहीं इनके चेहरे सामने आ रहे हैं। ये चाहते हैं कि पाकिस्तानी आतंकवादी आएं और हमला करें। आपका चेहरा सामने आ रहा है आपको बहुत दिक्कत हो रहा है।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः बैठ जाईये—बैठ जाईये। आपको भी मौका मिलेगा, आपको भी मौका मिलेगा अपनी बात रखने का।

..... व्यवधान .....

माननीय विधि एवं न्याय मंत्रीः जब—जब आतंकवादी मरेगा तब—तब केजरीवाल के चमचे रोएंगे। जब भी आतंकवादी मरेगा ये रोएंगे।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः दो मिनट, मंत्री जी बोल रहे हैं। दो मिनट, दो मिनट बैठ जाईये, मंत्री जी।

माननीय विधि एवं न्याय मंत्रीः जब भी आतंकवादी मरेगा ये रोएंगे।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः कपिल मिश्रा जी बोलेंगे, मंत्री जी का माइक खोल दो।

..... व्यवधान .....

माननीय विधि एवं न्याय मंत्रीः उधर आतंकवादी मरते हैं इधर ये चूड़ियां तोड़ते हैं। तुम पाकिस्तान के मरने पर रोते हो, तुम आतंकवादियों के मरने पर रोते हो।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः देखिये आपको भी मौका मिलेगा आप अपना नाम भेजिए, आप अपना नाम भेजिए आपको मौका मिलेगा। आप भी अपनी बात कहियेगा।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः तो शोर मचाने से तो बात नहीं बनेगी।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, सेना, सेना पाकिस्तान में घुस के आतंकवादियों के अड्डे को ध्वस्त करती है, उसमें हमारे विपक्ष के साथी को ऐतराज है।

माननीय अध्यक्षः आप बैठिये, चलिए शुरू करिए।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः अरे बैठिए, बैठिए।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आप बात करिए। बैठिए—बैठिए। आप अपने नाम दीजिए, जो चर्चा में विपक्ष की तरफ से भाग लेना चाहता है, आप बधाई प्रस्ताव पर जो बोलना चाहता है, आप अपना नाम दीजिए।

श्री अभय वर्माः आप भी बोलना ना जब आपका टाइम आएगा आप बोलना।

माननीय अध्यक्षः अब आपको मौका देंगे हम लेकिन अगर आप खाली शोर मचाएंगे तो ठीक नहीं। नहीं—नहीं वो मंत्री जी, नहीं—नहीं मंत्री जी अगर बोलेंगे तो मैं रोकूंगा नहीं।

सुश्री आतिशी(माननीय नेता प्रतिपक्ष): मेरी बात तो खत्म होने दीजिए।

माननीय अध्यक्षः हां, तो ठीक है ना मंत्री जी ने, देखिए अगर।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः ठीक है, चलिए।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, जब छह स्थानों पर।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः शुरू करिये। आप बैठिए आपको मौका मिलेगा। बैठिए—बैठिए। अभय जी।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आपको मौका मिलेगा आप नाम दीजिए, आप नाम दीजिए ना, हम आपको बुलवाएंगे, विपक्ष से हम बुलवाएंगे। बधाई संदेश को आगे बढ़ने दें।

श्री अभय वर्माः एक कुख्यात आतंकवादी बहावलपुर में अपना अड्डा बना रखा था और जब भारतीय सेना गई और बहावलपुर के अड्डा को उड़ाई तो कम से कम सौ आतंकवादी मरे और उस कुख्यात आतंकवादी के परिवार के दस लोग मरे, ऐसे बदला लिया जाता है सिंदूर का। अगर हमारी बहनें, माताओं को सिंदूर उजाड़ा है तो घर में घुस के मारेंगे यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का आह्वान है और सुनिए अध्यक्ष जी, जब सौ आतंकवादी मर गए तो वो कुख्यात आतंकवादी।

माननीय अध्यक्षः चलिए, अब आप समाप्त करिए।

श्री अभय वर्माः सरेआम रोता है और कहता है कि काश मैं भी मर जाता। यह हम चाहते थे और यह ताकत हमारी सेना ने दिखाया है।

माननीय अध्यक्षः चलिए, धन्यवाद। अब तरविंदर सिंह मारवाह जी।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः हां तो आप नाम भेजिए न। अब आप नाम, नाम आएंगे तभी तो मैं बोलूंगा। आप दीजिए नाम कि आपको जिनको बुलवाना है।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं आप बताईये न आप, नहीं आप बताईये न जिसको बुलवाना है। मैं अपनी मर्जी से बुलवाऊँ या आप बताइये। मारवाह जी।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, मुझे पूरा करने दीजिए लास्ट है, एक सेकेंड पूरा कर लेने दें।

माननीय अध्यक्षः समय का ध्यान रखना पड़ेगा।

श्री अभय वर्माः बस शार्ट कर रहे हैं। अध्यक्ष जी अभी ट्रंप का मामला लेकर आए। मैं इस पर एक लाइन सिर्फ कहना चाहता हूं।

..... व्यवधान .....

श्री अभय वर्माः अरे सुनो ट्रंप कहता है प्रधानमंत्री ने क्या कहा। अरे ट्रंप कहते–कहते अब टैरिफ पर आ गया। क्या बीच में आ रहे हो, अरे सुन तो लो, भाई मेरे सुन तो लो।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः बैठिए–बैठिए।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, जब भारतीय सेना अनेक स्थानों पर बमबारी कर रही थी तो पाकिस्तान के डीजीएमओ, भारत के डीजीएमओ से कहते हैं कि हम सीजफायर चाहते हैं। पाकिस्तान और ट्रंप मिलकर एक नरेटिव बनाने का प्रयास किया गया और भारत को बदनाम करने की कोशिश की गई और जब भारत के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री ने ठोक

कर बोला कि कोई भी तीसरा पक्ष नहीं था तो अब ट्रंप टैरिफ बम लेकर आ रहे हैं। भारत को सकते में डालना चाहते हैं।

माननीय अध्यक्षः चलिए धन्यवाद, धन्यवाद जी। समय का ध्यान रखिए सब लोग।

श्री अभय वर्माः ये भारत नरेन्द्र मोदी का भारत है किसी से डरता नहीं है, आंख में आंख डालकर बात करता है और मुंहतोड़ जवाब देता है, घर में घुसकर मारता है।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः चलिए शुरु करिए, मारवाह जी। मारवाह जी देखिए अब सब समय का सख्ती से पालन होगा। आप शुरु करिए मारवाह जी, शुरु करिए।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः एक मिनट मारवाह जी आप शुरु करिए।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः बैठिए—बैठिए। मारवाह जी।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, सबसे बड़ी बात तो जिस पर चर्चा हो रही है उसमें इतनी चिकचिक नहीं करनी चाहिए इनको, सबसे बड़ी बात है, ये देश की बात है। इनके सभी लीडरों ने कहा हम इक्ट्ठे हैं जब ऑपरेशन सिंदूर हुआ। यहां ये क्या कर रहे हैं, 15 मिनट खराब कर दिए। इनको कोई देश से नहीं लेना और देश से क्या लेना इनको छोटी सी पार्टी है कभी भी बुझ जाएगी।

..... व्यवधान .....

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः XXXX[1]

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, आप मारवाह जी आप अपनी बात कहिए वर्ना आपका समय समाप्त हो जाएगा। ये मारवाह जी ने जो अभी लास्ट 3–4 लाइनें बोली हैं 5 लाइनें ये कार्यवाही से हटा दीजिए, आगे चलिए।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अब अगर अध्यक्ष जी फिर मत कहना अगर इनमें से कोई बोला न फिर झगड़ा बढ़ेगा यहां। पहले कह रहा हूं झगड़ा बढ़ेगा।

माननीय अध्यक्षः आप अपनी बात कहिए।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आप विषय पर आइये। चर्चा को आगे बढ़ाइये।

(विपक्ष के सदस्य नारेबाजी करते हुए)

माननीय अध्यक्षः मेरा विपक्ष के सदस्यों से आपसे अनुरोध है चर्चा को आगे बढने दीजिए।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः चलिए आगे शुरू करिये। चर्चा को आगे बढ़ाईये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, अब देखो अब नहीं बोलने दे रहे ना आप। फिर कहोगे, बोलने नहीं दे रहे ना। क्या बोलें।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः मेरा विपक्ष से अनुरोध है, मेरा विपक्ष से अनुरोध है बैठ जायें। बैठ जायें, बैठ जाईये। बैठिये, बैठिये, बैठिये। बैठिये। बैठिये। आप देखो, मैं आपको चेतावनी दे रहा हूं। आप बैठ जाईये। आपने नाम भेजे हैं, मैं बुलवाऊंगा आपको। आप अपनी बात कहियेगा।

---

[1] चिन्हित अंश माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से हटाए गए।

मुझे नेता, विपक्ष ने नाम दिये हैं चार मैं सबको बुलवाऊंगा। चार लोग बोले हैं आपने, चारों के चारों विपक्ष से बोलेंगे। आपको समय मिलेगा। आप अपनी बात कहियेगा।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः नहीं नेता राम सिंह जी बोलने नहीं दोगे?

माननीय अध्यक्षः हॉ जी शुरू करिये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः बोलने नहीं दोगे?

माननीय अध्यक्षः शुरू करिये। मारवाह जी आप बात शुरू करेंगे या मैं आपका समय समाप्त करूं। आप बोलिये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः बोले क्या जब....

माननीय अध्यक्षः शुरू करिये आप। शुरू करिये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः ऐसा क्या फायदा। मैं नहीं बोलूंगा ऐसे जब तक चुप नहीं होंगे अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः आप शुरू करो।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, ऑपरेशन सिंदूर जो मोदी जी ने जो आज तक किसी प्रधानमंत्री ने करके नहीं दिखाया है। आज तक किसी प्रधानमंत्री ने नहीं करके दिखाया है देश की आजादी के बाद, जो मोदी जी ने करके दिखाया है। एक बार नहीं दो–दो बार। अब देखो फिर, फिर अध्यक्ष जी देखो टोपिक कौन सा चल रहा है, पहले समझा दिया फिर क्या बात.. और...

माननीय अध्यक्षः मैडम प्लीज।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः और किसी बात पर बहस कर लेना। अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी, सबसे बड़ी बात मोदी जी ने देखो जो घटना हुई चाहे विपक्ष के थे पार्लियामेंट में, चाहे पक्ष के थे, सबने निंदा की और आज हमको भी सबको मिलकर निंदा करनी चाहिए। निंदा इस तरह करनी चाहिए जो एक संदेश जाना चाहिए क्योंकि दिल्ली का जो संदेश है पूरे हिन्दुस्तान में जाता है। अध्यक्ष जी, घर–घर में घुस कर मारा है मोदी जी ने। घर–घर में घुस कर मारा है। कभी किसी प्रधान मंत्री ने पहले भी बड़ी–बड़ी आतंकवाद की घटना हुई। देश की आजादी के बाद तीस साल से लगातार आतंकवाद की घटना बढ़ती गई। लेकिन मैं इस मंच से विधान सभा से मोदी जी का और अमित शाह जी ने जो पार्लियामेंट

में कहा है धन्यवाद करना चाहते हैं उनका कि उन्होंने एक दिलेरी से और ना ही हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा है, ना ही हम किसी बम्ब से डरने वाले नहीं है। पहले कभी नहीं वो धमकी दे देता था बम्ब की लेकिन आज जो हमारे निर्दोष हिन्दुस्तानियों के साथ उन बुजदिलों ने आतंकवादियों ने किया धर्म के नाम से कि आप किस धर्म से हो और जात के नाम से इतनी घटना हुई लेकिन हमारे हिन्दुस्तान का नाम मोदी जी के नेतृत्व में....

(समय की घंटी)

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः क्योंकि उन्होंने ऐसा जवाब दिया कि पाकिस्तान कांप–कांप के डर गया। पाकिस्तान को मतलब पहले भी घर में घुस कर मारा था वो भी आप लोगों को याद है। पहले भी घर में घुस कर मारा था जब आतंकवादियों के ठिकाने तहस नहस कर दिये थे उनके घर मे जाकर।

(समय की घंटी)

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः इसी तरह इस बार भी। अब आप देखना क्योंकि आज जब से ये घटना हुई है चार महीने हो गए हैं लेकिन उसके बाद अभी कोई घटना नहीं हुई देखो। कितने डर गए हैं। इस बात को नोट करो अब उनके होंसले जो है टूट चुके हैं आतंकवादियों के। अब उनको पता है कि अगर हम कुछ करेंगे तो दोबारा घर में आकर घुस के मारेंगे और आने वाले समय में बता रहा हूं अध्यक्ष जी अगर पाकिस्तान बाज नहीं आया तो हमारा समझ लो कराची तक राज हिन्दुस्तान का हो जायेगा आने वाले टाइम में, ये मैं बताना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी,

माननीय अध्यक्षः बस हो गया अब। समय हो गया। माननीय मंत्री श्री आशीष सूद जी।

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद): आदरणीय अध्यक्ष जी, आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं इस पवित्र सदन में आज ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव के सम्मान में जो प्रस्ताव आपने पढ़ा जिसको आगे चर्चा के लिए हमारे चीफ व्हिप श्री अभय वर्मा जी ने आपसे निवेदन किया मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने देश के इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव के सम्मान में इस प्रस्ताव पर मुझे बोलने का

अवसर दिया और यहां चर्चा करवाई। ये ऑपरेशन हमारी आर्म्ड फोर्सेज के अद्म्य शौर्य देश की जनता के अटूट विश्वास और वर्तमान में भारत के न्यू नार्मल का परिचायक है। ये वो न्यू नार्मल है, जब हमारी सीमाओं का अतिक्रमण होने के बाद, ये वो न्यू नार्मल है जब टेरेरिस्ट द्वारा कुछ घटना करने के बाद चर्चा या डोजियर नहीं भेजे जाते हैं। ये वो न्यू नार्मल है जब देश की सेनाओं को क्लीयर सिग्नल देकर दुश्मन को नेस्तानाबूद करने का आदेश दिया जाता है और उसके हाथ बांधे बिना उन्हें काम करने का अवसर दिया जाता है। पहलगाम की घटना क्रूर, कायराना तो थी ही। मुझे लगता है कि कोई भी अगर इस घटना के संदर्भ में चर्चा के समय if and but लगाता है तो इससे बड़ा पाप इस देश के प्रति और कोई नहीं हो सकता। निहत्थे, निहत्थे टूरिस्ट को धर्म पूछ–पूछकर point blank range पर गोली मारना और उसके बाद फौज के एक्शन पर सवाल उठाना ये इस देश के साथ द्रोह से कम नहीं गिना जाना चाहिए आदरणीय अध्यक्ष जी।

..... व्यवधान .....

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद): साहब मैंने तो नहीं कहा आप उठा रहे हैं। मैंने कहा आप उठा रहे है? मैने तो कहा अरे भई आप इससे सहमत है ना। कोई उठाये तो उसका वो देशद्रोह गिनना चाहिए। मैने तो नहीं कहा आपने किया। आप क्यों मान रहे हो मैंने आपके बारे में कहा। नहीं–नहीं देखिये, देखिये। हॉ, मैं इसी मानसिकता के बारे में कहता हूं कि जब हम इसके बारे में बात करते हैं आप पूछते हैं पीओके क्यों नहीं लाये। ये दर्शाता है कि आप के मन में आज भी श्री अरविन्द केजरीवाल ने जिस प्रकार सबूत मांगा था उसी मानसिकता को आप आज भी पोषित कर रहे हैं। आपके मन में उस टूरिस्ट के प्रति, देखिये आप के मन में उन टूरिस्ट के प्रति, आपके मन में उन टूरिस्ट के प्रति कोई भावना नहीं है। मैं उनके प्रति, मैं, उन टूरिस्ट जिनकी जान गई थी, उनके प्रति यहां श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने इस हमले में अपनी जान गंवाई और आदरणीय प्रधानमंत्री के decisive political निर्णय का, उनकी decisive political action की प्रशंसा करता हूं। देश की सेनाओं के शौर्य की प्रशंसा करता हूं। मगर जब हम अध्यक्ष जी, यहां पर इस प्रस्ताव पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा करते

हैं तो कुछ मुद्दों पर तो बात होनी बहुत आवश्यक है जिससे ऐसी मानसिकता को देश के सामने उजागर होना चाहिए। अध्यक्ष जी 22 अप्रैल को ये दुर्घटना होती है। प्रधानमंत्री विदेश से लौटते ही सेनाओं को एक्शन देते हैं और देश में सबकुछ नार्मल है, दिखने के लिए प्रधानमंत्री जी बिहार जाते हैं, इनके नेता उस पर सवाल करते हैं संसद में खड़े होकर, कर सकते हैं क्योंकि ये तो सबूत मांगने के आदी हैं। ये सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांगने वाले लोग हैं। आदरणीय मुख्यमंत्री जी हमारे बीच में आई है इस मौके पर। अध्यक्ष जी हमें ये समझना चाहिए, हमें ये समझना चाहिए कि 22 तारीख से छः तारीख तक जब हमारी सेनाओं ने घर में घुस कर मारा तब तक इस देश में हो क्या रहा था और उसका परिचायक जैसे तरविन्दर जी ने कहा कि किस मुद्दे पर हमें बोलना है, किस मुद्दे पर टीका टिप्पणी होनी है इसको समझने की जरूरत है। 22 तारीख से क्या हो रहा था, 22 तारीख से हो रहा था कब पकड़ोगे जी। आप तो कह रहे थे कश्मीर में सब ठीक हो गया। कब पकड़ोगे उग्रवादियों को, कब मारोगे, पाकिस्तान पर हमला कब करोगे। जैसे इनके घर में आकर, अखबार में सूचना देकर पाकिस्तान पर हमला किया जाना चाहिए। इस प्रकार का आचरण देश में रोज चुनौती दे देकर। अध्यक्ष जी छः और सात तारीख को जब नौ आतंकी मुख्यालय उड़ा दिये गए। हाफिज सईद रो रहा था, उसके घर के अनेक लोग मारे गए। आतंकी पाकिस्तान से अपने मुख्यालय उजाड़ देने के पैसे की तगाजा करने लग गए। जनरल्र्स और आईएसआई के बड़े नुमाइंदे ज़नाज़ो में शरीक दिखे। भारत ने पाकिस्तान को हमारे देश में पहलगाम में हमला करने के सात आतंकियों का साथी होने के लिए पूरे विश्व के सामने नंगा करके रख दिया। इस बड़ी बात के संदर्भ में, उस में भारत की सेनाओं को भारत की कूटनीति को, भारत की ताकत को, भारत के सैन्य precision की तारीफ करने की जगह पूछते हैं पीओके कहां है, इनकी जेब में पड़ा है निकाल कर दे देंगे। अमेरिका के उप–राष्ट्रपति ने भारत में फोन किया। प्रधानमंत्री जी एक मिटिंग में थे अभी उन्होंने संसद में कहा उसने कहा, पाकिस्तान बहुत बड़ा हमला करने वाला है, बहुत बड़ा हमला करने वाला है। तो मोदी जी ने कहा, उससे बड़ा हमला होगा। अध्यक्ष जी, हमारी सेनाओं ने बारह में से ग्यारह बेस एयर बेस

नष्ट कर दिए। बारह में से ग्यारह एयर बेस नष्ट कर दिए। नूर खांन एयर बेस, नूर खांन एयर बेस नष्ट हुआ। हमारी ब्रह्मोस ने जाकर कहा जाता है, कहा जाता है, वहां पर पाकिस्तान के nuclear assets है। बताया गया कई दिन तक वहां पर ज़मीन के नीचे धमाके हुए भूकंप आया। मगर मुझे तो लगता है यहां तो भूकंप आज तक आ रहा है। यहां तो भूकम्प आज तक आ रहा है।

( समय की घंटी)

माननीय शिक्षा मंत्री : और इतने सब के बावजूद इतना, सब होने के बावजूद इनको क्या चाहिए राफेल की गिनती चाहिए ये भी शामिल है बी टीम है, इनकी ए टीम मांगती है राफेल की गिनती बता दो, राफेल की गिनती बता दो पूरी। अध्यक्ष जी मैं आपका संरक्षण चाहता हूं कुछ मिनट और दीजिए, कुछ मिनट और दीजिए, प्लीज। महत्वपूर्ण विषय है मैं तीन चार मिनट में समाप्त करता हूं।

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं तीन चार मिनट नहीं, एक मिनट में करिए, प्लीज ।

माननीय शिक्षा मंत्री : पूरी दुनिया जहां ऑपरेशन सिंदूर पर भारत की सैन्य ताकत का लोहा मान रही थी, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कहते हैं कि छः जेट गेर दिए। इन्टरव्यू करने वाली पूछती है, कहां गिर गए? कैसे पता चला? बोले सोशल मीडिया पर पता है। इनको राफेल की गिनती चाहिए । इनको राफेल की गिनती चाहिए। क्योंकि ये भारत को जीतते नहीं देखना चाहते। ये भारत की तारीफ इन्हें नहीं भाती और Dassault के कहने के बाद, राफेल बनाने वाली कम्पनी के कहने के बाद कि कोई जहाज़ नहीं गिरा, इन्हें राफेल की गिनती ज़रूर चाहिए। भारत की इस सैन्य पराक्रम को जोंस स्पेंसर नाम के अमेरीकी chair of urban warfare studies at westpoint कहते हैं, ये एक निर्णायक सैन्य जीत है और आधुनिक आतंकरोधी अभियानों का नया मापदंड है। टॉम कूपर आस्ट्रेलिया के कॉम्बैट aviation एनालिस्ट कहते हैं इसे भारत की स्पष्ट जीत clearcut victory करार दिया जाता है। सोटोर और नागुआ जापान के strategy experts भारत की कार्रवाई को एक ज़िम्मेदार कार्रवाई के रूप में बताते हैं और माइकल कुगलमैन Director of South Asia Institute of Wilson Center ने

माना इस ऑपरेशन ने भारत के ताकत और आत्मविश्वास को confidence प्रदान किया। विश्व भर के अखबारों में माननीय अध्यक्ष जी विश्व भर के अखबारों में ऑपरेशन सिंदूर की भूरि–भूरि प्रशंसा के साथ, विश्व के strategic बताते हैं कि भारत की ताकत, भारत की सैन्य ताकत क्या हुई। इनकी ए टीम के जमाने में, ए टीम के जमाने में तिरेपन हज़ार करोड़ रुपए का बजट था। इनकी आज दो लाख तिरेपन हज़ार करोड़ रुपए के बजट के साथ हम, हम अपनी डिफेंस एचएएल के साथ हम अपनी डिफेंस की equipment पर काम कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष जी, देश ने, देश के, देश के आत्मनिर्भर होने में, देश के डिफेंस सैक्टर के आगे बढ़ने में, इस बड़े घटनाक्रम का, इस बड़े घटनाक्रम का बहुत बड़ा भूमिका है। इसको केवल ऑपरेशन सिंदूर, कुछ आतंकी ठिकानों और कुछ एयर बेस के रूप में नहीं देखना चाहिए। दो लाख तिरेपन हज़ार करोड़ से बढ़कर छः लाख दो, 6.02 लाख करोड़ का यानी दुगने से ज़्यादा डिफेंस बजट और एचएएल जिसको यह और इनकी ये टीम और यह बर्बाद करना बता रहे थे, आज विश्व में तेईस हज़ार करोड़ से ज़्यादा भारत जो केवल छः सौ करोड़ रुपए का एक्सपोर्ट किया करता था defence equipment का तेईस हज़ार आठ सौ करोड़ रुपए का एक्सपोर्ट आज कर रहा है। भारत की इस, इस पूरे, इस पूरे घटनाक्रम ने, मैं अंतिम पंक्तियों के साथ, अध्यक्ष जी आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं, इस पूरे घटनाक्रम ने जो बात स्पष्ट कर दी, वो यह है कि मॉडर्न वार तीन बातों को स्पष्ट किया है। मॉडर्न वारफेयर में भारत की क्षमता को दुनिया ने माना है। एयर फोर्स की ताकत को दुनिया ने माना है और भारत में निर्मित हथियारों की गुणवत्ता देखकर माना है और ये लोग जो बार–बार इतने दिन से पूछते थे, इतने दिन से पूछते थे आतंकवादी कब मारे जाएंगे ये देश की सेनाओं पर चुनौती देते थे। इन्हें याद होना चाहिए अमेरिका पाकिस्तान में बैठा था 10 साल तक बैठा रहा जहां एयरबेस बनाया था जहां आर्मी का बेस था थोडी दूर पर ओसामा बिन लादेन था, 10 साल लग गए अमेरिका को उस ओसामा बिन लादेन को ढूंढकर मारने के लिए। इजरायल और हमास के लड़ाई आज डेढ़ साल से चल रही है डेढ़ साल से चल रही है, हमास को तबाह करने के बाद अपने 21 बंधक डेढ़ साल

से इज़राइल छुड़वा नहीं पाया है। आज 99 दिन हुए हैं 99 दिन के बाद, 99 दिन के अंदर जिन आकाओं ने उन्हें दिल्ली में भेजा था पहलगाम में भेजा था, वे भी नेस्तानाबूद है और वे तीनों आतंकवादी भी उस ऑपरेशन महादेव के अंतर्गत नेस्तानाबूद कर दिये गए है।

माननीय अध्यक्ष : बहुत बहुत धन्यवाद आपका।

माननीय शिक्षा मंत्री : मैं अध्यक्ष जी, आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर इस सदन में चर्चा कराई। दिल्ली की जनता को, देश की जनता को, कौन देश की सेनाओं के साथ है? कौन देश के बढ़ते हुए गौरव के साथ है? कौन भारत की सैन्य क्षमताओं के बढ़ने से खुश है? कौन इस बात से खुश होता है कि विरोधी ने कह दिया तुम्हारे जहाज गिर गए और तुम ताली बजा बजाकर जहाज ढूंढने की कोशिश करो। ऐसे लोगों को उजागर करने के लिए expose करने के लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। इन्हीं चर्चाओं से ऐसे लोग expose होंगे जिन्होंने इस देश की क्षमताओं पर, देश के गौरव पर, सेनाओं के पौरूष पर, सवाल उठाने का काम किया है। मैं आपका आभार व्यक्त करते हुए अपने कुछ शब्द यहीं समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री संजीव झा।

श्री संजीव झाः बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। अभय वर्मा जी ने चर्चा की शुरुआत की थी और अभय वर्मा जी जो बात कही थी मैं उसी वहीं से शुरू करूंगा। अभय जी ने कहा की जब आतंकी पहलगाम आया उस मासूम टूरिस्टों को धर्म पूछ–पूछ कर मारा और नृशंस हत्यायें हुई। आखिर उसका मंशा क्या था? उसका मंशा नृशंस के साथ–साथ था कि इस देश में गृहयुद्ध फैले। दुर्भाग्य ये है कि जिस तरह का काम वह आतंकी कर रहा था उसी तरह का काम इस देश में बैठे कुछ गद्दार भी कर रहे थे। वो भी चाह रहा था धर्म के नाम पर नफरत फैले और यहां इस देश में बैठे कुछ लोग भी चाहते थे कि धर्म के नाम पर देश बंटे और ताकि उसके मंसूबे कामयाब हों। तो कुछ गद्दार तो इस देश में ही है और मुझे लगता है वह तमाम लोग जो बार–बार कहते हैं धर्म के नाम पर, धर्म के नाम पर, नफरत करवाने की कोशिश करते हैं वो उसी आतंकी के मंसूबे को आगे

बढ़ाने का काम करते हैं। मुझे अपने सैनिक के शौर्य पर गर्व है। इसमें कोई दोमत नहीं है कि हमारी सेना ने जो कारनामा किया, पूरा विश्व ने उसे देखा और यह साबित करता है कि अगर सेना को खुली छूट दोगे, तो जो आप कह रहे थे कि हां, कराची तक पहुंचने का माद्दा भारतीय सेना रखती है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि जब सेना पहुंच रही थी जब सेना कह रही थी कि हम कराची तक पहुंचेंगे तो इस देश के मुखिया ने यह फ़ैसला किया। यह फ़ैसला इस देश के मुखिया ने नहीं किया। देश के मुखिया से पहले यह फ़ैसला अमेरिका के राष्ट्रपति ने किया। हम लोगों को जानकारी यह दी गई कि यह फ़ैसला इसलिए लिया गया था कि पाकिस्तान गिडगिड़ा रहा था। पाकिस्तान के सेना अध्यक्ष हमसे बात करने की कोशिश कर रहे थे हम यह कह रहे हैं की जो इस तरह के आतंकी कार्रवाई पहलगाम में किया और अगर वो गिड़गिड़ा रहा है तो उसकी गिड़गिड़ाने की आपने बात कैसे मान ली। फिर तो ये वक्त था, उचित समय था कि पहुंचकर उनको सबक सिखाने का। आखिर ये युद्ध विराम का फ़ैसला क्यों हुआ और बिल्कुल ठीक कह रहे थे आप कि जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने किया मुझे लगता है कि आज तक कोई प्रधानमंत्री इस देश का इस तरह का xxxxx xxxxx[2] निर्णय किसी ने नहीं लिया इस बात से मैं सहमत हूं।

माननीय अध्यक्षः ये अमर्यादित शब्द है।

श्री संजीव झा : मैं ये मानता हूं। नहीं अब मानता हूं। अब मैं कारण बताता हूं।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट। नहीं–नहीं आप अपना शब्द वापिस लीजिए। आपने अमर्यादित शब्द का प्रयोग किया है। देखिए जिस शब्द का आपने इस्तेमाल किया है वो शब्द आप वापिस लीजिए। आपने जो शब्द का प्रयोग किया है वो शब्द वापस लीजिए।

श्री संजीव झाः हमने किसी का नाम नहीं लिया।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं।

श्री संजीव झाः हमने तो प्रधानमंत्री कहा है। हमने किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिया। हमने तो प्रधानमंत्री कहा है।

[2] चिन्हित शब्द माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से हटाए गए।

माननीय अध्यक्षः आपने जो शब्द का जो शब्द का इस्तेमाल किया है वो वापस लीजिए। आप अपने शब्द वापिस लीजिए। यह शब्द कार्यवाही से हटा दिया जाये। ये शब्द...

श्री संजीव झाः हमने, हमने इस देश के, हमने व्यक्ति का नाम नहीं लिया। हमने देश के प्रधानमंत्री का नाम लिया और इस बात से मुझे पीड़ा है कि जब ये मौका था Pakistan occupied Kashmir कब्जा करने का उस वक्त ये फैसला लेना, इस देश के।

माननीय अध्यक्षः चलिए अब आप बैठ जाईये। बैठ जाईये आप। बहुत हो गया।

श्री संजीव झाः इस देश के शौर्य को कम करने की साजिश करना था और उस साजिश से

माननीय अध्यक्षः चलिए धन्यवाद। धन्यवाद।

श्री संजीव झाः उनके इस फैसले से मुझे पीड़ा हुई। हम पीड़ित हैं।

माननीय अध्यक्ष : सूर्य प्रकाश जी। बैठिये आप।

....व्यवधान........

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अध्यक्ष जी, अरे मैं जवाब देता हूं इसको। विधायक जी कुलवंत जी मैं जवाब देता हूं अभी।

माननीय अध्यक्षः सूर्य प्रकाश जी।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः मैं जवाब दूंगा इनको अभी।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट। नहीं—नहीं देखिये। आप अपना शब्द वापिस लीजिए और खेद प्रकट करिये। ठीक नहीं किया आपने।

....व्यवधान........

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : अरे माद्दा रखो। तुम्हें जवाब मिलने वाला है अभी।

माननीय अध्यक्षः आपने अच्छी चलती हुई चर्चा को असंसदीय भाषा का प्रयोग करके...

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः अजय महावर जी आप इसमें स्पष्ट करें क्या कह रहे हैं। क्या कहना चाहते हैं आप। एक मिनट। एक मिनट।

श्री अजय महावरः अध्यक्ष जी मैं यह कहना चाहता हूं कि इन्होंने प्रधानमंत्री जी का नाम लेकर के कोट करके कहा है, वो शब्द बाहर होने चाहिए। उनका नाम बाहर होना चाहिए।

माननीय अध्यक्षः सुनिए, बस ठीक है। मेरा आपसे अनुरोध है आपको मैं मौका दे रहा हूं एक। जो शब्द आपने बोला है, वो देखिये संसदीय प्रणाली में इस तरह के शब्दों का प्रयोग करना इसका मतलब है एक मिनट। एक मिनट

श्री संजीव झाः कौन सा शब्द । शब्द, शब्द। शब्द बताईये।

माननीय अध्यक्षः आपके जो तर्क में आपका जो तर्क..... आपके पास,

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदय शब्द बता दीजिए।

माननीय अध्यक्षः हां, मैं बताता हूं।

श्री संजीव झाः आप मुझे शब्द बता दीजिए।

माननीय अध्यक्षः मैं, मैं बताता हूं। देखिए ऐसा है, सुनिए जो तर्क, आप तर्कसंगत बात कर रहे हैं इसका मतलब आपके पास तर्क नहीं है अपनी बात कहने का, तभी आप हल्के शब्दों का प्रयोग, व्यक्ति हल्के शब्दों का प्रयोग तब करता है, जब उसके तर्कों में दम नहीं होता। आप तर्क से बात करिए। संसदीय प्रणाली में तर्क सर्वसम्मति से हमेशा आमंत्रित हैं।

श्री संजीव झाः मैं तर्क देता हूं अध्यक्ष महोदय। मैं तर्क देता हूं।

माननीय अध्यक्षः लेकिन आपने।

श्री संजीव झाः मैं तर्क देता हूं आपको।

माननीय अध्यक्षः आपने असंसदीय ये शब्द जो है।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष जी मेरी पीड़ा क्यों है।

माननीय अध्यक्षः मैं आप पर कार्रवाई करूंगा। फिर मैं आप पर कार्रवाई करूंगा। आप पर कार्रवाई करूंगा मैं।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष जी हमें बोलने तो दीजिए।

माननीय अध्यक्षः अब नहीं। आप पहले कहिए। आप पहले ये कहिए, अगर मेरे किसी, मेरे किसी कृत्य से सदन को ठेस पहुंची है, सदस्यों को, तो मैं उसको उस पर खेद प्रकट करता हूं। अगर आप कर रहे हैं खेद प्रकट या नहीं, बस बताइए। मैं आपको मौका दे रहा हूं। मैं कार्रवाई करूंगा, मैं चेतावनी दे रहा हूं।

श्री संजीव झाः मैं तो खेद प्रकट कर लूंगा। उस जनता का क्या?

माननीय अध्यक्षः मैं चेतावनी.....

श्री संजीव झाः जिससे आहत हुआ प्रधान मंत्री के फैसले का।

माननीय अध्यक्षः अच्छा तो मैं आपको चेतावनी दूं।

श्री संजीव झाः मैं उनका नुमाईंदा हूं। मेरी जिम्मेदारी ये है कि मैं अपनी जनता की...

माननीय अध्यक्ष : बैठिए। चलिए अब बैठिए। अब, बैठिए।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्ष : आप मुझे कार्रवाई के लिए मजबूर मत करिए, आप बैठ जाइए। सूर्य प्रकाश जी। आपको मौका मिलेगा ना, तो आप बोलिए उस समय। हां, आप अचानक शुरू हो गए ना, देखिए आप। नहीं, नहीं, अभी।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्ष : मैं संजीव झा जी को चेतावनी देते हुए, क्योंकि वो सदन की मर्यादा से छेड़खानी कर रहे हैं। अमर्यादित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, तर्कसंगत बात नहीं कर रहे हैं, इसलिए मैं उन पर कार्रवाई सदन के समक्ष रख रहा हूं, मार्शल्स संजीव झा जी को बाहर ले जायें, संजीव जी को बाहर ले जाएं, चर्चा को आगे बढ़ने दीजिए।

( माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार माननीय सदस्य श्री संजीव झा को मार्शल्स द्वारा सदन से बाहर किया गया।)

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्ष : आप ठीक है, आगे शुरू करिए। जो असंसदीय शब्द जो इन्होंने प्रयोग किया उसको सदन की कार्यवाही से हटा दिया जाए। चलिए। आगे शुरू करिए। शुरू करिए। शुरू करिए।

....व्यवधान........

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी हाउस को ऑर्डर में लो जरा आप।

माननीय अध्यक्ष : आप अपनी बात शुरू करिए अब। वो मेरे ऊपर छोड़ दीजिए। बैठ जाइए। इसका मतलब ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा में आपको कोई रुचि नहीं है बात करने की, कोई रुचि नहीं है, कोई रुचि नहीं है। आप तर्कों पर बात नहीं करना चाहते, गाली गलौज, अपशब्द बोलना, यह कौन सी भाषा है? आप सिर्फ सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए, इस तरह के शब्दों का प्रयोग करना चाहते हैं? बहुत खेद का विषय है। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए तर्क विहीन अपशब्द बोलना, संसदीय प्रणाली में सर्वथा, सर्वथा निंदनीय है और इसलिए सदन की अच्छी–खासी चलती हुई चर्चा पर बधाई प्रस्ताव पर बात हो रही है। वैसे तो ये गौरव का विषय है सबके लिए, लेकिन फिर भी विपक्ष अगर कुछ कहना चाहता है तो हमें कोई दिक्कत नहीं है। हम उनको समय दे रहे हैं, लेकिन बहुत दुःख की बात है। तर्क विहीन बात करके और गाली गलौज करना, यह ठीक नहीं है। शुरू करिए। चलिए, शुरू करिए। अब बात कहां से कहां ले जा रहे हैं, आप नहीं। प्लीज, अभी कोई विषय अचानक वो तो मैं अभी, अभी कोई एक घंटे से तो मैंने देखा नहीं है, कुछ बोला है उन्होंने, मुझे पता नहीं किस बात पर है, वो तो बैठे हैं। अरे बैठे हैं, वह अभी चर्चा। अरे चर्चा चल रही है अचानक, अब पता नहीं क्या विषय लेकर बैठ गए? अब वह बैठे हैं आराम से, मैं उन पर क्या कार्रवाई करूं? क्या कहूं उन्हें?

श्रीमती आतिशी (माननीय नेता प्रतिपक्ष) : आप इनकी भाषा पर रूलिंग दीजिए।

माननीय अध्यक्ष : किस भाषा पर, कौन सी भाषा पर, क्या हुआ क्या है, मुझे बात ही नहीं पता। चलिए अब शुरू करिए।

....व्यवधान........

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : अध्यक्ष जी हाउस को ऑर्डर में लीजिएगा एक बारी।

माननीय अध्यक्ष : आप अपना, आप अपना काम करिए, अगर आपको बोलना है तो तो शुरू करिए आप।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : आदरणीय अध्यक्ष जी, 22 अप्रैल को पाकिस्तानी आतंकवादियों के द्वारा।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः बैठ जाइए, बैठ जाइए।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः आदरणीय अध्यक्ष जी

माननीय अध्यक्षः आपको ऑपरेशन सिंदूर से क्या दिक्कत है? कुछ समझ में नहीं आ रहा? एक अच्छी, देश की गौरवशाली बात हो रही है। करिए उसको बात को, बढ़ाइये आगे।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अध्यक्ष जी, अगर इनके बातों का आप जवाब देते रहोगे, बोलते रहेंगे।

माननीय अध्यक्षः आप अपनी बात करिए।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः तो आप जरा सुनिएगा। आदरणीय अध्यक्ष जी, 22 अप्रैल को पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा कायराना हरकत जो पहलगाम में की, उसके लिए भारत के हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री, इस संसार के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति नरेंद्र मोदी जी ने एक ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत की और उस शुरुआत के दौरान उन्होंने एक बहादुर होने के नाते इस देश की पिछले इतिहास को देखते हुए पहले पाकिस्तान को वार्निंग दी गई। उनकी इस कायराना हरकत के ऊपर हम लोग कार्रवाई करेंगे और जब हमने ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत की तो हमने नौ जगहों को टारगेटिड किया। अध्यक्ष जी, पर कितने दुर्भाग्य की बात है कि हमारी सेना के सफल होने के बावजूद भी उस अटैक के बाद अपनी जान पर खेलकर हमले का सबूत जुटाना पड़ा क्योंकि उनको पता था जैसे मेरे मित्र ने अभी कहा कि कुछ गद्दार दूसरे देशों में बैठे हुए हैं, कुछ गद्दार इस देश में बैठे हुए हैं, जो भारत की

सेना के ऊपर शक करते हैं, सबूत मांगते हैं और हमारे सेना के जवानों ने अपनी जान पर खेलकर उनके लिए सबूत जुटाने के लिए भी रुके, जिसकी वजह से हमारे कुछ नुकसान भी हुए और ये नुकसान अगर हुआ तो भारत में बैठे हुए वो गद्दार जो हमारी सेना के ऊपर उंगली उठाते हैं, उनके शौर्य पर शक करते हैं। यह उन व्यक्तियों के लिए सबूत लाने पर हुआ। अध्यक्ष जी मुझे लगता था कि जिस विषय पर आज हम लोग यहां पर चर्चा कर रहे हैं, आज संपूर्ण विपक्ष खड़ा होकर हमसे ज़्यादा मुखर होकर उस पर बोलेगा। हमारी सेना को सलाम करेगा लेकिन यह सेना का विरोध इनके चेहरों से नज़र आता है। मैं पूछता हूं क्या आप लोगों ने यह प्रस्ताव आप लेकर आए? नहीं। आपने इस प्रस्ताव के ऊपर कोई चिट्ठी लिखी? नहीं। आपने अगर कुछ किया तो भारत की मंशा पर, भारत की वर्दी के ऊपर, भारत की सेना पर शक करने के अलावा इस देश के अंदर कुछ नहीं किया।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्ष : अपनी बारी में कहना, आप अपने बारी में।

....व्यवधान........

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी यह जो आंतकवादी थे, इन आंतकवादियों ने, इन आंतकवादियों ने, बहुत अच्छी बात है। हम आपकी इस बात को तारीफ करेंगे, लेकिन सबूत भी आप ही लोग मांगते हैं। आतंकवादियों ने धर्म पूछ–पूछकर लोगों को मारा। बेगुनाह लोगों को मारा और उसके बाद हमसे कहते हैं, जब अगर कुछ करो तो उसका सबूत लेकर आओ। ये बात हमसे करी जाती है। आज विपक्ष पूछता है, पीओके कब वापस आएगा, पीओके कब वापस आएगा? हम पूछते हैं वापस ही लाना था तो दिया क्यों था? अध्यक्ष जी आज इस देश के अंदर जब जब आतंक पैदा हुआ है, चाहे पंजाब में हुआ हो, चाहे कश्मीर में हुआ हो, उसके सबकी जो देन है, वो विपक्ष के वो लोग हैं जिन्होंने इस देश के अंदर 60 साल

राज किया है। हम धन्यवाद करते हैं मोदी जी का, जो मुम्बई ब्लास्ट के राणा को भारत लेकर आए, जो पिछली सरकारों में कभी भी दम नहीं था इस काम को करने का।

मननीय अध्यक्ष : शॉर्ट करिये।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : आज मैं आपको बता देना चाहता हूं, अध्यक्ष जी, इस सदन के माध्यम से ऑपरेशन सिंदूर को हमने सिर्फ़ पॉज किया है, खत्म नहीं किया है। पाकिस्तान फिर कोई हरकत करेगा, हमारा ऑपरेशन सिंदूर दुबारा से लागू हो जाएगा। आपने बोलने का मौका दिया, आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, शिखा रॉय जी।

सुश्री शिखा रॉय : अध्यक्ष जी, इस सदन में देश के गर्व विश्वास और आत्मबल से भरे हुए इस विषय पर आपने बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं धन्यवाद करती हूं। यह अभियान एक सैन्य अभियान नहीं था यह एक ऐसे राष्ट्र की चेतावनी थी आतंकवाद के उन आकाओं को उनके समर्थकों को और उनके छिपे एजेंट को यह बताने की कि अब भारत सहन नहीं करेगा। ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया को दिखाया है कि भारत सिर्फ अब बयान नहीं देता है, एक्शन भी करता है। यह मिसाल है साहस की, दृढ़ता की और राष्ट्रीय भावना से भरे हुए एक एक्शन की। मैं आदरणीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जी के उन शब्दों को दोहराना चाहती हूं कि यह सिंदूर की लाली नहीं, शौर्य की कहानी है, भारत के मस्तक पर वीरता की यह पहचान है। दुनिया भर में जब इस सिंदूर के बाद प्रतिनिधिमंडल विदेशों में गए तो हर देश में जहां भी हमारा प्रतिनिधि मंडल गया उन्होंने इस ऑपरेशन की भूरि–भूरि सराहना की और हमारा समर्थन जाताया। अध्यक्ष जी हमारा पड़ोसी देश जो स्वयं को परमाणु शक्ति बताकर बार–बार धमकाता रहा है इस ऑपरेशन सिंदूर में हमने उसको घर में घुसकर मारा है। हमारे बहादुर सैनिकों ने आतंकवाद के उन अड्डों को जिसमें नौ आतंकी कैम्प तबाह हुए, लश्कर और जैश के कमांड सेंटर ध्वस्त

हुए, 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए। ये ऑपरेशन नहीं, नए भारत की नीति की घोषणा थी। वह घोषणा क्या थी कि आतंकी हमला अब सिर्फ अपराध नहीं, युद्ध की घोषणा माना जाएगा। यह है अब नए भारत की नीति। अध्यक्ष जी दुःख की बात है कि जब दुश्मनों को सबक सिखाते हुये, हमारे सैनिक अपने पराक्रम को दिखा रहे थे तो देश का एक ऐसा वर्ग जो विपक्ष के बेंचों पर बैठता है या तो चुप था या सवाल उठा रहा था। पहलगाम में धर्म के आधार पर की गई हत्याओं पर कोई निंदा नहीं। हिंदुओं की हत्याओं पर कोई संवेदना नहीं, पाकिस्तान के सुर में सुर मिलना, सेना के पराक्रम पर प्रश्न उठाना, यही राजनीति है इनकी, या ऐसी ही राजनीति की सोच यह रखते हैं और यही इन्होंने की। अध्यक्ष जी हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्पष्ट कहा है कि धरती के आखिरी छोर तक आतंकवादियों को नहीं छोड़ जाएगा और आज पूरी दुनिया देख रही है कि इस ऑपरेशन सिंदूर के मध्य से उन्होंने ऐसा करके दिखाया। ब्रह्मोस ने मारा, आकाश ने रक्षा की और डी 4 ने दुश्मन के ड्रोनों को ढूंढ कर गिराया। यह सिर्फ शौर्य का संदेश नहीं, यह बदले हुए भारत का संदेश है, भारत बदल चुका है। अध्यक्ष जी मैं यह कहना चाहती हूं कि यह ऑपरेशन सिंदूर राष्ट्र रक्षा संकल्प है जो अभी भी जारी है यह अभी तय करेगा की भारत के बच्चों को कैसी शिक्षा मिलेगी, युवाओं को कैसी प्रेरणा मिलेगी और आतंकवादियों को क्या अंजाम मिलेगा। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान जी ने घोषणा की है कि ऑपरेशन सिंदूर को अब स्कूलों के अध्ययन पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाए। मैं अपनी सरकार से मांग करती हूं कि इसके दिल्ली के छात्र–छात्राओं के लिए भी जल्द से जल्द पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए। जब 140 करोड़ लोगों का विश्वास सेना और पराक्रम के साथ खड़ा है तो भारत को ना कोई हरा सकता है, ना डरा सकता है, यह समय है एकजुट होने का, ना की शंका और अफवाह फैलाने का, इसलिए मुझे बहुत दुःख हुआ कि जब इस विषय पर अभी वर्मा जी ने इसको पटल पर रखा और ऐसी टिप्पणियां और ऐसी कुछ बातें विपक्ष की तरफ से आईं जो कि बहुत दुखदाई थीं। मुझे लगता है कि उनको अपनी मानसिकता, अपनी सोच को बदलना चाहिए

और ये सदन यही मांग करता है कि इस प्रकार की टिप्पणी को बिल्कुल भी किसी आधिकारिक रूप में उसका हिस्सा ना बनाया जाए। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

मननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री अरविंदर सिंह लवली जी।

श्री अरविंदर सिंह लवली : अध्यक्ष जी, आज हम ऐसे विषय पर अभय जी जो है प्रस्ताव लेकर आए हैं जिस विषय के ऊपर प्रत्येक भारतवासी को ना केवल देश में रहने वाले, बल्कि दुनिया के किसी कोने में रहने वाले भारतीय को जो है नाज होना चाहिए, और निश्चित तौर पर हमें अपनी सेना के, सेना की शौर्य के ऊपर तो गर्व है ही है, लेकिन भारत एक ऐसा देश बना है जो वह किसी भी तरीके के टेरर के सामने झुकता नहीं है, यह भी पूरी दुनिया के सामने साबित हुआ है। पर मुझे तकलीफ होती है कि ऐसे शौर्य के पल में भी अगर हम लोग जो है क्वेश्चन करते हैं, जब युद्ध होता है अध्यक्ष जी तो सैनिक से यह नहीं पूछा जाता कि तूने गन उल्टी पकड़ी थी या सीधी पकड़ी थी? वह लड़ने गया वह महत्वपूर्ण है। उसने ताकत दिखाई, हिम्मत करी, उसने शक्ति से सामना किया वह महत्वपूर्ण है और इन सारे के बीच में हम सारे के बीच में आतिशी जी आप यह भूल जाते हैं इस सारे के बीच में आप यह भूल जाते हैं कि हिंदुस्तान जो है पूरी दुनिया का पीस सेमेस्टर भी बना है और हमारे देश के प्रधानमंत्री ने एक नहीं अनेकों international forum पर यह कहा है कि this era is not an era of war, this era is era of peace उस पीस का कतई यह मतलब नहीं है कि हिंदुस्तान टेरर के सामने झुके यह भी जो है हिंदुस्तान ने जो है साबित किया है और आपसे मैं यह कहना चाहता हूं कि यह ऐसा पल नहीं है और आप और हम एक्सपर्ट नहीं है कि घर में कॉफी पीते हुए तय करें कि कब युद्ध रुकेगा कब युद्ध होगा, यह सेना तय करती है, यह सेना के विशेषज्ञ तय करते हैं कि कब क्या होगा? इम्पोर्टेंट बात यह है कि अगर किसी ने हमारे देश के अंदर इंटरफेयर करके टेरर एक्टीबिटीज करने की कोशिश की है, तो उसके जो है कान खड़े हो गए हैं कि

हिंदुस्तान बर्दाशत करने वाला नहीं है। अब यह वह हिंदुस्तान नहीं रहा है और जो मजबूती के साथ जो है वह टेरर के खिलाफ और हिंदुस्तान की शांति को दुनिया की शांति को जो तोड़ने की कोशिश करेगा उसके खिलाफ जो है हिंदुस्तान मजबूती के साथ खड़ा होगा। यह संदेश ऑपरेशन सिंदूर के साथ गया है और आप लोगों को भी एक सलाह देना चाहता हूं मुफ्त में कि आप लोग इस मामले के अंदर, देश के मामले के अंदर हमेशा, तरविंदर जी ठीक कह रहे थे कि सब लोगों को एकजुटता के साथ रहना चाहिए। देश से ऊपर कुछ नहीं हो सकता है और आप लोग जिसके पीछे लग के जो गलत लाइन ले रहे हो ना उसकी तो अपनी पार्टी के लोग नहीं लेते, अगर लेते लाइन तो मैं और तरविंदर जी और नीरज बसोया जी हम कोई यहां नहीं बैठे होते। तो इसलिए देश के मामले में जो है गलत लाइन मत लो, देश के साथ खड़े रहो, देश रहेगा, तो हम रहेंगे, देश रहेगा, तो पोलिटिकल पार्टी रहेगी, देश रहेगा, तो लोकतंत्र रहेगा। तो इसलिए देश के साथ खिलवाड़ मत करो और ऑपरेशन सिंदूर जैसे मामले में, मैं समझता हूं कि पूरे सदन को, पूरे देश को मजबूती के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के साथ खड़ा होना चाहिए और उनकी तारीफ करनी चाहिए और इस बधाई प्रस्ताव को पास करना चाहिए। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री गजेंद्र दराल जी।

श्री गजेन्द्र दराल : धन्यवाद अध्यक्ष जी, आज जिस तरीके से ऑपरेशन सिंदूर के बारे में जो चर्चा का विषय अभय वर्मा जी ने रखा और जो मेरे सामने बैठे हुए हैं वह भी हमारे ही साथी हैं, लेकिन कहीं ना कहीं लगता है कि हमारी आत्मा मर चुकी है। उन परिवारों का दुर्भाग्य कि वो लोग वहां पर घूमने गए थे, हम अपना सौभाग्य मानते होंगे कि हमारे परिवार के सदस्य वहां नहीं थे, लेकिन जिस परिवार का चिराग बुझा है वह परिवार पता नहीं कितने पीढ़ियों पीछे चला गया, हमें सोचना चाहिए। दिल्ली के विकास का मुद्दा हो यहां पर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन जब देश की सुरक्षा की बात हो तो हम सब का कर्तव्य बनता है कि हम एकजुट

होकर और ऐसे प्रधानमंत्री के साथ जो नए भारत का प्रमाण पूरे विश्व के सामने रखता हो उनके साथ लय मे लय जोड़ें, यह दुर्भाग्य हमारे देश का। अभी कुछ देर पहले हमारे एक विधायक जी जो कह रहे थे कुछ गद्दार यहां बैठे हैं, गद्दारों का सभी को पता है कि गद्दार कौन है, गद्दार ऐसे भी है जिन्होंने कल कहा की पाकिस्तान के प्रति कोई सबूत ही नहीं मिला, इससे बड़ा सबूत क्या हो सकता है, कि वहां पर धर्म को पूछ के नरसंहार किया जाता है और उसके बाद जब हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारत को पूरे विश्व के पटल पर रखते हैं मेरी दो–दो बहनें उस युद्ध को संचालित करके पूरे विश्व को बताती है कि मोदी जी मातृ शक्ति को भी आत्मनिर्भर बना रहे हैं तो कोई नहीं सोचता, ये दुर्भाग्य है मेरे देश का, ये दुर्भाग्य है मेरे देश का। हम सबको सोचना चाहिए कि देश सबसे पहले है, देश की सुरक्षा सबसे पहले है, पहले दिल्ली में हर बस के पीछे लिखा रहता था लावारिस वस्तु बम हो सकती है हम अपने बच्चों को दिवाली पर किसी भी त्यौहार पर, बाज़ार में जाने से रोकते थे, आज निसंकोच होकर कहीं पर भी भेज देते हैं, क्योंकि पता है कि मोदी जी है तो मुमकिन है, मोदी जी है तो मुमकिन है यह है मेरे देश की सुरक्षा और एक ऐसा नेतृत्व जो पूरे भारत को विश्व पटल पर प्रथम श्रेणी पर ले जाने के लिए अग्रसर है और आप सब भी साक्षी बनेंगे जब ये पूरा भारतवर्ष पूरे विश्व में प्रथम आकर दिखाएगा और हम सब का सौभाग्य होगा कि एक ऐसे संगठन के, एक ऐसे युग पुरुष ने, इस भारत के लिए कुछ करके दिखाया है। तो ऑपरेशन सिंदूर के लिए हम सब का एक ही स्वर होना चाहिए कि भारत की सुरक्षा की तरफ अगर कोई आंख उठाकर देखेगा तो हम अपने प्रधानमंत्री के साथ राह से राह मिलाकर और उनके साथ सार्थक बनकर सच्चे सिपाही की तरह खड़े हैं। मैं उन वीर सेनानियों को भी उनके बलिदान को भी नमन करता हूं जिन्होंने हमारे हक की लड़ाई उस पाकिस्तान के अंदर घुसकर लड़ी, उनमें हमें भी नुकसान हुआ और युद्ध से किसी को फ़ायदा नहीं होता युद्ध से दोनों पक्षों को नुकसान होता है और हमारे मोदी जी की आत्मा नहीं मरी है उन्होंने सिर्फ आतंकवादियों को ठोका, वहां के जो

लोग थे जो वहां के मासूम लोग थे उनको नुकसान ना पहुंचे इसलिए उन्होंने सोच समझकर इस युद्ध को रोका होगा, वो किसी के दबाव में काम नहीं करते, वह निसंकोच होकर, निस्वार्थ भाव से इस देश के लिए, इस देश के एक सौ चालीस करोड़ जनता के लिए समर्पित होते हैं और होते रहेंगे, जय हिन्द, जय भारत वंदे मातरम।

माननीय अध्यक्ष : मनोज शौकीन जी, मेरा आप अनुरोध है आप अपनी अटेंडेन्स आप लॉगिन करिए, क्योंकि आप उपस्थित हैं और इस पर एबसेंट आ रहा है। बाकी सभी सदस्य जो उपस्थित है और जो नहीं है जैसे माननीय ओमप्रकाश शर्मा जी जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, श्री गोपाल राय जी भी आज उपस्थित नहीं है, आप लॉगिन करिए। श्री विशेष रवि जी देश से बाहर हैं, अमानतुल्लाह जी यहां उपस्थित नहीं है, उमंग बजाज जी नहीं है, मनजिंदर सिंह सिरसा जी नहीं है और मनोज शौकीन जी का रेड आ रहा है, बाकी सब ग्रीन है। नहीं, अभी होगा तो यह हो जाएगा। चलिए अब आगे माननीय सदस्य श्री कुलदीप कुमार।

श्री कुलदीप कुमार : धन्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी सबसे पहले तो इस सदन के अंदर जो बहुत महत्वपूर्ण चर्चा हो रही है हमारी देश की सेना के साहस और शौर्य को जिस प्रकार से उन्होंने पाकिस्तान को उसके घर में घुस के मारा, उनके शौर्य और साहस को मैं सलाम करता हूं और यह देश उन सेनाओं के ऊपर गर्व महसूस करता है। अध्यक्ष जी, जो पहलगाम का हमला हुआ, जिसने इस देश को झकझोर के रख दिया। जब पहलगाम का हमला हुआ, और हमारे छब्बीस भाइयों को, वो किसी के माँ के बेटे थे, किसी के पति थे, किसी के पिता थे, उन छब्बीस लोगों को, उन आतंकवादियों ने गोलियों से भून दिया। इस देश की आंखें नम थी और यह पूरा देश एक ही सुर में, एक ही साथ, चाहे वह पक्ष की पार्टी हो, चाहे विपक्ष की पार्टी हो, चाहे किसी के मोदी से मतभेद हो या बीजेपी से मतभेद हो, हर पार्टी ने एक सुर में और एक समर्थन में कहा कि पाकिस्तान को उसकी कायराना हरकत का मुंह तोड़ जवाब देना चाहिए। पूरा देश, अध्यक्ष जी,

एक साथ एक सूत्र में बनके खड़ा हुआ था, सरकार के साथ। हमने नहीं देखा है सरकार किसकी। बीजेपी की है, किसकी है, किसकी नहीं है। हमें यह पता था कि जब देश की बात आएगी, तो देश का एक–एक बच्चा एक साथ, एकजुट एक साथ खड़ा होगा, और सब खड़े हुए हैं अध्यक्ष जी, और युद्ध शुरू हुआ, और जब युद्ध शुरू हुआ, तो अध्यक्ष जी हम सब लोग टीवी चैनल पर टकटकी लगाए देख रहे थे, कि पाकिस्तान के ठिकानों को कैसे नेस्तानाबूद किया जा रहा है। टीवी चैनल पर बड़ी–बड़ी हेड लाइन चल रही थी, और हम सब लोग उसको देख रहे थे। लेकिन अध्यक्ष जी, जब उन आतंकवादियों ने हमारी बहनों के सुहाग को उजाड़ा, हमारी माँओं के बेटों को मारा, तो वो बहनें बहुत गिड़गिड़ाईं। लेकिन अध्यक्ष जी, उन आतंकवादियों ने बिलकुल भी दया उनके ऊपर नहीं की, लेकिन अध्यक्ष जी, आज यह एक बहुत बड़ा सवाल इस देश के आम नागरिक के मन में है कि जब हमारी सेनाएं तैयार थीं, यह देश तैयार था, यह देश एकजुट था और हम पाकिस्तान को उसके घर के अंदर घुस के ठोक रहे थे और हमारे पास यह मौका था कि हम पाकिस्तान से वो पीओके वापस ले सकते हैं, जिसको आशीष सूद जी, मंत्री जी कह रहे थे कि ये रहा जेब में पीओके ले लीजिए। मैं उनको बताना चाहता हूं, कि अगर उस समय पर सीजफायर नहीं किया गया होता, तो पीओके तो जेब की चीज़ है। भारतीय सेना जब चाहे, तब जाकर ले सकती है। जब चाहे, तब जाकर ले सकती है। पीओके क्या बड़ी चीज़ है? पीओके तो जब सेना चाहेगी देश की, आज हमारा देश, हमारे देश की सेना पर हमें गर्व है। वो जब चाहेगी तब जाके पीओके ले लेगी। लेकिन अध्यक्ष जी, ये सीजफायर क्यों?

...व्यवधान.......

श्री कुलदीप कुमार : बताऊंगा ना, अच्छे हैं प्रधानमंत्री, मैंने कब कहा बुरे हैं? आप क्या सुनना चाहते हो मुझसे, बताओ? आप मुझसे क्या सुनना चाहते हैं? मैंने कब कहा प्रधानमंत्री बुरे हैं? मैंने कहा, मैंने तो यह कहा कि प्रधानमंत्री से हम पूछना चाहते हैं प्रधानमंत्री जी सेना तैयार थी, देश तैयार था, और हम पीओके ले सकते थे,

तो आखिर किसके कहने पर सीजफायर किया गया, हम यह सवाल प्रधानमंत्री जी से पूछना चाहते हैं। हम यह पूछना चाहते हैं कि देश की आज़ादी के बाद यह क्लीयर है कि कश्मीर के मामले में, पाकिस्तान के मामले में, युद्ध के मामले में, हम किसी भी देश की मध्यस्ता को वो नहीं करेंगे। तो जब हम लोगों को यह क्लीयर था, तो आखिर ट्रंप ने बार–बार यह क्यों कहा कि मैंने युद्ध रुकवा दिया। हम इस बात पर कहना चाहते हैं, और सही कहा कि प्रधानमंत्री जी इस दुनिया के सबसे ताकतवर प्रधानमंत्री हैं। तो हम तो कहना चाहते हैं प्रधानमंत्री जी, आप दुनिया के सबसे ताकतवर प्रधानमंत्री हो तो आप ट्रंप को बोलते क्यों नहीं हो कि ट्रंप झूठ बोल रहा है, आप क्यों नहीं बोलते हो? अरे यह तो आपकी हिम्मत भी नहीं है बोलने की, छोड़ो–छोड़ो बहस में मत पड़ो, चलो आप ही बोल दो।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः कृप्या शांत हो जाईये, एक मिनट, हरीश जी, खुराना जी आप बैठ जाईये, **खुराना** जी बैठ जाईये।

श्री कुलदीप कुमारः अभी मुख्यमंत्री जी बैठी हैं मुख्यमंत्री जी बोल दें। अभी देखिए, अभी आप छोड़ दो यह बात, अभी तो मुख्यमंत्री जी बोलेंगी।

(समय की घंटी बजी)

माननीय अध्यक्षः चलिए, अब समय।

श्री कुलदीप कुमारः अध्यक्ष जी मेरी बात पूरी हो जाए। तो अध्यक्ष जी, हम तो यह पूछ रहे है कि प्रधानमंत्री जी ने आखिर क्यों नहीं बोला? प्रधानमंत्री जी कहें, आकर जवाब दें और दूसरी बात, राजनाथ सिंह जी ने कहा, राजनाथ सिंह जी ने कहा कि पाकिस्तान गिड़गिड़ाया तो हमने युद्ध विराम कर दिया, मैं पूछना चाहता हूं राजनाथ सिंह जी हमारी बहनें भी उन आतंकवादियों के आगे गिड़गिड़ायी थीं उन्होंने तो उन्हें माफ नहीं किया, आपने उनको क्यों

माफ कर दिया? ऐसे आतंकवादी देश पाकिस्तान को जब आपके पास मौका था उसको छीनने का, उसको लेने का, तो आपने युद्ध विराम क्यों कर दिया?

माननीय अध्यक्षः चलिये, धन्यवाद.

श्री कुलदीप कुमारः हम आपसे पूछना चाहते हैं. अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी, दूसरा, इन्होंने सेना की बात की. अरे, पूरे देश को पता है कि सेना का अपमान कौन करता है? विजय शाह, कौन है विजय शाह? बताइए, कौन विजय शाह है जिसने कहा था कि सोफिया कुरेशी आतंकवादियों की बहन हैं, कौन है, बताइए? एमपी के डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा बीजेपी के, जिन्होंने कहा कि मोदी जी के कदमों में सेना नतमस्तक हैं अरे, मुझे शर्म आती है ऐसे बीजेपी के नेताओं पर जो सेना के ऊपर उसके साहस पर सवाल खड़ा करने का काम करते हैं, मुझे शर्म आती है और मैं कहता हूं कि आप लोग कभी सेना के साथ नहीं खड़े हुए, आप कभी देश के साथ खड़े नहीं हुए, आप लोगों ने कभी देश संविधान को नहीं माना।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद। श्री अजय महावर। अजय महावर जी।

श्री अजय महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने अभय वर्मा जी के इस प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया। सबसे पहले मैं ऑपरेशन सिंदूर की जिसमें भारतीय सेना ने हमारे प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में थल सेना, नौसेना और वायुसेना तीनों सेनाओं ने समयबद्ध within timeline पूरी सटीकता, शौर्य, पराक्रम, साहस और मारक क्षमता के साथ लक्ष्य को हासिल किया और इसलिए प्रधानमंत्री जी को, सेना को दिल्ली विधानसभा और दिल्ली सरकार की ओर से इस सदन की तरफ से यह धन्यवाद प्रस्ताव है। मैं चाहता हूं कि पूरा सदन इसको धन्यवाद प्रस्ताव के माध्यम से प्रधानमंत्री जी तक और सेना तक पहुंचाए। सही मायने में ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने दुनिया को यह बताया कि बाप तो बाप ही होता है, बाप तो बाप ही होता है। चाहे अटैक हो या डिफेंस हो दोनों में ही प्रभावी रहे, सिर्फ 22 मिनट के समय में नौ आतंकवादी अड्डे ध्वस्त कर दिए जो उनके मुख्यालय थे, बड़े बड़े जैसे बहावलपुर में हैड क्वार्टर था, लश्कर ए तैयबा का मुरीदके में,

दोनों को साथ—साथ उनके नौ आतंकवादी अड्डे तबाह कर दिए और 11 एयरबेस नेस्तनाबूत कर दिए चाहे वो रहीम यार खान एयर बेस हो, सरगोधा हो, भुलारी हो और इसके साथ साथ किराना हिल्स और नूर खान एयर बेस पर जो चोट मारी है भारतीय सेना ने वह चोट कहां—कहां लगी उसका दर्द कहां—कहां हुआ इसके दुनिया के सभी ताकतवर देशों ने लोहा माना है और उसका असर जैसा हमारे प्रधानमंत्री जी ने संसद में कहा सीधे तौर पर उनकी नाभि पर वो तीर लगा है और उसका असर उनके सरपरस्त देशों के भी दिल और दिमाग पर हुआ है। माननीय अध्यक्ष जी, अभी हमारे एक साथी कह रहे थे कि प्रधानमंत्री जी आकर जवाब क्यों नहीं देते ,कुलदीप जी कह रहे थे, अरे भाई रक्षा मंत्री जी, गृहमंत्री जी, प्रधानमंत्री जी ने घंटों आकर के जवाब दिया पर बहरों को सुनाई नहीं पड़ता है, बहरों को सुनाई नहीं पड़ता है। बार—बार कह रहे हैं, अरे प्रधानमंत्री जी ने स्पष्ट रूप से, प्रधानमंत्री जी ने स्पष्ट रूप से, मैं दे रहा हूं आप सुनो, सुनो कान खोल कर सुनो, प्रधानमंत्री जी ने सदन में स्पष्ट रूप से कहा है दुनिया के किसी भी राष्ट्राध्यक्ष ने ऑपरेशन सिंदूर रोकने के लिए बातचीत नहीं की है, अब आपको सुनाई नहीं पड़ रहा, आपको समझ में नहीं आ रहा, भारत के new norms समझ में नहीं आ रहा कि भारत अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर, अपने समय पर ही जवाब देगा। आतंकवादी हो या उसके सरपरस्त देश किसी को छोड़ने वाला नहीं है, वो संजीव जी है नहीं उन्होंने कहा, गद्दारों की बात कर रहे थे, अरे भैया, आपके ही एक मित्र ने बताया कि देश के गद्दार कौन है और किन के तार खालिस्तानियों से जुड़े हुए हैं वो भी कुमार विश्वास जी ने, आपके साथी ने बताया। आपकी तो आदत बन गई है, आप हर चीज़ पर विरोध करते हो। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी आई तब भी आपने अपने देश के नेतृत्व का मजाक बनाया, आप हर कठिन परिस्थितियों में दुश्मनों के साथ खड़े होकर के पाकिस्तान के स्पोक्सपर्सन का काम करते हो।

(समय की घंटी बजी)

श्री अजय महावरः और अभी बार—बार, पीओके—पीओके कर रहे थे 1971 का जब युद्ध जीता जब 93 हज़ार सैनिक बंदी बनाए गए थे और जब 15,000 वर्ग किलोमीटर जब भारत के पास ज़मीन आ गई थी तब आपकी जो ए टीम बार बार आशीष सूद जी कह रहे थे उन्होंने

पीओके तो छोड़ दो सब कुछ लुटा दिया और सिंधु जल का भी रिवाइव नहीं किया जबकि भारत के प्रधानमंत्री जी ने इसमें ऑपरेशन सिंदूर का जो पार्ट 2 है वो सिंधु जल योजना जो अभिशप्त बना भारत के लिए, वो समझौता अनैतिक था उसको भी रिव्यू करने का काम भारत के प्रधानमंत्री जी ने किया है। सरेआम बाजारों में बम फूटा करते थे, 2003 से और 2014 के बीच की सरकार जो आपकी ए टीम थी जिसकी मदद से आप चलते रहे पहली सरकार बनाई उसके गृहमंत्री जी लाल चौक जाने के नाम पर उन्होंने ऐसे बयान दिए जिससे देश को शर्म आ जाए।

(समय की घंटी बजी)

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद जी।

श्री अजय महावरः तो आपने कहा, घंटी दो बार बज गई, बहुत कुछ कहना चाहता था, सिर्फ एक बात कहकर अपनी बात को विराम करता हूं कि देखिए वो समय था जब बुलेट प्रूफ जैकेट और ताबूत के लिए आप इंपोर्ट किया करते थे भारत ने ढाई लाख करोड़ से 6 लाख 81 हजार तक का बजट बढ़ाकर के और आज दो–दो लाख पर ईयर बुलेट प्रूफ जैकेट भारत बना रहा है और 24 हजार का एक्सपोर्ट कर रहा है इन सब से आपकी आंखें चुंधिया गयी हैं और देश के सम्मान को गरिमा को चोट पहुंचाने का काम विपक्ष कर रहा है मुझे लगता है ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से सदन ने जो धन्यवाद भारतीय सेना को और प्रधानमंत्री जी को दिया है, इसके पक्ष और समर्थन में हम सबको इस सदन से संदेश भेजना चाहिए, जय हिन्द, भारत माता की जय।

माननीय अध्यक्षः श्री अनिल शर्मा जी।

श्री अनिल शर्माः धन्यवाद अध्यक्ष जी मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूँ कि आज इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। बहुत ही दुखद घटना जो पहलगाम में घटी जहां पर लश्कर तैयबा के आतंकवादियों ने धर्म पूछकर 26 हिंदू पर्यटकों की हत्या करी और पूरा देश उसमें एकजुटता के साथ खड़ा था और एकजुटता के साथ वो देश यह चाहता था कि पाकिस्तान को इसका जवाब दिया जाए और मैं यहां इस सदन के माध्यम से माननीय

प्रधानमंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं, सेनाओं को बधाई देना चाहता हूं कि जो देश के अंदर जब मन में यह थी कि उनको जवाब देना चाहिए वह जवाब 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से छब्बीस मिनट के अंदर उनके आतंकवादी ठिकानों को हमारे क्रूज मिसाइलों ने और ड्रोन स्ट्राइक से उनके अंदर पाकिस्तान के अंदर घुस के पाकिस्तान के अंदर जो हमला किया वो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात थी। उसके अंदर जो सबसे खास बात थी आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया गया, कोई वहां के सैन्य ठिकानों की बजाय या खासकर नागरिकों पर हमला नहीं किया परंतु उसके बाद जब पाकिस्तान ने हमारे गुरुद्वारों पर और मंदिरों पर अटैक किया तो उसके बाद अगले दिन हमारी मिसाइलों के माध्यम से हमारी सेनाओं ने पाकिस्तान के ग्यारह एयर बेस पर हमला करके उनका बीस से तीस परसेंट तक एयर बेस को खत्म करने का काम अगर किसी ने किया तो हमारी सेनाओं ने किया यह बहुत बड़ा काम था जो सेनाओं ने उनके एयर बेस को खत्म किया। साथ ही मैं बोलना चाहता हूं कि जो आतंकवादी जिन्होंने यह काम किया था, ऑपरेशन महादेव के माध्यम से उन आतंकवादियों को हमारी इंडियन आर्मी, सीआरपीएफ और जम्मू कश्मीर पुलिस ने उन आतंकवादियों को ढूंढ कर दाची गांव के जंगलों में मुठभेड़ में सुलेमान जो पाकिस्तान का नागरिक था जिब्रान और हम्ज़ा जो अफगानी था उसको पाकिस्तानी आईडी कार्ड के साथ मिले और उनको उनको मारा जिससे कि पूरा का पूरा बदला उन आतंकवादियों से लिया गया। मैं एक बात और कहना चाहता हूं हमारे जो सामने बैठे हमारे विपक्ष के साथी हैं जो सेना की तारीफ कर रहे हैं बीच—बीच में, परंतु क्वेश्चन मार्क भी उठाते हैं सेना के ऊपर, मैं कहना चाहता हूं यह सेना हमेशा से अच्छा काम करती है, सेना इस देश के लिए गर्व की बात है, जिन्होंने हमेशा देश की रक्षा की है, परंतु जब मुंबई पर अटैक हुआ तो जो पार्टी उस टाइम पर सत्ता में थी जिसके समर्थन से आपने भी सरकार चलाई है, तो उस टाइम में हमने सिर्फ बातें की थी हमला नहीं किया था। इससे पहले भी दो बार सर्जिकल स्ट्राइक माननीय मोदी जी प्रधानमंत्री जी के रहते हुए हमारी सेनाओं ने करी और अभी जब पहलगाम का मुद्दा आया तो उनके घर में घुस के चाहे आतंकवादी ठिकाने हों, चाहे उनके एयरबेस हों, उनके घर में घुस के जवाब दिया. अगर इसका कारण जो है सेना तो मज़बूत है पर सेना के साथ खड़ा हुआ व्यक्ति जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी हैं वो बहुत मज़बूत

सशक्त व्यक्तिव हैं जिन्होंने खाली इस देश के ही नहीं इस संसार के सबसे मज़बूत प्रधानमंत्री अगर मैं कहूं, शक्तिशाली नेताओं में है तो कोई गलत बात नहीं है। पाकिस्तान को जो जवाब अभी दिया है वो जवाब ये बोल दिया गया है कि ऑपरेशन सिंदूर बंद नहीं हुआ है, ऑपरेशन सिंदूर अगर उन्होंने कोई हरकत की तो उस हरकत का जवाब दोबारा से दिया जाएगा और माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है धरती के किसी कोने में भी कोई आतंकवादी छुपा होगा तो उसका जवाब उसकी मौत से ही दिया जाएगा.

(समय की घंटी बजी)

श्री अनिल शर्मा: मैं अध्यक्ष जी आपका धन्यवाद करता हूं, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया.

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य पूनम शर्मा जी.

सुश्री पूनम शर्मा: धन्यवाद अध्यक्ष जी, हाल ही में हुए संपन्न सिंदूर ऑपरेशन सिंदूर में भारत के साहस और संपूर्ण मानवीय मूल्यों का एक अद्भुत उदाहरण है। इस ऑपरेशन के अंतर्गत भारतीय नागरिकों की सुरक्षा एवं भारत की अखंडता को बनाए रखा जिसमें देशभर में राहत और गर्व की भावना उत्पन्न हुई है। इस सफल मिशन के लिए हम भारत के माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को ह्रदय से धन्यवाद करते हैं। उनके कुशल नेतृत्व, सक्षम विदेश नीति और त्वरित निवर्हन क्षमता के कारण यह अभियान संभव हो पाया है। शायद किसी ने नहीं देखा होगा वो बिलखती हुई बहनों को और बिलखती हुई माताओं को वो कैसे रो रही थी जिनके सुहाग उजड़े हैं और जिनका सिंदूर उनके माथे से छीना गया है। वो देखा है तो हमारे माननीय देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने देखा, उनकी आंखों में कैसे आंसू थे। तो उन्होंने यह संकल्प लिया मैं कहूं कि आप सब युद्ध कह रहे हो, वो युद्ध नहीं था वो उन बहनों के आत्म सम्मान के लिए था, उनका एक संकल्प था, न्याय था उनको सम्मान दिलाने के लिए, आत्मसम्मान के लिए। यह उन वीर जवानों के लिए था जो तिरंगे में लिपट कर आए और उनके परिवारों के लिए जिनका सिंदूर छिन गया। यह मिशन हमें याद दिलाता है कि भारत शांति चाहता है लेकिन अगर उनकी सीमाओं और उनकी सेनाओं या उनकी अस्मिता को ललकारा जाए तो वो चुप नहीं बैठेगा। ऑपरेशन सिंदूर ने यह सिद्ध

कर दिया कि भारत ना केवल सहता है बल्कि जब वार करता है तो दुश्मनों की नींव तक हिला देता है और मैं एक बात कहना चाहती हूं कि सब लोग कह रहे हैं कि प्रधानमंत्री जी को जवाब देना चाहिए, जवाब देना चाहिए अरे आप जिस परिवार के अंदर रहते हो भारतवर्ष पूरा भारतवर्ष एक है और हम इसके बच्चे हैं। जब हमारे देश के ऊपर कोई ऐसी विपदा आती है तो मैंने देखा जब पूरी दिल्ली की बात करूं तो पूरी दिल्ली के अंदर जब सिंदूर यात्रा निकाली जा रही थी एक छोटे बच्चे से लेकर 10 साल के 5 साल के बच्चे उस सिंदूर यात्रा में चल रहे थे और और 95 वर्ष के बुजुर्ग भी उसमें थे। कह रहे थे कि हम नरेंद्र मोदी जी के साथ हैं जो हमारे देश के साथ खड़े हैं हम उनको सर्वोच्च उनकी राह पे राह चलने का काम करेंगे और सबसे बड़ी बात मैं कहना चाहूं कि जो हमारे मेरे लिए तो पूरा परिवार ही है, मैं राजनीतिक बात थोड़ी कम करती हूं जिनके लिए वो उन का कोई परिवार नहीं है मोदी जी का हम ही उनका परिवार हैं और जब जो एक पिता अपने परिवार का दर्द समझता है तो ऐसे ऐसे मैं कहूं कि ये जो वार अभी हुए हैं और जो सिंदूर ऑपरेशन हुए हैं अगर इनकी फ्यूचर में भी कभी ज़रूरत पड़ेगी तो हम किसी से डरने वाले नहीं हैं। अपने परिवार के लिए जब एक सर्वोच्च मुखिया खड़ा होता है तो हमें डरने की ज़रूरत नहीं होती और आप सब ने अध्यक्ष जी मुझे इस गौरव क्षण के लिए बोलने का मौका दिया उसके लिए भी आपका हृदय से धन्यवाद करती हूं।

**माननीय अध्यक्षः** साढे चार बजे तक सदन की बैठक स्थगित की जाती है.

**( सदन की कार्यवाही सांय 4.30 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)**

**सदन पुनः सायं 4 बजकर 32 मिनट पर समवेत हुआ।**

**माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता जी) पीठासीन हुए।**

माननीय अध्यक्षः इस बार भारतीय टीम के इस साहसपूर्ण और बेहतरीन खेल प्रदर्शन की पूरे सदन की तरफ से उनको शुभकामनाएं देता हूं, क्योंकि जिस तरह से यह मैच इसमें तो, जिस तरह से इस मैच में कल एक समय ऐसा था जब शायद लोगों ने टीवी बंद कर दिए थे और उस तकलीफ को महसूस करते हुए कि अगर ध्यान लगाएंगे तो कष्ट होगा, लेकिन

उसके बाद कुछ ही समय के बाद, बीस मिनट के बाद ही स्थिति पलट गई थी कल, लेकिन आज जो सूचना यहां पर अभय वर्मा जी ने दी है कि बहुत ही संघर्षशील इस मुकाबले में भारत ने विजय हासिल कर कर यह सीरीज पूरी इक्वल कर दी है और विदेशी सॉयल पर भारतीय टीम का यह प्रदर्शन काबिले तारीफ है. हम सब एक बार मेजें थपथपा कर टीम को बधाई दें। माननीय सदस्यगण अभी बधाई प्रस्ताव जो चल रहा है ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव पर, उस पर चर्चा बहुत लंबी हो गई है इसलिए मैं चाहूंगा कि दो मिनट से अधिक कोई सदस्य ना बोले और यहां पर कुछ भी अप्रिय अगर किसी सदस्य द्वारा किया जाएगा तो मैं समझता हूं कि वह सदन की एक तरह से अवहेलना मानी जाएगी। इसलिए आप मर्यादित भाषा में सदन के नियमों का ध्यान रखते हुए, पालन करते हुए, यह बात मैं सख्ती से कह रहा हूं आप वक्तव्य में अपनी बात तर्क पूर्ण कहिए, आमंत्रित हैं, लेकिन यहां पर अगर कुछ सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए, अपना ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी भी प्रकार की कार्यवाही होगी तो वह बर्दाश्त नहीं होगी। यह बधाई प्रस्ताव है, यह हमको ध्यान रखना चाहिए, देश के लिए, सेनाओं के लिए और देश के मनोबल के लिए, अब मैं चर्चा को आगे बढ़ाता हूं। माननीय सदस्य श्री सतीश उपाध्याय.

श्री सतीश उपाध्यायः धन्यवाद अध्यक्ष जी, हम जिस सिंदूर के धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं, वास्तव में तो कोई यह सामान्य सिंदूर नहीं है. यह सिंदूर देश की अस्मिता का सिंदूर था, यह सिंदूर हमारी देश की माताओं बहनों के माथे से उजड़ा हुआ सिंदूर था, यह सिंदूर दुर्गा जी पर भी चढ़ता है और यह सिंदूर हनुमान जी पर भी चढ़ता है और यह सिंदूर अगर हम सूर्य को देखें शाम के समय उसकी लालिमा में भी वही सिंदूर हमको दिखाई देता है लेकिन दुर्भाग्य है, देश की संसद हो या दिल्ली की विधानसभा हो, इस सिंदूर की चर्चा पर भी नकारात्मक और विरोध के स्वर सुनाई देते हैं, इससे और दुर्भाग्यपूर्ण बात हो नहीं सकती। अध्यक्ष जी मैं कहना चाहता हूं, दुनिया के सबसे नंबर वन हमारे नेता देश के यशस्वी प्रधानमंत्री, ओजस्वी, निर्भीक और निर्णय लेने वाले आदरणीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने अपने शौर्य और पराक्रम से जिस प्रकार का इस सिंदूर का बदला लिया उसके लिए जितना भारतीय सेना को नमन किया जाए उतना कम है और जितनी उनके

लिए ताली बजाई जायें उतना कम है। पहलगाम में हमारे निर्दोष नागरिकों को, निर्दोष महिलाओं को जिस प्रकार से एक धर्म पूछ करके उनकी निर्मम हत्या की गई और उस हत्या के बदले में मोदी जी ने जिस प्रकार से एक निर्णायक ऑपरेशन सिंदूर चलाया और इस सिंदूर के साथ–साथ पाकिस्तान के अंदर सौ किलोमीटर जाकर जैश ए मोहम्मद और जिस प्रकार के आतंकवादी अड्डे चलाने वाले थे, उनको जिस तरीके से पूरी तरह से तबाह किया, यह भारत की सेना के शौर्य और और मोदी जी के नेतृत्व में ही संभव था। चूंकि आपने कहा है कि केवल दो मिनट बोलना है, इसलिए दो मिनट में तो आप प्रस्तावना रखेंगे उतनी ही बात रख पाएंगे, लेकिन समय नहीं है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि हमारा दुश्मन हमारे प्रहार से, हमारे शौर्य से, हमारी वीरता से, हमारी ताकत से, हमारे ब्रह्मोस से तुरंत घुटनों पर आ गया और गिड़गिड़ाने लगा और उसकी कमर भारतीय सेना ने तोड़कर रख दी। भारत हमेशा शांति का पक्षधर रहा है, भारत बुद्ध की भूमि है, युद्ध की भूमि नहीं है इसलिए भारत ने सीजफायर भी अपनी शर्तों पर स्वीकारा। जब वह गिड़गिड़ाया, तब हमने अपनी शर्तों पर उसको स्वीकारा था। हमारा जवाबी हमला है, लेकिन हमारे हाथों में हथियार अभी भी तैयार हैं, हमारे गृहमंत्री जी ने संसद में बयान दिया, हमारे रक्षा मंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी थमा नहीं है, ऑपरेशन सिंदूर केवल रोका गया है और ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है। अगर हमारे पड़ोसी पाकिस्तान ने किसी प्रकार की आतंकवाद करने की हिमाकत की, तो उसको बराबर ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से जवाब दिया जाएगा। मोदी जी ने कहा कि टेरर और टॉक साथ–साथ नहीं चल सकती, खून और पानी एक साथ नहीं बह सकता और इसलिए हम खून और पानी को एक साथ नहीं बहने देंगे और पाकिस्तान पर अगर कोई बात होगी तो केवल और केवल आतंकवाद पर ही बात होगी। हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से आतंकी आकाओं को और पूरी तरह से जवाब दिया और बाद में ऑपरेशन महादेव। मैंने कहा था ना कि जो हमारी शक्ति है, जो हमारा पराक्रम है, ऑपरेशन महादेव के माध्यम से जिस प्रकार से सोमवार के दिन पूरी त्रिशूल की शक्ति से।

(समय की घंटी बजी)

श्री सतीश उपाध्यायः सीआरपीएफ और जे एंड के पुलिस ने मिलकर के जिस तरह से पहलगाम के आतंक तीनों आतंकवादियों को मारा और बदला लिया गया, अपने शौर्य और पराक्रम की सेना की जितनी तारीफ की जाए, उतनी कम है। अध्यक्ष जी क्योंकि आपने समय की घंटी बजा दी है और इसलिए मैं बहुत अनुशासन में रह करके बोलने वालों में से हूं आपने मुझे बोलने का समय दिया लेकिन मैं इतना ज़रूर कहना चाहता हूं कि आतंकवाद को जिस प्रकार से सेना ने कुचलने का काम किया है, जिस प्रकार का नेतृत्व साहसिक मोदी जी ने दिया है, जिस प्रकार से हमारे गृहमंत्री ने इस पर साहसिक निर्णय लिए हैं, जिस प्रकार से हमारे रक्षा मंत्री ने पूरी तरह से शौर्य के साथ इस पराक्रम को पूरा किया है, इसलिए जितनी मोदी जी की तारीफ की जाए उतनी कम है। एक बार जोरदार तालियों से मोदी जी का स्वागत करना चाहिए। बहुत–बहुत धन्यवाद।

## एफ–2.10–2.36–केबी

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य, श्री जरनैल सिंह जी।

श्री जरनैल सिंहः शुक्रिया स्पीकर साहब। स्पीकर साहब, 22 अप्रैल, 2025 को जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में जो कायराना हमला हुआ उसकी जितने कड़े शब्दों में निंदा की जाए वो कम है.... स्पीकर साहब 22 अप्रैल को ये कायराना हमला हुआ जिसका ऑपरेशन सिंदूर के जरिए 7 मई को भारतीय सेना ने बड़ी दिलेरी के साथ जवाब देना शुरू किया। हमें अपनी सेना पर हमेशा गर्व था, गर्व है और गर्व रहेगा। इसके पहले भी बहुत बारी भारतीय सेना ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया है, यहां तक कि इस दुनिया का सबसे बड़ा जो आत्मसमर्पण हुआ है वो भी हमारी भारतीय सेना ने 1971 के अंदर पाकिस्तान के 93 हजार सैनिकों को घुटनों के बल लाकर कराया, वो भी भारतीय सेना ने किया है। स्पीकर साहब, 10 मई को अचानक से दोपहर के समय हमारी सेना के द्वारा नहीं, हमारे देश के रक्षा मंत्री द्वारा नहीं, हमारे देश के प्रधानमंत्री द्वारा नहीं, अमेरिका के प्रेसिडेंट द्वारा एक ट्वीट किया जाता है कि मैंने भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर करा दिया। तो जिस तरीके से सबको हैरानी हुई, हमको भी हैरानी हुई, सभी को हैरानी हुई क्योंकि

किसी को अंदाजा नहीं था। मीडिया चैनल्स बड़ी–बड़ी खबरें चला रहे थे कि आज रात को लाहौर पर कब्जा हो गया, कल इस्लामाबाद पर कब्जा हो जाएगा, पीओके हमारा हो जाएगा, तो लोगों की उम्मीदें भी उस तरीके से बढ़ रही थी कि शानदार तरीके से हमारी भारतीय सेना काम कर रही है। पर 3 जगह जो अलग–अलग डिफरेंस देखने को मिला, भारतीय सेना की स्टेटमेंट में जोकि जो कार्रवाई करते थे, हर दिन आकर हमारे सेना के स्पोक्सपर्सन उसके बारे में देश की जनता को रूबरू कराते थे, उसके बाद दूसरा सोर्स था मीडिया जोकि बहुत आगे तक चले गए थे, तीसरा सोर्स थे हमारे नेता जो अपने तरीके से चीजों को बताते थे, जी अब तो पीओके आ ही गया। पर स्पीकर साहब एक कंफ्यूजन जो है वो ये है कि आखिर युद्धविराम किसके कहने पर और किन शर्तों पर हुआ, इस बारे में देश जानना चाहता है और सभी जानना चाहते हैं क्योंकि प्रेसिडेंट साहब, ट्रंप साहब तो कह रहे जी मैंने तो दोनों को व्यापार का दिया जी, मैं तुम्हारे साथ बिजनेस बंद कर दूंगा इसीलिए तुम सीजफायर कर लो, तो दोनों ने मेरी बात मानी और इन्होंने सीजफायर कर लिया। अब यहां हमारे देश की जो राजनीतिक शक्ति है उसके ऊपर बार–बार सवाल खड़ा होता है जी हमारे प्रधानमंत्री साहब इसके ऊपर जवाब क्यूं नहीं दे रहें। क्यूं अगर जीते हम हैं, धूल हमने चटाई है, नेस्तनाबूद हमने कर दिया पाकिस्तान को....

(समय की घंटी)

श्री जरनैल सिंहः तो वहां पर क्यों जशन मनाये जा रहे हैं? वहां के आर्मी चीफ को फील्ड मार्शल क्यों बना दिया गया है? ये सारी चीजें अपने आप में सवाल खड़े कर रही है।

माननीय अध्यक्षः थैंक यू जी।

श्री जरनैल सिंहः स्पीकर साहब बात तो पूरी होने दो।

माननीय अध्यक्षः बस हो गई, देखो ढाई मिनट हो गए।

श्री जरनैल सिंहः ऐसे पक्षपात मत करो सर, 5–5 मिनट बोल रहे हैं सर।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं, पक्षपात नहीं है। नहीं–नहीं, मैं उनको भी....

....व्यवधान........

श्री जरनैल सिंहः स्पीकर साहब 5 मिनट तो पूरे दो।

माननीय अध्यक्षः सतीश उपाध्याय जी को भी मैंने रोका है।

श्री जरनैल सिंहः अच्छा ठीक है।

माननीय अध्यक्षः आप खत्म करिये इसको बस अब।

श्री जरनैल सिंहः स्पीकर साहब, ये सारी चीजें जितनी भी हैं सेना की कार्रवाई में कहीं कमी नहीं रही, यहां तक कि हमारे एयरफोर्स के एक सीनियर ऑफिसर ने बोला कि we lost some jets due to no strike orders on Pakistan from our Government तो ये तो सरकार की.., सेना तो तैयार थी, सरकार की इच्छा नहीं हो रही थी, सरकार को पता नहीं किस चीज का भय पड़ गया था, तो सेना के ऊपर न हममें से किसी ने सवाल उठाया है, न कोई सवाल उठा रहा है,....

माननीय अध्यक्षः चलिए, धन्यवाद। थैं यू सो मच।

श्री जरनैल सिंहः पर 11 साल तक प्रैस कांफ्रेंस न....

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः चलिए अगला वक्ता। माननीय सदस्य, श्री करनैल सिंह जी। माननीय सदस्य, श्री करनैल सिंह जी।

श्री करनैल सिंहः धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने मुझे ऑपरेशन सिंदूर पर बोलने का मौका दिया। आज मैं आपके सामने भारत के इतिहास में दर्ज एक ऐसे ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण अध्याय ऑपरेशन सिंदूर के बारे में बात करना चाहता हूं, यह सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, यह हमारे राष्ट्र के लिए स्वाभिमान, बलिदान और हमारा ताकत का प्रतीक था।

22 अप्रैल को, यह वो दिन था जब जम्मू कश्मीर के पहलगाम में एक कायराना आतंकी हमला हुआ, 26 निर्दोष नागरिकों की जान गई। यह हमला केवल मानवता पर नहीं था, यह सीधा हमला हमारे तिरंगे पर, हमारी अखंडता पर और हमारे धैर्य की परीक्षा पर था। लेकिन अब भारत वही पुराना भारत नहीं है, 7 मई को भारत सरकार ने इसका जवाब दिया, जवाब ही नहीं दिया बल्कि एक संदेश दिया अब भारत सहन नहीं करेगा। भारत का सीधा प्रहार, भारत सीधा प्रहार करता है और इसी संदेश के साथ शुरू हुआ ऑपरेशन सिंदूर। यह एक संयुक्त सैन्य अभियान था। थल सेना, वायु सेना और नौसेना, तीनों सेनाओं के शक्ति को एकजुट होकर वो किया जो दुनिया में सिर्फ फिल्मों में दिखाया जाता था, लेकिन उसको धरातल पर उतारने का जो काम हमारे देश के प्रधानमंत्री ने किया वो किसी के बस की बात नहीं है पूरे विश्व के अंदर। सौ से अधिक आतंकवादी ढेर हुए, जैश–ए–मोहम्मद, लश्कर–ए–तैयबा, हिजबुल मुजाहिदीन संगठनों जैसे कमांडर खत्म कर दिए गए। पाकिस्तान और पीओके स्थित नौ ठिकानों को बिल्कुल खत्म कर दिया गया। ब्राह्मोस मिसाइल, ड्रोन, स्वदेशी हथियारों से दुश्मनों को जवाब दिया गया। इतना ही नहीं हमारे एस– 400 एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान की जवाबी कोशिशों को पूरी तरह से विफल कर दिया गया और आज भी पाकिस्तान के एयरबेस ICU में हैं।

(समय की घंटी)

श्री करनैल सिंहः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस ऑपरेशन को.....

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद जी।

श्री करनैल सिंहः भगवान शिव का रौद्र रूप से जोड़ा है और यह भारत का सिंदूर है जो बलिदान और विजय का प्रतीक है। अब भारत शब्दों से नहीं शक्ति से शक्ति का जवाब देता है। इस ऑपरेशन से सोलह घंटों तक संसद के अंदर बहस हुई, सवाल भी उठे लेकिन जनता की एक ही जवाब थी हमारे सैनिकों को सलाम,....

(समय की घंटी)

श्री करनैल सिंहः मैं सिर्फ एक बात को कहकर के अपनी वाणी को खत्म करूंगा। यही नहीं मैं आप सभी से, विपक्ष से भी विनम्र निवेदन करता हूं कि इसके लिए हमारे सैनिकों, वीर सैनिकों को सम्मान करें, देश की सुरक्षा में सहयोग दें और गर्व से कहें भारत माता की जय। धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने मुझे मौका दिया।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। माननीय सदस्य, श्री रवि नेगी जी।

श्री रविन्दर सिंह नेगीः माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे मौका दिया बोलने का मैं आपका बहुत आभार प्रकट करता हूं। अभय वर्मा जी के प्रस्ताव में मैं बोलने आया हूं। आपॅरेशन सिंदूर जिसके बारे में सभी सदस्यों ने बोला और यह अपने आप में हमें गर्व महसूस कराता है और भारत की सैन्य शक्ति और प्रधानमंत्री जी का जो निर्णय है उसको देखकर लगता है कि आज विश्व के सबसे शक्तिशाली देश में आज भारत हो चुका है और कहीं ना कहीं जब ऑपरेशन सिंदूर कर कर पाकिस्तान में घुसकर जहां हमारी सेना ने जो पराक्रम दिखाया उसके लिए 140 करोड देशवासियों को आज भी गर्व है सेना पर। पर बड़ा दुर्भाग्य का विषय है जो हमारे विपक्ष के साथी, सेना के पराक्रम में सवाल उठाते है, देश के प्रधानमंत्री के बात पर सवाल उठाते है तो बड़ा अजीब सा लगता है कि इनको देश की सेना पर विश्वास नहीं है, इनको देश के प्रधानमंत्री पर विश्वास नहीं है। आप, आप बताइए, जब–जब इस देश को युद्ध, जरूरत पड़ी मोदी जी ने सर्जिकल स्ट्राइक और air strike का आदेश देकर बता दिया भारत अब चुप नहीं बैठेगा, भारत अब जवाब देगा। जब पूरी दुनिया खामोश थी तो मोदी जी ने अभिनंदन को पाकिस्तान से एक दिन में वापस लाकर दिखाया कि हम कितने मजबूत हैं, एक दिन में। मेरे को आज वो भी याद है 2013 में जिनके साथ इन्होंने सरकार बनाई, लोकसभा का चुनाव जिनके साथ लड़ा, वो लोग ताबूत के साथ भी, ताबूत घोटाला भी करते थे। पर आज सोचिए, आज भारत की सेना को मजबूत करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी ने रक्षा बजट इतना

बढ़ाया, आज विश्व की सबसे बड़ी सेना, दूसरे नंबर की सबसे बड़ी फौज हमारी है, मुझे गर्व होता है अपनी सेना पर और मैं इतना, मैं तो,

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः  अरे, आप उनको बोलिए दीजिए।

....व्यवधान........

श्री रविन्दर सिंह नेगीः भारत का आत्मविश्वास, एक तरफ सेना की बंदूक तो दूसरी तरफ मोदी जी के निर्णय, एक तरफ बॉर्डर की चौकसी तो दूसरी तरफ अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की दमदार आवाज़, यह बदलता हुआ भारत है। आप सोचिए, जब सेना का शौर्य और मोदी जी का संकल्प मिल जाए तो भारत ना सिर्फ सुरक्षित होता है बल्कि विजयी होता है। और मैं इतना ही कहूंगा, मैं अपनी बात शॉर्ट में बोलूंगा। मैं इतना कहूंगा विपक्ष के लोगों को कम से कम सेना का सम्मान करना चाहिए।

(समय की घंटी)

श्री रविन्दर सिंह नेगीः आज सेना की वाह वाही हो रही है, पूरा देश सेना के सामने नतमस्तक हैं, पर मेरे विपक्षी बार–बार सेना के ऊपर सवाल उठा रहे हैं, थोड़ा अपनी, अपने अंदर आत्मीयता लानी चाहिए। आप, आप विधान सभा में बैठे हैं, विधान सभा में जब शौर्य का परिचय हो रहा है देश की सेना का तो आपने उनका सम्मान बढ़ाना चाहिए, ये नहीं कि हर बात पर आप विपक्ष की भूमिका निभाओ, ऐसा नहीं होना चाहिए। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, भारत माता की जय।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य, श्री अनिल झा।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, एक मिनट अनिल जी रुकिए। श्री अनिल झा। माननीय सदस्य, श्री अनिल झा। चलिए शुरू करिये।

श्री अनिल झाः अध्यक्ष जी, मैं भारतीय सेना के अतीत के गौरव से अनु प्रमाणित हूं, उसे जीवन का सर्वोच्च बिंदु मानता हूं। हमारी आंखों में सपने हैं और सपनों को साकार करने वाले हम लोग जागरूक कर्मयोगी हैं अतीत से, चिरंतर से, कालजयी, सनातन, संस्कृति के पुजारी हैं जिसके माध्यम से आज सेना के शौर्य की चर्चा यहां पर हो रही है। सेना के साथ है, सेना के साथ तो मेरे पूर्वज उस समय भी थे जब सन 1965 की लड़ाई हुई, मेरे पूर्वज सन 1971 में भी थे जब पाकिस्तान के ईस्ट पाकिस्तान और वेस्ट पाकिस्तान था, ईस्ट पाकिस्तान को तोड़ करके एक नया देश का जन्म हुआ, उस समय भी सेना के उपर गर्व था और इस समय भी सेना बहुत शौर्य के साथ लड़ रही थी और मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे कई साथी जो उस तरफ बैठे हुए हैं, जिनके पूर्वज लाहौर से आए, रावलपिंडी से आए, डेरा गाजी खान से आए, इस्माइला खान से आए, तो मुझे लगा लव–कुश के शहर लाहौर में मैं जा करके, बिना वीजे के जा सकता हूं तो मेरी सेना अब वह पराक्रम करने जा रही है। मुझे लगा मैं कटास राज मंदिर में बिना वीजा के पूजा करने जा सकता हूं, लेकिन वो मेरे सपने चकनाचूर हो गए। मुझे लगा गिलगित बाल्टिस्तान के अंदर जो वहां के लोग विद्रोह कर रहे हैं कि हमें हिंदुस्तान में मिलना है, मुझे लगा कि वो चर्चा हो जानी चाहिए थी, वो मेरे सपने टूट गए। मुझे लगा पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर के अंदर जहां पर बलूचिस्तान की तरह, बलूचिस्तान की तरह वहां पर वो लोग विद्रोह कर रहे हैं कि हमें हिंदुस्तान के साथ मिलना है लेकिन एडमिनिस्ट्रेटिव पॉलिटिकल एस्टेब्लिशमेंट के साथ मुझे लगा ये हो क्या गया है जब सेना चाह रही है और बलूचिस्तान फ्रीडम मुवमेंट के जितने भी वर्कर हैं, चाहे वो नाएला बलोच हो, महरंग बलोच हो, वो देख रहे थे हिंदुस्तान आर्मी की तरफ कि हम वेस्ट की तरफ से हमला करेंगे, आप हमें यहां से सपोर्ट देने का पॉलिटिकल एस्टेब्लिशमेंट हमें आदेश दे, लेकिन वो सपने मेरे टूटे रह गए।

(समय की घंटी)

श्री अनिल झाः मैं भारत के गौरव, इसके अतीत, इसकी सेना ने जो पराक्रम किया उसके साथ हैं लेकिन पॉलिटिकल एस्टेब्लिशमेंट के इसलिए साथ नहीं हैं कि हमारे को बोलते हैं

सीजफायर कर दिया है और आतंक खत्म करने वाले देशों का अध्यक्ष पाकिस्तान बन गया आपके शासन में, यानि की पाकिस्तान को अध्यक्ष बनवाया गया....

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद।

श्री अनिल झाः उन देशों का जो आतंकवाद को ख़त्म करेंगे,

माननीय अध्यक्षः चलिए, आ गई आपकी बात समझ में आ गई। हो गई आपकी बात।

श्री अनिल झाः यह आपकी सरकार में हुआ है, जिसका हमें लगता है बड़ा....

माननीय अध्यक्षः चलिए। श्री राज कुमार भाटिया।

श्री अनिल झाः और मैं तो देख रहा था, आशीष सूद जी के गांव डेरा गाजी खान में मैं जाता, वहां खाना खाता,....

माननीय अध्यक्षः ठीक है। चलेंगे, वहां चलेंगे।

श्री अनिल झाः इस्माइला खान के अंदर, लाहौर में जाता,

माननीय अध्यक्षः राज कुमार भाटिया जी।

श्री अनिल झाः ये ये, खुराना जी वहीं के हैं, डेरा गाजी खान के, वहां जाना था मेरे को, वहां नहीं जा पाया मैं,

(समय की घंटी)

श्री अनिल झाः मुझे लगता है अगली बार जब हमारी सरकार आएगी, केजरीवाल जी....

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः चलिए। राज कुमार भाटिया जी। राज कुमार भाटिया जी।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः चलिए, चलिए।

....व्यवधान........

श्री राज कुमार भाटियाः आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने इस गौरवशाली विषय पर मुझे बोलने का अवसर दिया है। मैं इस सदन के माध्यम से सेना के उन सब वीर जवानों को नमन करता हूं जिनके शौर्य के पराक्रम की चर्चा यहां पर हो रही है और साथ–साथ मुख्यमंत्री जी के माध्यम से भी उन दो महिला सैन्य अधिकारियों को भी बधाई देना चाहूंगा जिन्होंने देश को लीड करते हुए जहां उन्होंने पूरे पुरुष वर्ग को उतारा था हमारी दो महिलाओं ने ऑपरेशन सिंदूर को परिणीति के रूप में परिवर्तित करते हुए पूरे देश का मान रखा। पूरे सदन में जितने भी लोग बैठे हैं, सब उन संस्कारों से आते हैं, जब हम बचपन में छोटे ऐसे अपने बाल्यकाल में थे तो जब सेना की कोई टुकड़ी या सेना की कानवॉय अपने क्षेत्र से गुजरती थी तो हम खड़े होकर उसे सैल्यूट करते थे, जय हिंद बोलते थे, भारत माता की जय बोलते थे। मैं भी आज इस सदन के माध्यम से एक बारी आप सबसे अनुरोध करूंगा कि खड़े होकर एक बारी सेना को जय हिंद बोलिए और प्रधान मंत्री जी को संदेश दीजिए।

(सदन में सेना की और भारतमाता की जय के नारे लगाए गए।)

श्री राज कुमार भाटियाः और कोई भी दबे स्वर में न बोले, जोर से जय घोष करिए, भारतमाता की....

माननीय अध्यक्षः चलिए।

श्री राज कुमार भाटियाः साथियों, पहलगाम के हमले के पश्चात जो नृशंस हत्याकांड हुआ उसके पश्चात देश भर में प्रश्न उठाए जा रहे थे कि प्रधानमंत्री जी किस बात की इंतज़ार कर रहे हैं, देश की सेना किस बात की इंतज़ार कर रही है। साथियों, अभी अध्यक्ष जी ने कहा था और बहुत सारे साथी कह रहे थे कि तर्कपूर्ण बात करनी चाहिए। अगर आपको ध्यान हो और गिनती का संज्ञान हो तो आप देखिए यह हमला, पहलगाम हमले के

पश्चात ये जो स्ट्राइक हुआ, ऑपरेशन सिंदूर हुआ, चौदहवें दिन हुआ है क्योंकि 13 दिन हमारे परिवारों में, संस्कारों में कुछ नहीं होता और 13 दिन मृतकों की शांति के लिए हम बिताते हैं और चौदहवीं करते समय ऑपरेशन सिंदूर को प्रधानमंत्री मोदी जी ने पाकिस्तान में घुसकर उनको जो जवाब देना था वो दिया, ये हमारी धार्मिक निष्ठा और परंपराओं का निर्वहन था।

(समय की घंटी)

श्री राज कुमार भाटियाः अगर इस हमले तक, अभी तो बात शुरू हुई है जी सर।

....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः नहीं वो, संक्षिप्त करिए। देखिए अभी बहुत, पूरा अजेंडा बाकी है।

श्री राज कुमार भाटियाः कोई बात नहीं जी, बस दो मिनट का समय दीजिए,

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं, आधा मिनट, आधा मिनट में।

श्री राज कुमार भाटियाः बस दो मिनट में मैं अपनी बात।

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं।

श्री राज कुमार भाटियाः मेरा विषय ही नहीं होगा। मेरा....

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः ये सभी सदस्यों के लिए मेरा ये अनुरोध है....

....व्यवधान.........

श्री राज कुमार भाटियाः मैं केवल सदन को यह बताना चाहूंगा कि यह हमला, यह युद्ध पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बीच का युद्ध परोक्ष रूप से हो सकता है लेकिन यूएस की उस deep state के जो षड्यंत्र है जिसमें वो विकसित देश विकासशील देशों को कमज़ोर करना

चाहते हैं, गृह युद्ध की तरफ धकेलना चाहते हैं ये उनकी एक नीति भी थी और हमारे प्रधानमंत्री जी ने उसका जवाब देते हुए बता दिया कि अब चौधराहट नहीं चलेगी, चौधराहट चलेगी तो आतंकवाद को खत्म करने वाले देश की चलेगी, आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देश की चौधराहट नहीं चल सकती है।

माननीय अध्यक्षः चलिए, धन्यवाद।

श्री राज कुमार भाटियाः और इसी देश के प्रधानमंत्री, भाई साहब आप प्लीज, आप देश के बहुत अच्छे देशभक्त हैं, आपसे हाथ जोड़ते हैं हम। देखिए भई सुबह शाखा जाते हो आप और अब मेरे को टोक रहे हो जी, बताओ। और थोड़े दिनों की बात है, कोई ऐसी बात ही नहीं है जी।

माननीय अध्यक्षः चलिए।

श्री राज कुमार भाटियाः मैं प्रधानमंत्री जी को बधाई देना चाहूंगा कि जैसे ये ऑपरेशन सिंदूर खत्म होता है वो आदमपुर के एसयबेस पर जाते हैं और अपने सैनिकों से बात करते हैं उनका साहस बढ़ाते हैं, उनका मनोबल बढ़ाने के लिए जाते हैं। और देश में राष्ट्र के नाम संबोधन में वह संदेश देते हैं कि यह भले ही युद्ध का काल नहीं है, लेकिन यह आतंकवाद का काल बनकर यह ऑपरेशन सिंदूर पूरे विश्व को एक संदेश देगा कि जो भी आतंकवाद का साथ देगा उसके साथ, गिनिए–गिनिए, भाई साहब गिनिए।

(समय की घंटी)

श्री राज कुमार भाटियाः भाई साहब मैं आपकी आज्ञा का पालन करता हूं, बैठता हूं, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। माननीय नेता विपक्ष, आतिशी जी।

सुश्री आतिशी (माननीया नेता–प्रतिपक्ष): धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। सबसे पहले मैं धन्यवाद करूंगी अध्यक्ष महोदय का उन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया और हमारे अभय वर्मा जी का जिन्होंने इस प्रस्ताव को सदन में रखा। देखिए 22 अप्रैल

एक ऐसा दिन है जो इस देश का कोई भी नागरिक नहीं भूल सकता। पहलगाम में जो हुआ, जो उसकी तस्वीरें हमने देखी, जो अपनी बहनों को बिलखते हुए देखा, जो उनकी आवाज़ में हमने सदमा सुना कि वो किस तरह से गिड़गिड़ाई, किस तरह से अपने पतियों की जान की भीख मांगी, लेकिन फिर भी उन निर्दयी आतंकवादियों ने गोली चलाकर निहत्थे लोगों की हत्या कर दी, इससे बर्बर कुछ नहीं हो सकता, इससे अमानवीय कुछ नहीं हो सकता। मैंने अपनी ज़िंदगी में जब से हमने राजनीति को फॉलो करना शुरू किया है, मैंने हमेशा देखा कि अलग–अलग मुद्दों पर पक्ष होता है, विपक्ष होता है, पक्ष कुछ कहता है, विपक्ष कुछ कहता है, लेकिन पहलगाम के हमले के बाद कोई पक्ष नहीं था, कोई विपक्ष नहीं था, कोई पार्टी नहीं थी, कोई नहीं था, पूरा देश एकजुट था, देश के 140 करोड़ लोग एकजुट थे और सबने एक आवाज़ में बोला कि हमें अपने बहनों के सिंदूर का बदला चाहिए, 140 करोड़ भारतीयों ने बोला।

मैं इस देश की सेना को सलाम करती हूं. उन्होंने ना दिन देखा, ना रात देखा, चाहे वो आर्मी हो, चाहे वो एयरफोर्स हो, चाहे वो नेवी हो, और जैसा हमारे सभी भाइयों ने कहा, उन्होंने, देखिए पाकिस्तान और आतंकवादियों में कोई अंतर नहीं है, पाकिस्तान आतंकवादियों को शरण देता है, जब पहला हमला हुआ और आतंकवादियों की मौत हुई, पाकिस्तान के सारे बड़े–बड़े अफसर, सारे बड़े–बड़े नेता दिखे वहां पर, उनके परिवारों के साथ दिखे। तो ये state sponsored terrorism था और पूरे देश ने एकजुट होकर कहा कि state sponsored terrorism का बदला लेंगे और मैं नमन करती हूँ हमारी आर्मी का, हमारी नेवी का, हमारी एयरफोर्स का, जिन्होंने एकजुट होकर पाकिस्तान के अंदर घुसकर आतंकवादियों को मारा, मैं पूरी अपनी सेना को नमन करती हूं। पूरी दुनिया ने देखा कि भारत का, हमारी वायुसेना का, हमारी नौसेना का, इस ऑपरेशन सिंदूर के दौरान upper hand था। पूरे देश ने देखा, हम सब टकटकी लगा के, ट्विटर पर, टीवी पर देख रहे थे कि किस तरह से, हमले पर हमला, हमले पर हमला, हमले पर हमला हमारी सेना कर रही थी। किस तरह से एक के बाद एक, एक के बाद एक कभी उनका एयरबेस, कभी उनके न्यूक्लियर प्लांट्स को डिस्ट्रॉय किया जा रहा था और पूरे

देश का एक ही मानना था कि अब यह निर्णायक जंग होनी चाहिए, अब once and for all पाकिस्तान के state sponsored terrorism को हमें खत्म करना होगा।

लेकिन एक दिन अचानक सोशल मीडिया पर, ट्विटर पर एक दूसरे देश का राष्ट्रपति ट्विट करके कहता है कि भारत और पाकिस्तान के बीच में युद्ध खत्म हो गया कि मैंने सीजफायर करवाया। मैंने जब डोनाल्ड ट्रंप का ट्विट देखा, मुझे तो लगा कोई फेक एकाउंट है, मुझे लगा ऐसा कैसे हो सकता है। भारत जैसा देश, हज़ारों साल का इतिहास हमारा, हम पाकिस्तान को खत्म करने की कगार पर थे फिर कैसे डोनाल्ड ट्रंप बीच में घुस गए। और बिल्कुल.., मुझे तो विश्वास नहीं हुआ, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के ट्विट के एक दो घंटे बाद हमारी सेना सामने आई और उन्होंने उसी बात की पुष्टि करी कि जी हां, सीजफायर हो गया। देखिए, हमारी सेना, हमारी वायु सेना इस जंग में, ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के state sponsored terrorism को निर्णायक तौर पर खत्म कर सकती थी लेकिन भारतीय जनता पार्टी की कायरता की वजह से ऐसा नहीं हो पाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी डर गए ट्रंप की धमकियों से, प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन बार नहीं, चार बार नहीं, पच्चीस बार दुनिया भर में जाकर कहा कि मैंने धमकी दी, मैंने धमकी दी कि मैं व्यापार बंद कर दूंगा और व्यापार बंद कर दूंगा इसलिए भारत ने अपना युद्ध छोड़ दिया, एक बार नहीं, पच्चीस बार डोनाल्ड ट्रंप ने यह कहा। आज मैं भारतीय जनता पार्टी से यह पूछना चाहती हूं कि क्या अमेरीका से व्यापार की कीमत हमारी बहनों के सिंदूर से ज्यादा कीमती थी जो उस व्यापार को बचाने के लिए आपने सीजफायर कर दिया। पूरा देश सेना के साथ खड़ा था, पूरा देश वायु सेना के साथ, नौसेना के साथ खड़ा था अगर कोई एक व्यक्ति हमारी देश के सेना के साथ नहीं खड़ा था, वो थे हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी,

(समय की घंटी)

सुश्री आतिशीः जिन्होंने सेना को धोखा दिया, जिन्होंने देश को धोखा दिया, जिन्होंने हमारी बहनों के सिंदूर को धोखा दिया, ये है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सच्चाई।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः चलिए, धन्यवाद। चलिए अब माननीय मंत्री, श्री कपिल मिश्रा जी।

.....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः आप शांति रखिए। चलिए।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः कपिल मिश्रा जी। आपको शोर मचाने से मतलब है और कुछ नहीं है। मतलब माननीय नेता–विपक्ष को कोई दिक्क्त नहीं है, आपको दिक्कत है, उनको कोई दिक्कत नहीं है। चलिए बोलिए आप।

माननीय श्रम मंत्री (श्री कपिल मिश्रा)ः माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत–बहुत आभार इस चर्चा में आपने मुझको बोलने का अवसर दिया। मैं आभार व्यक्त करता हूं आदरणीय श्री अभय वर्मा जी का कि उन्होंने इस प्रस्ताव को इस सदन के सामने रखा और इस सदन में यह प्रस्ताव आना आवश्यक था, इसी सदन में खास तौर पर आना आवश्यक था क्योंकि इसी सदन में कुछ समय पहले तक ऐसे पापी और भ्रष्टाचारी बैठे थे तो यहीं से खड़े होकर सेना से सबूत मांगते थे और आज वो इस सदन में क्या दिल्ली से ही भाग गए।

.....व्यवधान........

माननीय श्रम मंत्रीः इस सदन की पवित्रता के लिए, इस सदन की पवित्रता के लिए यह प्रस्ताव आना आवश्यक था। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इनका रोना, इनका प्रलाप, इनका विलाप समझ में आता है, ये सदन में रो रहे हैं, घर में तो ये चूड़ियां भी तोड़ रहे थे जब आतंकवादी मर रहे थे, ये चूड़ियां तोड़ रहे थे। जब–जब आतंकवादी मरता है कोई 'आप'

यहां रोता होता है, जब जब जेहादी मरता है कोई 'आप' यहां रोता होता है, ये केजरीवाल गैंग है, यहां पर तुम्हारे बस आंसू नहीं आ रहे, तुम्हारा बस चले तो तुम कुर्ता फाड़कर रोवोगे, क्योंकि आतंकवादी मरे है। मैं ये कहना चाहता हूं धर्म पूछ के मारा था ना, नाम पूछ के जिन्होंने नाम पूछ के मारा था आज उनका कोई नाम लेने वाला जिंदा नहीं बचा, जिन्होंने नाम पूछ के मारा था, ये भारत की सेना का पराक्रम है। कुछ तथ्य मैं इस सदन में रखना चाहता हूं ऑपरेशन सिंदूर के बारे में। ऑपरेशन सिंदूर पहला भारत की सेना का ऐसा ऑपरेशन है जिसमें आतंकवादी घटना के बाद भारत की सेना ने इंटरनेशनल बॉर्डर क्रॉस करके आतंकवादियों को मारा है, ये पहला हुआ है। इससे पहले कभी नहीं हुआ आतंकवादी घटना के बाद, इससे पहले सर्जिकल स्ट्राइक हुई थी। जब सर्जिकल स्ट्राइक पहली हुई, तो ये पहले कहते थे सबूत दो, सबूत—सबूत। अबकी बार सेना कैमरा लेकर गई थी तुम्हारे लिए ही गई थी। सारे सबूत लेकर गई, कि भईया इतने मारे हैं और जनाजे सबने देखे। मुझे अच्छा लगा नेता, विपक्ष ने बोला घर में घुस के मारा है, अबकी बार तुम्हें मानना पड़ता, सबूत मांगने लायक नहीं बचे, सबूत मांगने लायक नहीं बचे, जनता ने उठा के बाहर फेंक दिया सबूत मांगने वालों को, इसलिए तुम्हें मानना पड़ा। दूसरी बड़ी चीज, पहली बार दुनिया की अकेली सेनायें एक एटोमिक पावर के एयरबेस को उड़ाने वाली एकमात्र सेना भारत की सेना है इसके अलावा आज तक दुनिया में किसी सेना ने ये काम नहीं किया लेकिन आपने मान लिया घर में घुस के मारा है, आपने मान लिया आतंकवादी मरे हैं, आपने मान लिया जनाजे निकले हैं, सेना तो यही थी ना हमेशा से, यही सेना थी, यही रॉ थी, यही खुफिया एजेंसी थी, यही एयरफोर्स थी, यही नेवी थी, यही आर्मी थी, 26/11 के बाद क्यों नहीं हुआ। पहले डोजियर जाते थे, अभी ब्रह्मोस जाती है। क्यों नहीं हुआ, मैं पूछता हूं क्यों नहीं हुआ? आपको जवाब समझ में आएगा क्यों नहीं हुआ, क्योंकि गद्दी पर मोदी नहीं बैठा था तब इसलिए नहीं होता था, अब के हुआ, अब के हुआ। एक भी आतंकवादी हमला होता है तो पाकिस्तान को ये पता होता है और इस बार तो वो आतंकवादी मारे गए जिन्होंने यूएसए और इजरायल के अटैक में हिस्सा लिया, वो भी मारे गए। इसीलिए मैं ये कहना चाहता हूं कि आपको राष्ट्रीय नेतृत्व की जो भूमिका होती है, आज आप कोस रहे हैं कि सीजफायर क्यों हो गया, पीओके आ जाता, अरे ये तुम पूछ ही इसलिए रहे हो पीओके आने के बारे में 2014 से पहले कोई नहीं बोलता था, मोदी के आने के बाद लगता है कि ये भी सम्भव है कि पीओके आ जाएगा। ये सवाल ही पैदा नहीं होता था। सेना पर आज वो गिलगिस्तान, बलूचीस्तान सारी अखंड भारत की जो बातें की जा रही हैं, की इसीलिए जा रही हैं गद्दी पर मोदी बैठा है। ये सवाल ही उठने बंद हो गए थे, इस देश के अंदर मान लिया गया था कि आतंकवादी मारेंगे और हम डोजियर भेजेंगे और ये जो दूसरा सवाल उठा रहे हो ना दूसरे देश के राष्ट्रपति ने क्या बोला, इसने क्या

बोला, 10—15 दिन रूक जाओ, इसका जवाब भी मिल जाएगा फिर मुंह छुपाकर घुमोगे। फिर मुंह छुपाकर घुमोगे। राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पे थोड़ा सा अपने नेता के चक्कर में मत पड़ो वो दिल्ली छोड़ के भाग गया। गम्भीरता से बात करो, गम्भीरता से। मैं आपको ये कहना चाहता हूं और मैं फिर से इसके बाद ये कहना चाहता हूं।

...व्यवधान........

माननीय श्रम मंत्रीः देखो मेरे को पता है तुम रोने वाले हो, मत रोओ, इसी में तुम्हारा भला है। मैं इस सदन में।

माननीय अध्यक्षः आप कपिल जी चेयर से बात करिये, प्लीज शांत रहिए।

माननीय श्रम मंत्रीः अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः आप शांत रहिए। जी।

माननीय श्रम मंत्रीः अध्यक्ष महोदय मेरे को मालूम है मैंने अपनी बात की शुरूआत में ही कहा था कि ये अब रोए, कि तब रोए। इस सदन के अंदर सेना के पराक्रम की चर्चा हो, राष्ट्रीय नेतृत्व के, प्रधानमंत्री मोदी के निर्णय लेने की चर्चा हो, इनको फोन आ रहे हैं ऊपर से पंजाब से की रोओ, कुर्ता फाड़ो, चिल्लाओ, रोओ, कुर्ता। इनको सबको फोन आ रहे हैं, पंजाब से फोन आ रहे हैं, वो बैठे हैं इनके कि भाई रो क्यों नहीं रहे। सदन में चर्चा हो कैसे रही है, सेना के नारे कैसे लग रहे है। लेकिन तुम्हें पता है कि बाहर निकल के दिल्ली की जनता छोड़ेगी नहीं, इसलिए तुम्हें नारे लगाने पड़ रहे हैं। ये मजबूरी में नारे लगा रहे हो तुम। ये नारे तुम्हारी नियति नहीं है। मैं फिर से अध्यक्ष महोदय।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः आप अपनी बात जारी रखिये। थोड़ा जल्दी करिये।

माननीय श्रम मंत्रीः अध्यक्ष महोदय मैं ये कहना चाहता हूं पुनः इस प्रस्ताव के।

माननीय अध्यक्षः आप बैठिये।

माननीय श्रम मंत्रीः समर्थन में।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः अजय जी। अनिल जी प्लीज। चलिए आप बोलिए।

माननीय श्रम मंत्रीः मैं फिर से अपनी बात को अध्यक्ष महोदय अपनी बात को समाप्त करने से पहले मैं ये कहना चाहता हूं। मैं अपनी बात को समाप्त करते हुए केवल इतना ही कहना चाहता हूं। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं अपनी बात को समाप्त करते हुए कि ये सदन इस प्रस्ताव का समर्थन करता है, सेना के शौर्य को और पराक्रम को और यश को नमन करता है। प्रधानमंत्री जी के और राष्ट्रीय नेतृत्व के निर्णय लेने की और दूरदृष्टि की संकल्प का अभिनंदन करता है और मैं ये भी कहना चाहता हूं।

...व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः चलिए, चलिए। माननीय मंत्री जी।

माननीय श्रम मंत्रीः छाज बोले तो बोले छलनी भी बोले।

माननीय अध्यक्षः कन्कलूड करिये।

माननीय श्रम मंत्रीः छाज बोले तो बोले छलनी भी बोले जिसमें हजारों छेद।

...व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः चलिए। धन्यवाद।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः एक मिनट। अनिल जी बैठिए।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः चलिए। कन्कलूड करिये।

माननीय श्रम मंत्रीः बहुत–बहुत आभार अध्यक्ष महोदय इस सदन में बोलने का मौका देने के लिए। हम इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद। माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता।

(सदस्यों द्वारा भारतीय सेना जिंदाबाद के नारे सदन में लगाए गए)

माननीया मुख्यमंत्री(श्रीमती रेखा गुप्ता): भारत माता की जय।

(सदस्यों द्वारा भारत माता की जय के नारे लगाए गए)

माननीया मुख्यमंत्री(श्रीमती रेखा गुप्ता): अध्यक्ष महोदय एक बार भारत की सारी विपक्षी पार्टियों ने मिलकर के एक गठबंधन बनाया था उसका नाम रखा 'इंडिया'। नाम तो 'इंडिया' रखा परंतू यदि आँख बंद करके उन्हें सुने तो ऐसा पता ही नहीं चलता कि वो स्पोकस पर्शन इंडिया के हैं कि पाकिस्तान के। उनका माउथपीस भारत के लिए बात कर रहा है कि क्या अमेरिका की बात कर रहे हैं। ऐसे जितने लोग हैं जब संसद में चर्चा हुई तो ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाए, ऑपरेशन सिंदूर पर बहुत सारे प्रश्न उठाए। उनके लिए काका हाथरसी ने एक कविता लिखी है। नाम और रूप का भेद। तो उन्होंने लिखा किः

''नाम मिला कुछ और तो शक्ल–अक्कल कुछ और

नाम मिला कुछ और तो शक्ल अक्कल कुछ और

शक्ल अक्कल कुछ और बेच रहे कोयला लाला हीरालाल

सूखे गंगा राम सूखे मक्खन लाल,

अरे सूखे मक्खन लाल झींकती, माँ और दीदी।

समझ रहे हैं ना माँ और दीदी किः

निकले बेटा आसाराम कितने निराशावादी।''

जिनको अपनी देश के सेना के वक्तव्य पर विश्वास नहीं, जिनको अपने प्रधानमंत्री पर विश्वास नहीं, वो विश्वास करते हैं दूसरे देशों के आकाओं पर और वो जो दीदी, राष्ट्रीय दीदी। श्रेय की बात कर रही थी की देखिए मोदी जी को इसका श्रेय चाहिए, मोदी जी को इसका श्रेय चाहिए मैं पूछना चाहती हूं, 1947 से आपकी सरकार दिल्ली में, देश में राज कर रही है। आपने खूब श्रेय लिया देश को आज़ाद करने का तो देश के विभाजन की ज़िम्मेदारी क्यों नहीं ली आपने। आपने खूब श्रेय लिया कि

भारत को हमने जिताया, भारत को हमने आज़ाद कराया, तो जब कश्मीर जो भारत का हिस्सा था और पाकिस्तान उस पर कब्जा कर रहा था तो आपने उसकी जिम्मेवारी क्यों नहीं ली? ये आप लोग थे, कांग्रेस की सरकार थी जिसके कारण से भारत के कश्मीर पर पाकिस्तान ने कब्जा किया और तात्कालिक प्रधानमंत्री, उनके अपने नाना यूएन के पास दौड–दौड़ के मध्यस्थता करा रहे थे और पूरा का पूरा कश्मीर का वो हिस्सा तेरह हज़ार किलोमीटर का वो हिस्सा पाकिस्तान को दे दिया। तब ज़िम्मवारी उन्होंने क्यों नहीं ली? उन्होंने 1962 के भारत चीन के युद्ध की ज़िम्मेदारी क्यों नहीं ली? जब बिना हथियार के, बिना ठंड के कपड़ों के, बिना बारूद के हमारी सेना के हज़ारों सैनिक मर गए तब उन्होंने ज़िम्मेदारी नहीं ली, बातें करते रहे। मैं पूछना चाहती हूं 1965 में जब भारत और पाक का युद्ध हुआ तब क्यों यह सरकार दबाव में आई थी। जीती हुई जमीनें वापस कर दीं, समझौते कर लिए गए, मध्यस्था करवाई यूएन और यूएस की। तब किस दबाव में थी, तब क्यों ज़िम्मेदारी नहीं ली और साथ में बात करना चाहती हूं 1971 के युद्ध की, जब भारत और पाकिस्तान का युद्ध था सेनाओं ने तब भी शौर्य दिखाया, सेनाएं आज भी शौर्य दिखा रही हैं। पर तब जो सिंहासन पर बैठे हुए लोग होते उनमें निर्णय क्षमता नहीं होती थी। 93,000 पाकिस्तान के सैनिकों को बंदी बना लिया गया और बिना शर्त के छोड़ दिया गया। ना तो उसके बदले में पीओके मांगा गया, ना ही 54 सैनिक जो भारत के पाकिस्तान के पास थे उन्हें मांगा गया मैं पूछना चाहती हूं उसकी ज़िम्मेदारी क्यों नहीं याद आई मैडम को जब वो संसद में खड़े होकर के बोल रही थी, तब क्यों शिमला समझौता कर लिया गया। मैं पूछना चाहती हूं 1984 में जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी की मृत्यु हुई और तात्कालिक उनके बाद के प्रधानमंत्री राजीव गांधी खड़े होकर के यह कह रहे थे की बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती है। तब उन्हें ज़िम्मेदारी का बोध नहीं था कि उनके इस एक वाक्य ने पूरे के पूरे भारत में हजारों सिखों के घर बर्बाद कर दिये, उनका कत्लेआम कर दिया। उसकी जिम्मेदारी उन्होंने क्यों नहीं ली और उसके बाद से लेकर के जब तक मोदी जी की सरकार नहीं आई कश्मीर घाटी में रोज पत्थर फेंके जाते थे, रोज कत्लेआम होते थे, रोज भारत बदनाम होता था, उसकी जिम्मेदारी उन्होंने कभी नहीं ली। तब भी वो चुप रहते थे और इतने सारे कश्मीरी पंडितों का नरसंहार हुआ, पलायन हुआ, तब उनसे ज़िम्मेदारी नहीं ली गई। आज वो बात करती हैं कि ज़िम्मेदारी, ज़िम्मेदारी लीजिए, ज़िम्मेदारी लेने के बाद ही तो यहां बैठे हैं और वो, वो सांसद जया बच्चन जी वरिष्ठ सांसद हैं। बात करती है कि काल्पनिक लगती है यह सारी घटना मैं उन्हें बताना चाहती हूं आज इस सदन के माध्यम से अभिनय की कला अलग है और संसद की गरिमा अलग है। उनके द्वारा कहे हुए यह शब्द सीधा–सीधा सेनाओं का अपमान है जब वो कहती हैं कि एक पूरा का पूरा दृश्य काल्पनिक लगता है। मैं कहना चाहती हूँ कि वो सैनिक जो अपनी जान हथेली पर लेकर के सरहदों

पर लड़ते हैं वो उन्हें काल्पनिक लगता है। वो कहती है इसका नाम सिंदूर क्यों रखा गया। मैं उनको उनकी ही फिल्मी भाषा में बताना चाहती हूँ कि एक चुटकी सिंदूर की कीमत आप क्या जाने जया मैडम। आपको नहीं मालूम कि इसकी वैल्यू क्या है? इसका आधार क्या है? इसका सम्मान क्या है? आप तो फिल्मी हस्ती हैं, फिल्मों के अंदर की दुनिया जानती हैं, उसके बाहर आपको कुछ नहीं पता क्योंकि तुम्हारी राजनीति तो केवल आरोपों से चलती है और मोदी जी की साख जनता के भरोसे पर पलती है। ऑपरेशन सिंदूर, ऑपरेशन सिंदूर उत्तर था उन सभी आँसुओं का जो हमारी बहनों की आंखों से निकले, ऑपरेशन सिंदूर उन सभी चीखों का उत्तर था जो उन मांओं ने अपने बेटों की अर्थी से लिपट–लिपट के चिल्लाई और रोई उसका जवाब था ऑपरेशन सिंदूर और मैं बधाई देना चाहती हूं आदरणीय प्रधानमंत्री जी को देश की सभी माताओं बहनों की ओर से जिन्होंने एक साहसिक पिता, एक संवेदनशील भाई और एक दृढ़ शक्ति वाले राष्ट्र नायक की भूमिका निभाते हुए भारत की सभी बहनों का मान–सम्मान और स्वाभिमान बचाया। ये सैन्य अभियान नहीं था, ये सैन्य अभियान नहीं था, यह हर शहीद के परिवार का सम्मान था जो माननीय मोदी जी की वजह से मिला और यह विपक्ष, इन विपक्ष के लोगों पर तो वह गाना जंचता है अध्यक्ष जी वो कहते हैं ना कि इसको लुभाया तो क्या किया उसको लुभाया क्या किया वो गाना होता था कि दारा सिंह को लड़ाओ तो जाने अमिताभ बच्चन को बुलाओ तो जाने, वो जंचता है जब 2016 में उरी की सर्जिकल स्ट्राइक हुई तब ये कहते थे सबूत। तो कहते थे ये करके दिखाओ, सबूत लाके दिखाओ तो माने। मोदी जी ने सबूत ला दिया अगली बार। जब बालाकोट एयर स्ट्राइक हुई तो सबूत भी आ गए तब इन्होंने कहा कि अरे भाई वह अभिनंदन चला गया उसको वापस लाओ तो जाने और मोदी जी की ताकत देखिए अभिनंदन को भी वापस ले आए, पाकिस्तान खुद आकर के देकर के गया। फिर इन्हें लगा कि अब क्या बोलें, कि अब क्या बोलें, कि अब इसके अगला क्या है? तो इन्होंने कहा कि भई आज आपने यहां पर जो किया है यह तो कर दिया जो आतंकियों ने सीधा–सीधा मारा, आपने आतंकी अड्डों पर हमला किया वो तो ठीक है परंतु जो आतंकी सीधा–सीधा गोली चला के गए उनको क्यों नहीं मारा, तो मोदी जी ने उसका भी जवाब दे दिया हर हर महादेव महादेव ऑपरेशन के तहत उन तीन आतंकवादियों को भी मार दिया। फिर ये कहते हैं की अब क्या बोलें? तो ये तो विपक्ष की भूमिका है, इन विपक्ष वालों का क्या कहें? इनको कुछ तो बोलना है. इन्हें भारत से प्यार नहीं है. इन्हें भारत से प्यार नहीं है, इन्हें उन सब देश विरोधी ताकतों से प्यार है जहां इनको अपना प्रतिबिम्ब दिखता है। भारत की प्रगति में, भारत के आगे बढ़ने में ये लोग खुश नहीं है, ये चाहते हैं कि देश पिछड़ा रहे जैसे इनके कार्यकाल में पिछड़ा रहा। 2014 के बाद जिस तरीके से मोदी जी के नेतृत्व में भारत आगे बढ़ा है, जिस तरीके से हमारी शक्तियां सैन्य शक्तियां पुरज़ोर होकर के बिल्कुल मुस्त होकर के

आगे बढ़ी हैं, हर दीवाली पर प्रधानमंत्री जी सेनाओं के साथ जाकर के दीवाली का बड़ा त्यौहार मनाते हैं, आप लोगों के जैसे नहीं अपने घरों में बैठ के गिफ्ट बटोरते है। प्रधानमंत्री और सेनाओं का दिल का रिश्ता है। आज देश की सरहदों पर लाखों मांओं के बेटे खड़े होकर के देश की सरहदों की रक्षा करते हैं उसका सम्मान होना ज़रूरी है और जो लोग, जो लोग फिर भी सरकार के सामने प्रश्न रखते हैं उनके बारे में मैं यह कहना चाहती हूं किः

''तूफानों ने जब भी देश को डराया,

तूफानों ने जब भी देश को डराया,

मोदी एक उम्मीद बन करके सामने आया,

आंधियां चली थी, चिराग बुझाने को,

पर वो खड़ा रहा उजाला बढ़ाने को,

ना रुका, ना झुका, ना थमा किसी हाल में,

लड़ता रहा देश के, हर एक सवाल में, हर एक सवाल में,

वो कोई नेता नहीं, हौसलों की पहचान हैं,

वो कोई नेता नहीं, हौसलों की पहचान है,

जो हर अंधेरे में रोशनी का अरमान है, रोशनी का अरमान है,

मिट्टी की खुशबू से जिसने रिश्ता निभाया है,

मिट्टी की खुशबू से जिसने रिश्ता निभाया है,

उस दीपक का नाम मोदी कहलाता है।''

बहुत बहुत धन्यवाद। मैं देश की सेनाओं को और देश के प्रधानमंत्री मोदी जी को बहुत–बहुत धन्यवाद करती हूं, ऑपरेशन सिंदूर के लिए भी और ऑपरेशन महादेव के लिए भी। आज सावन का आखिरी सोमवार है मेरे साथ मिलकर के जयकारा लगेंगे, हर हर महादेव, हर हर महादेव।

माननीय अध्यक्षः अब श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीय मुख्यमंत्री अपने विभाग से संबंधित कार्यसूची के बिंदु क्रमांक तीन के उप बिंदु एक में दर्शाए गए दस्तावेज़ की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगी।

माननीया मुख्यमंत्री(श्रीमती रेखा गुप्ता):माननीय अध्यक्ष जी मैं कार्य सूची के बिंदु क्रमांक तीन के उपबिंदु एक में दर्शाए गए दस्तावेजों की प्रतियां सदन के पटल पर प्रस्तुत करती हूँ।

3(I)

(क) वर्ष 2023–24 के लिये राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र दिल्ली सरकार के वित्तीय लेखे एवं विनियोग लेखे (हिंदी एवं अंग्रेजी प्रति)[3]

(ख) 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिये राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार से संबंधित 'वर्ष 2023–24 के राज्य वित्त' पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का प्रतिवेदन (वर्ष 2025 का प्रतिवेदन संख्या–01)(हिंदी एवं अंग्रेजी प्रति)।[4]

(ग) 31 मार्च, 2023 को समाप्त हुये वर्ष के लिये राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार से संबंधित 'भवन एवं अन्य सन्निर्माण श्रमिकों के कल्याण' पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का प्रतिवेदन (वर्ष 2025 का प्रतिवेदन संख्या–02)(हिंदी एवं अंग्रेजी प्रति)[5]

माननीय अध्यक्षः अभी लास्ट में लेंगे 280, अब श्री आशीष सूद माननीय ऊर्जा मंत्री अपने विभाग से संबंधित कार्य सूची के बिंदु क्रमांक तीन के उप बिंदु दो में दर्शाए गए दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगे। माननीय मंत्री। ये जब–जब, जो–जो चीज सदन के पटल पर रखी जा रही है वो तुरंत आपके आईपैड में वो आती जा रही है। माननीय मंत्री जी।

माननीय शहरी विकास मंत्री(श्री आशीष सूद): आदरणीय अध्यक्ष महोदय मैं कार्य सूची के बिंदु क्रमांक तीन के उप बिंदु दो में दर्शाए गए दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं।

[3] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23407 पर उपलब्ध।
[4] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23408 पर उपलब्ध।

[5] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23409 पर उपलब्ध।

3(II)

(क) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस के लिये नियम एवं शर्तें) विनियम, 2024 के संबंध में अधिसूचना संख्या एफ. 17(17) इंजी./डीईआरसी/2023–24/सी.एफ.नं. 8020/1568 दिनांक 12/11/2024 (हिंदी एवं अंग्रेजी संस्करण)।[6]

(ख) दिल्ली विद्युत विनियामक आयोग (डीईआरसी) का वर्ष 2023–24 हेतु वार्षिक लेखा प्रतिवेदन (हिंदी एवं अंग्रेजी प्रति)[7]

माननीय अध्यक्षः श्री मोहन सिंह बिष्ट, माननीय उप सभापति जी यहां पर कार्य मंत्रणा समिति का दूसरा प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे।

माननीय उपाध्यक्ष(श्री मोहन सिंह बिष्ट): आदरणीय अध्यक्ष जी, आपकी अनुमति से कार्य मंत्रणा समिति का दूसरा प्रतिवेदन प्रस्तुत है। [8]

माननीय अध्यक्षः श्री मोहन सिंह बिष्ट जी नियम समिति के प्रथम प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे।

माननीय उपाध्यक्षः आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी आपकी अनुमति से नियम समिति का प्रथम प्रतिवेदन प्रस्तुत है।[9]

माननीय अध्यक्षः अब श्री आशीष सूद माननीय शिक्षा मंत्री दिल्ली विद्यालय शिक्षा विधेयक–2025, वर्ष 2025 का विधेयक संख्या–3 को सदन में introduce करने की permission मांगेंगे।

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद): आदरणीय अध्यक्ष जी आपकी अनुमति हो तो इसकी अनुमति से पहले मैं ये बिल सरकार को क्यों लाना पड़ रहा है इसके संदर्भ में कुछ मिनट में ये टिप्पणी करना चाहता हूं।

---

[6] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23410 पर उपलब्ध।

[7] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23411 पर उपलब्ध।

[8] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23412 पर उपलब्ध।

[9] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23413 पर उपलब्ध।

माननीय अध्यक्षः निश्चित रूप से आप आमंत्रित हैं क्योंकि जब introduction होता है बिल का, तो उससे पहले माननीय मंत्री उसकी व्याख्या रखते हैं जिससे सदस्यों को आसानी होती है कि बिल को introduce करना है कि नहीं करना है, इसकी इजाज़त देनी है कि नहीं देनी है इसलिए आप कहिए।

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद): बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी। आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आज यहां दिल्ली के लाखों अभिभावकों, करोड़ों बच्चों और दिल्ली के निवासियों की एक ऐसी विरासत की समस्या का माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देश पर स्थाई समाधान लाने के रूप में एक बिल लेकर आए हैं, जिसे दशकों तक नज़रअंदाज किया गया है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक महान शिक्षाविद् और हमारे आंदोलन के प्रणेता थे। उन्होंने Education institutions को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का एक जीवंत अंग बताया था। उनके विचार हमें याद दिलाते हैं कि शिक्षा कोई बेचने वाली सर्विस नहीं है, बल्कि एक sacred duty है। हमारा कर्तव्य है, लेकिन जब स्कूल का मकसद लर्निंग की बजाए अर्निंग वन जाए और एजूकेशन प्रोफिट का ज़रिया, तो लगता है कि कहीं ना कहीं इस सोच से हम विमुख होते जा रहे हैं। आदरणीय अध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी की सरकार का, ये बिल एक छोटा सा प्रयास है, जो डॉ0 मुखर्जी के विजन को सम्मान देने का और ये सुनिश्चित करने का कि शिक्षा भारत के लोगों पर बोझ ना बने, दिल्ली के लोगों पर बोझ ना बने और उन्हें एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाने का रास्ता बने। देश में आज आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार, सिर्फ़ योजनाएं नहीं बना रही है, legacy के इशूज को भी solve कर रही है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर, जैसे अनेक legacy issues आदरणीय प्रधानमंत्री जी resolve कर रहे है। राम मंदिर का ऐतिहासिक निर्णय हुआ legacy issue का resolve हुआ। 70 साल से कश्मीर से संबंध बनाने का चुनाव ब्रिज मोदी जी के नेतृत्व में बना, legacy issue resolve हुआ। धारा 370 हटाकर कश्मीर का पूर्ण विलय देश में होने का legacy issue resolve हुआ। इसी से प्रेरणा लेकर हमारी मुख्यमंत्री जी ने भी दिल्ली के legacy issue जो दिल्ली का सबसे बड़ा legacy issue है, हर साल, हर साल पेरेंट्स पर फीस बढ़ने का legacy issue इसको resolve करने का निर्णय लिया है। और आदरणीय अध्यक्ष जी, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, जो चुनकर आते हैं उनका तो ये शगल है। दिल्ली में अधिकांश जितने भी नए कॉलेज और यूनिवर्सिटी बनी है वो 1993 से 98 के बीच में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने ही बनाई थी और आज उसी legacy के legacy issue को रिजोल्व करने का संकल्प माननीय

मुख्यमंत्री जी ने अपने हाथ में लिया है, जो शिक्षा के बाजारीकरण, शिक्षा के व्यवसायिकरण को रोकने का काम, इस legacy issue को रोकने के लिए मुख्यमंत्री जी ने लगातार प्राइवेट स्कूलों की बढ़ती फीस के खिलाफ ये बिल लाने का निर्णय किया है, ताकि शिक्षा केवल चुनिंदा लोगों का काम ना रहे। आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां एक बात और जानने की है, भारत welfare state है। welfare state का काम जनता के हितों के लिए काम करना है केवल सस्ती freebies बांटना welfare state का काम नहीं है। यहां ये याद रखने की ज़रूरत है, शिक्षा को fundamental right, शिक्षा को मौलिक अधिकार छठी क्लास से चौदहवीं, छह साल से चौदह साल तक के बच्चों को शिक्षा mandatory होना, उनका fundamental right बनना, 82वें संविधान संशोधन के चलते आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार ने ही दिया था। आज अगर देश में 6 साल से 14 साल के हर बच्चे को शिक्षा मिल रही है, तो ये अटल बिहारी वाजपेयी जी और भारतीय जनता पार्टी के कारण ही हो रहा है। उसी भावना से सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान चलाया, उसी भावना से वाजपेयी जी के प्रण को आगे लेकर, शिक्षा केवल कुछ लोगों के लिए प्रिविलेज ना बने इसलिए ये बिल सरकार लेकर आना चाहती है। वेलफेयर स्टेट की जिम्मेदारी है कि बच्चों को, नागरिकों को आत्मनिर्भर बनाए। मोदी जी भी इसी प्रकार के प्रयासों में लगे रहते है। आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना, उज्जवला योजना, पीएम स्वनिधि योजना ये सब वेलफयेर स्टेट के वो परिचायक हैं जो नागरिकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करने का काम करते हैं। शिक्षा सुलभ और गुणवत्तापूर्ण हो इसके लिए काम करते हैं। जब शिक्षा का अधिकार संविधान ने सुनिश्चित किया और सरकारों को ये जिम्मेदारी दी गई की वे हर बच्चे को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दें, तो सवाल ये उठता है आज प्राइवेट स्कूल इतने व्यापक क्यों हो गए हैं? क्यों लोगों को ये महसूस होने लगा कि बच्चों का भविष्य प्राइवेट स्कूलों के हाथ में ही सुरक्षित है? यहां अधिकांश सदस्य ऐसे बैठे होंगे जिन्होंने खुद तो सरकारी स्कूलों में पढ़ाई की होगी मगर निश्चित रूप से आपके बच्चों ने सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं की होगी, कोई बुराई नहीं है, क्योंकि लगातार सत्ताईस सालों में सरकारों ने सरकारी स्कूलों को पीछे धकेल कर प्राइवेट स्कूलों के हाथ में शिक्षा दे दी और बाजारीकरण करने का काम कर दिया, साठगांठ, अंडर द टेवल डीलिंग्स और शिक्षा माफिया के साथ मिलकर लगातार–लगातार इस प्रकार के काम किए जाने लगे। आपको जानकर हैरानी होगी शिक्षा माफिया से साठगांठ और शिक्षा माफिया के दबाव में हमें भी डराने की बहुत कोशिश की गई। हमें भी बहुत तरह से इस

बिल को लाने से रोकने की कोशिश की गई। आदरणीय मुख्यमंत्री जी पर एक व्यक्ति का नाम लेकर निजी आक्षेप किए गए, आरोप लगाए गए, मुझ पर घटिया और निम्न स्तर के आरोप लगाकर इस प्रकार का काम करने, इस बिल को रोकने का काम किया गया। आदरणीय अध्यक्ष जी कितना संयोग है मुख्यमंत्री जी ने सावन का चौथा सोमवार मुझे याद दिलाया। कितना बढ़िया संयोग है कि एक ऑपरेशन महादेव ने भारत पर हमला करने वाले, भारत के लोगों को तंग करने वाले उग्रवादियों को समाप्त किया और आज सावन के चौथे रोज़ दिल्ली में शिक्षा को बेचने वाले माफिया के खिलाफ हम बिल लेकर आ रहे हैं। कितना सुखद संयोग है ये और हमें डराने का काम किया गया, हमें डरा कर मुख्यमंत्री जी पर आरोप लगाकर, हम पर आरोप लगाकर, घटिया तरह के आरोप लगाकर, हमें रोकने का काम किया गया, धमकाने का काम किया गया, हमें धमकाने का काम किया गया। ''अकाल मृत्यु वो मरे, जो काम करे चांडाल का, काल भी उसका क्या बिगाड़े, जो भक्त है महाकाल का।'' इसलिए हमने ये निश्चित कर लिया। इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हर तरीके से, हर दबाव को दरकिनार करके हमने ये निर्णय किया कि दिल्ली की जनता को क्या, क्या विकट परिस्थिति थी माननीय अध्यक्ष जी। अभी मैं याद दिलाऊंगा आपको। आप उस सारी विकट परिस्थिति के साक्षी रहे हैं। उस आंदोलन के आप भी साक्षी रहे हैं। बच्चे स्कूल जाते थे, नेता अपने ऐसी कमरों में रहते थे और बच्चों की फीस के लिए लड़ने के लिए मां–बाप कोर्टों के चक्कर लगा रहे हैं और शिक्षा की क्रांति के बड़े–बड़े दावे किए जा रहे हैं। अभिभावक कोर्ट कचहरी में है और ये अपने घरों में बैठ कर घटिया आरोप लगाते हैं। अध्यक्ष महोदय मैं आपको बताना चाहता हूँ, डीएसइएआर 1973 से दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था रेगुलेट होती है। 1973 में मुट्ठी भर स्कूल थे। गवर्नमेंट स्कूल थे 1973 में 338 जो 2025 में 1071 हुए हैं और प्राइवेट स्कूल थे 118 जो आज 1798 के आसपास हो गए हैं। 1993 में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार आदरणीय मदनलाल खुराना जी के नेतृत्व में पहली बार दिल्ली में बनी तब 1668 सरकारी स्कूल थे 27 साल में 27 साल में ये ए और बी टीम 1668 को 1070 तक लेकर आ सकती है और प्राइवेट स्कूल जो 1993 में 711 थे अब 1798 हो गए।

.....व्यवधान.......

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद): हमें पता है आपको कष्ट है। हमें पता है आतिशी जी, आप हमारी मित्र हैं, हमें पता है आपकी आंखों में कष्ट दिखता है। माननीय अध्यक्ष जी ये स्कूलों के आंकड़े से ये समझना चाहिए अरे, अरे देखो ये ये गरीब बच्चों के, ये गरीब मां बाप के लिए महत्वपूर्ण मामला है जरा गौर से सुनिए माननीय सदस्य दिल्ली में सत्रह तीन, डीएसईआर के 17(3) के अंतर्गत "manager of every school shall before commencement of academic year, file with director the full statement of fees and except with prior approval of director, no such school shall change any fees, charge any fees in excess" यानि 31 मार्च तक जो लिखकर दे दिया मैं इतनी फीस चार्ज करूंगा उतनी फीस चार्ज करने का उसको अधिकार है। ज़्यादा होगी तो डायरेक्टर के पास आना है ये 1973 का एक्ट है। अध्यक्ष जी, लगातार सालों तक फीस की डिटेल देते जा रहे हैं। इन्हें सब पता था, ये तो वो ही बात हो गई, ''इनको खबर थी लुटेरों के सब ठिकानों की, इनको ख़बर थी लुटेरों के सब ठिकानों की, अगर शरीके जुर्म ना होते, तो मुखबरी करते।'' इन्हें सब पता था, डीएसईआर के अंतर्गत लगातार, लगातार स्टेटमेंट लेकर अंदर जमा करते जा रहे हैं, किसी ने रोकने की कोशिश नहीं की मैं आपको इसकी क्रोनोलॉजी डीएसईआर का सेक्शन–24 कहता है हर साल इंस्पेक्शन होनी है। पिछले 10 सालों में हर डिस्ट्रिक्ट में 5 स्कूल की इंस्पेक्शन करके इतिश्री पा ली यानि हर साल 75 स्कूलों की इन्स्पेक्शन कराते थे और 75 स्कूलों की इंस्पेक्शन करा के इस क्लॉज अंतर्गत लगातार फीस बढ़ती रही और और लगातार फीस बढ़ते रहने के बाद पूरे दस साल अपने कमरों में मंत्री बैठे रहे, गाल बजाते रहे, शिक्षा क्रांति और बच्चों के भले की बात करते रहे। अध्यक्ष जी, यहां सत्ताईस साल की क्रोनोलॉजी को समझने की ज़रूरत है। ये ध्यान करने की ज़रूरत है। अध्यक्ष जी 4.5.1997 को एक ऑर्डर पास होता है 4.5.1997 को किसकी सरकार थी, नहीं जी ये यही प्रोब्लम है। ये जो फ्लाई ओवर से आकर सरकार में चलाने लग गए ना उनको ये ही प्रोब्लम है। बीजेपी की सरकार थी, आप थी नहीं, मैंने बताया फंडामेंटल

राइट, भारत रतन अटल बिहारी वाजपेयी जी के कारण शिक्षा बनी है। हमारे कारण बनी है। गाल बजाने से काम नहीं होता। एसएसए का पैसा हमारी सरकार के वाजपेयी जी के कारण आकर शिक्षा व्यवस्था ठीक होने लगी है, जिससे आप लोगों ने दस साल बजट के उड़ा–उड़ा कर विज्ञापन किए थे। 4 मई, 1997 को एक सर्कूलर पास होता है कि अनऐडेड स्कूल को फीस बढ़ाने का, बिल्डिंग चार्जेस के लिए ट्रांसपेरेंसी इन्श्योर करना है. एक ऑर्डर पास होता है। उसके बाद 98वे में जहां मैं कह रहा था दिल्ली अभिभावक महासंघ वर्सेस यूनियन ऑफ इंडिया का एक मुक़दमा दायर होता है। जहां पर दिल्ली High Court uphelds DOE power to regulate unreasonable fee hike and curb commercialization of education ये 1998 में हो गया साहब। जो ये नरेटिव चलाया जाता है, आदरणीय।

माननीय अध्यक्षः कब, पैटीशनियर तो बता दो कौन था?

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद ): वो ही बता रहा हूँ अध्यक्ष जी, थोड़ा माहौल बना रहा हूँ ना, थोड़ा आपकी भी तो क्यूरोसिटी बढ़नी चाहिए ना। अध्यक्ष जी एक नरेटिव चलाया जाता है की बीजेपी आई मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी की सरकार आई, अपने कर्मों को छुपाने के लिए अगर शरीके जुर्म ना होते तो मुखबरी करते, आज अपना जुर्म हमारी सरकार पर थोपने की कोशिश करते हैं इसलिए 1997 में एबेलेवल रिकॉर्ड्स के अनुसार भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने पहली बार फी रेगुलेट करने के लिए डीओई का ऑर्डर निकाला, डीओई का ऑर्डर। 1997 में दिल्ली अभिभावक महासंघ के अध्यक्ष के नाते वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष श्री विजेंद्र गुप्ता जी उस आंदोलन को चला रहे थे और, और तब उसके बाद पच्चीस नवम्बर, 1998 को दिल्ली में चुनाव होता है। 28 नवम्बर को रिजल्ट आता है और 3 दिसम्बर, 1998 को आदरणीय शीला दीक्षित जी, स्वर्गीय शीला दीक्षित जी, दिल्ली की मुख्यमंत्री बन जाती है. 15.12.1999 को दुग्गल कमेटी का constitution होता है. दुग्गल कमेटी फिर fund development fee upto 10% to be allowed with depreciation of for reserved fund होता है। इसी के

pursuasion में आगे चलते चलते 27.04.2004 को Modern School versus Union of India का केस आ जाता है Modern School versus Union of India के केस में आपके माध्यम से मैं दिल्ली की जनता को बताना चाहता हूं दिल्ली की जनता को बताना चाहता हूं, दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार ने मिलकर मुकदमा लड़ा, जीते और डीओई के इस राइट को रेसटोर करा दिया कि हम फीस को रेगुलेट कर सकते हैं। डीओई को राईट मिल गया फीस को रेगुलेट करने का। बच्चों के हितों का, अभिभावकों के हितों के लिए लड़ने का, उनको रोकने का हमें अधिकार मिल गया मगर, मगर यहां एक बात समझने की है, ये सब केवल 366 उन स्कूलों के लिए होता रहा जिनको लैंड क्लोज के अंतर्गत डीडीए से रियायती दामों पर ज़मीन मिली थी। फिर 27.04.2004 को मॉर्डन स्कूल के इस केस के बाद 10.02.2005 को डीओई further issues order unaided recognized schools for compliance of the mandator Modern School order फिर 2009 में छठे सीपीसी को लागू करने के लिए पांच कैटेगरी के स्कूल्स को पांच category based on their monthly tution fees, fees बढ़ाने का अधिकार कर दिया गया 2010 में, 2010 में डीओई ने गाइडलाइन दी mandating schools to use reserves to cover up salaries. 2011 में फिर सुप्रीम कोर्ट 2009 में Hon'ble court एक केस बना अभिभावक महासंघ के ही केस में Hon'ble court ने अनिल देव जी की कमेटी बना दी। जस्टिस अनिल देव कमेटी बन गई। जस्टिस अनिल देव कमेटी ने स्कूल को एक अधिकार दे दिया गया। जज साहब बैठे उनको कुछ ऑडिटर्स उपलब्ध कराए गए। स्कूलों के खाते चैक करने का अधिकार मिल गया। उसके बाद 2016 में, 2011 के बाद 2016 आते–आते तक, जुर्म में शामिल लोग आते गए। एक केस हुआ justice of all versus of Government of NCT Delhi directed schools with DDA land to comply with fee hike regulation only on DDA land. 2016 को लैंड अलोटिड के लिए डीओई के ऑर्डर को प्रोहीविट किया गया। DOE issued an order prohibiting fee hike

फिर 2016 में DOE also directed schools to submit them proposal कहते हैं हमने नहीं बढ़ाई DOE asked the schools to submit proposals online for increase in fees कहा कि आप ऑनलाइन मांगिए हमसे फी हाईक के लिए 2016 में फिर 2016 में ही Modern school case में Division Bench of High Court directed judgement of Modern School case is binding in nature on land clause school मगर 27.07.2016 का 17.10.2017 में DOE issued order's guideline relating implementation of 7th Pay Commission. 7th Pay Commission ki implementation के लिए स्कूलों को सर्कूलर निकाल कर दे दिया जाओ फीस बढ़ाओं और मजा करो।

.....व्यवधान........

माननीय शिक्षा मंत्री (श्री आशीष सूद ): ''इनको खबर थी लुटेरों के सब ठिकाने की, इनको खबर थी लुटेरों के सब ठिकाने की शरीके के जुर्म ना होते तो मुखबरी करते।'' फिर 2018 में मैं पूरा पढ़ रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः अनिल जी आप चुप रहिये।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): देखिए 2018 में DOE withdrew the circular. 2018 में डीओई देखिए माननीय सदस्य, जरा आपका तबज्जो चाहता हूं, बड़ा महत्वपूर्ण है। 2018 में DOE withdrew the circular dated 17.10.2017 permitting fee hikes online, land clause schools not to increase fees without prior approval of the director ठीक है साहब। अब देखो मज़े कि कानून की इतने लचर तरीके से सर्कूलर बनाए जाते थे 15.03.2019 को WPC No. 4374/2018 Action Committee case में High Court ने quash कर दिया इनके स्टे को।

श्रीमती आतिशी (माननीया नेता प्रतिपक्ष): एक्शन कमेटी का अध्यक्ष कौन है।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): मुझे मालूम था आप यही कहेंगी। एक्शन कमेटी का अध्यक्ष होने में कोई बुराई नहीं है। एक्शन कमेटी ,मैं बताता हूं ना और बहुत सारे एनजीओ हैं जो आपके बगल एक मिनट, एक मिनट, मैं बताता हूं। एक्शन कमेटी का अध्यक्ष मैं बताता हूं ना, किसी नॉन गवर्मेंट पर्सन का नाम लेने के लिए मेरे को बाध्यता नहीं है। जो भी था, जो भी था, अरे जो भी आपने इसीलिए उनका नाम लेकर आपने उनका नाम लेकर हमें कॉन्सियस करने की कोशिश की। कौन एनजीओ वाले आपके बगलगीर बैठते हैं? कौन–कौन बैठकर इन स्कूलों के साथ आप लोगों के कारण आपके अंदर ना केवल दलाली करते थे। कौन एनजीओ वाले हैं सबको नाम पता है, वो सबको नाम पता है सबको नाम पता है उसका भी नाम लूं उस एनजीओ का भी नाम लूं। अरे, अरे किसी स्कूल का मालिक होगा किसी स्कूल का मालिक होगा।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट देखिए इस समय का।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): एक मिनट अरे कोई भी जा रहा था। आपका काम था, उसे रोकना आपका काम था, रोकते, इतनी बेबस सरकार थी। केजरीवाल तो यहां खड़ा होकर कहता था, मैं दिल्ली का मालिक हूँ। एक individual person को नहीं रोक पाया ये।

श्रीमती आतिशी (माननीय नेता प्रतिपक्ष): ....अभी कानून के पीछे कौन है।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): हमारे कानून के पीछे हमारे।

.....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, आतिशी जी।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी ने कई बार रूलिंग दी है। जब आपके पास कोई तर्क नहीं होता ना, तो कमज़ोर तर्कों को इस प्रकार से कवर करने की कोशिश की जाती है, चेयर ने रूलिंग दी है.

माननीय अध्यक्षः चलिए, अब. सम अप करिये।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): आपकी बारी आएगी, तो खुल जाएगा।

माननीय अध्यक्षः ठीक है, अभी कौन–कौन।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): तो अध्यक्ष जी, मैंने ये क्रोनोलॉजी इसलिए बताई है कि लगातार।

श्रीमती आतिशी (माननीय नेता प्रतिपक्ष): अध्यक्ष जी इतना कुछ बता दिया आशीष जी भरत अरोड़ा जी का नाम लेने से क्यों डर रहे हैं।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): क्यों, मैं क्यों एक individual का नाम लूं।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, एक मिनट, देखिए आप, आप अपनी बारी में बात कीजिएगा ना जो कहना हो।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी एक non government individual का नाम लेना यहां अगर संसदीय परंपराओं में है, तो मैं इनके बगलगीर रहने वाले दस लोगों के नाम यहां लूंगा जो अंडर द टेबल इनके लिए करते हैं। बताइये संसदीय परंपरा है, एलओपी अपनी सीमा, एलओपी अपनी, मैं एलओपी का दर्द समझ सकता हूं। एक पुराने ज़माने में एड देखते थे ना, तेरी कमीज, मेरी कमीज से सफ़ेद कैसे। ये वो वाली दर्द है कि हम तो दस साल में कर नहीं पाए तुम चार महीने में रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में कैसे कर रहे हो? तेरी कमीज, मेरी कमीज से आपने बोल तो दिया आपको अरे आपने नाम ले दिया। आप इतनी कमज़ोर मुख्यमंत्री थीं, आप इतनी कमज़ोर मुख्यमंत्री थीं, बंद करा देते उसे।

....व्यवधान........

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी, अभी जो बात आने वाली है अगली डेट जो आने वाली है उस डेट को रोकने के लिए, दिल्ली की जनता को इनका सच ना पता चले इसलिए, इसीलिए जैसा मैंने कहा ना।

श्रीमती आतिशी (माननीय नेता प्रतिपक्ष): दिल्ली के इतिहास में कभी नहीं हुआ कि कोई कानून आया दिल्ली विधान सभा में और उसमें पब्लिक कॉन्सलटेशन नहीं हुई।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): कौन–से कानून में लिखा है हमें करनी है। बताओ कौन–से कानून में लिखा है।

माननीय अध्यक्षः मैडम बैठिए, बहुत देर हो गई। अब आप अपनी बात पूरी करिये। 5 मिनट में आप अपनी बात पूरी कीजिये।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी, मैं आपका संरक्षण चाहता हूँ. इस प्रकार से ये नेता प्रतिपक्ष, इस प्रकार से अपने दर्द के कारण इस प्रकार करेंगी, तो हम कैसे करेंगे

.....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः नहीं, नहीं, आप अपनी बात कहिए, उनको अनिल जी, माननीय सदस्य, मैं चेतावनी देता हूँ।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी, इसके बाद 3.4.2019 को डीओई ने अपील फाइल की। उस अपील के बाद 27.03.2024 को डीओई फिर फिर 17(3) के अंतर्गत 1973 के एक्ट में एक कमज़ोर ऑर्डर लेकर आया। 29.04 को दिल्ली हाईकोर्ट के बेंच ने डीओई के सर्कुलर 27.03.2024 डब्लुपीसी/5743/2024 पर स्टे दे दिया जो आज तक चालू है जिसमें मॉर्डन स्कूल की जीती हुई ताकत को भी इन्होंने गंवा दिया। मॉर्डन स्कूल बर्सेस गवर्मेंट ऑफ इंडिया की ताकत को भी इन्होंने हरवा दिया। इसलिए आदरणीय अध्यक्ष जी बार–बार, बार–बार दिल्ली के पेरेंट्स कोर्ट जाते रहे। इतने सारे मामलों में, इतने सारे मामलों में कानून बदलवाने के लिए कोई इन दस साल में सरकार कोर्ट नहीं गई। इतने सारे मामलों में आगे बढ़कर सरकार नहीं गई। पेरेंट्स गए, स्कूल्स गए, इन्होंने

उनके बीच में जाकर उनके ऑर्डर पर सर्कुलर लेते रहे क्योंकि अंडर हैंड डीलिंग थी इनकी। अभी कल, अभी आने वाले मौके पर वो भी खोलूंगा। कैसे अंडर हैंड डीलिंग में एक–एक काग़ज़ चला देते थे और बाद में लोगों से एक्सट्रॉर्सन की जाती थी। माता–पिता कोर्ट जाते रहे। आज भी अनेकों स्कूलों के केस में जस्टिस अनिल सिंह कमेटी के 1200 केस रिकॉर्ड हुए। 212 केस आज भी कोर्ट में चल रहे हैं। एक केस को उन 212 स्कूलों को रोकने के लिए कोई कार्यवाही नहीं कर पाए ये लोग और बड़ी–बड़ी बातें करते हैं consultation, मैं इस बात को ज़िम्मेदारी से कहता हूं, जिनसे consultation करनी थी आदरणीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हर stake holder से बात हुई है और कोई कानून, कोई एक्ट हमें ये नहीं कहता कि हमें किससे पूछना है और किससे नहीं। हम law making के लिए जो दिल्ली की जनता के हित की बात है वो करेंगे। इसलिए आदरणीय अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः आप introduce करिए।

....व्यवधान........

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): आप हो दिल्ली की जनता। ये सब दिल्ली की जनता के वोटों से चुन के आए हुए लोग हैं। ये कहकर नहीं चुनके आए कि दिल्ली का मालिक मैं हूं। शिक्षा क्रांति को, शिक्षा क्रांति के जनक कहने वालों को दिल्ली की जनता ने धूल चटाके भेजा है यहां, धूल चटाके भेजा है।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी, मेरा आपसे अनुरोध है कि आप अपने वक्तव्य को कन्क्लूड करिये सूद जी।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): कांन खोल के सुनो तुमने प्राइवेट स्कूल बनाए हैं। प्राइवेट स्कूल बनाए हैं। 27 साल में केवल 300 सरकारी स्कूल बने हैं।

माननीय अध्यक्षः आप सब नेगी जी आप बैठिए, बैठिए आप. माननीय अजय जी, बिल्कुल मैं चेतावनी दे रहा हूं, आप अपना वक्तव्य पूरा करिए।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी, मैं इसमें हमारे हमारे, हमारे इस बिल में हमने दिल्ली की जनता के लिए ये संविधान principle of democracy पे based Bill बनाया है, top to bottom approach के साथ बनाया है, government of people, by the people, for the people के तर्ज पर बनाया है। और एक चीज़ मैं स्पष्ट करना चाहता हूं। इस बिल में दिल्ली एजुकेशन एक्ट 1973 के किसी प्रावधान का उल्लंघन नहीं किया गया है। ये बिल दिल्ली के सभी private, unaided recognized schools पर लागू होगा, चाहे वो किसी भी बोर्ड, किसी भी land status या minority status के हों। हर स्कूल को नेक्स्ट तीन एकेडमिक ईयर्स के लिए proposed fees structure जमा करना होगा। फीस सिर्फ हर तीन साल में एक बार रिवाईज की जा सकती है, जिससे पेरेंट्स को financial stability मिलेगी। they will be well informed हम इसमें तीन कमेटी बनाएंगे अध्यक्ष जी। committee for regulation and appeal पहली कमेटी बनेगी school level fee regulation Committee principal या head of the schools होंगे, तीन टीचर होंगे, पांच पेरेंट्स होंगे, जिसमें एससी/एसटी/ओबीसी होंगे, डायरेक्ट ऑफ एजुकेशन होंगे।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्ष: अरे, आप आप जारी रखिए।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): District fee Appeallete Committee

माननीय अध्यक्ष: आप अपनी बात जारी रखिए।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री): District fee Appeallete Committee होगी, School level Regulation Committee कोई फ़ैसला नहीं लेती है या किसी पेरेंट को शिकायत करती है तो डिस्ट्रिक कमेटी में अपील की जा सकेगी। रिवीजन कमेटी होगी ये फाइनल अथोरिटी होगी। अगर District fee Appeallete Committee

में कोई issue resolve नहीं होता तो यहां मामला आएगा। fee approval के criteria में infrastructure staff, salary, yearly increment, financial needs बिना किसी profiteering के आधार पर और ऐसे अठारह मानकों के आधार पर होगा। एक मज़बूत regulatory mechanism बनाना, जो fee hike को चैक करे। हर स्कूल अपना financial record और proposed fee structure transparently जमा करना होगा। देखेंगे वो जिनके बच्चे पढ़ते हैं, जिनकी जेब से यह स्कूल पैसा लेते हैं, जिनसे यह लोग extortion लेकर दस साल से आज तक स्कूलों को फीस बढ़ाने के लिए दे रहे थे। पेरेंट्स के interest को protect करना। उन्हें अपील करने का पूरा हक रहेगा। ट्रांसपेरेंसी और अकाउंटेबिलिटी को बढ़ावा देना है और सभी फ़ैसले स्कूल की बेवसाइट और नोटिस बोर्ड पर पब्लिकली डालने होंगे। malpractices पर रोक लगेगी। strict penalty तय की गई है। टाइमलाइन और grievance redressal process होगा। school level fee regulation committee का गठन 15 जुलाई तक। मैनेजमेंट का प्रपोजल 31 जुलाई तक देना होगा। कमेटी का फ़ैसला 15 सितंबर तक। अगर फ़ैसला नहीं आता तो District fee Appeallete Committee को जाएगा। यहां भी फ़ैसला नहीं होगा, तो issue Revision Committee को जाएगा। अपील्स 45 दिन के भीतर डिसाइड करनी होगी। पेंडिंग अपील के दौरान, स्कूल्स सिर्फ पिछले साल की फीस ले सकता है कोई दबाव या हैरासमेंट नहीं कर सकेगा। कोई coersive method अपनायेगा illegal fee hike par एक लाख से दस लाख रुपए तक का जुर्माना होगा। repeated violation पर fine double होगा। स्टुडेंट का नाम काटने या publically humiliate करने जैसी coercive action पर 50,000 per student जुर्माना होगा।

....व्यवधान........

माननीय शिक्षा मंत्रीः बार–बार, बार–बार नियम तोड़ने वाले स्कूल पर recognition cancel की जा सकती है या गर्वमेंट टेकओवर कर सकती है। ये बिल ना केवल एक transparent और accountable system बनाता है बल्कि बच्चों, अभिभावकों को सभी stakeholders के हितों की रक्षा करेगा। आदरणीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में माननीय प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में दिल्ली की स्कूली व्यवस्था को दिल्ली के एक वेलफेयर स्टेट होने के कर्तव्य को निर्वाह करने के लिये माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में आदरणीय अध्यक्ष जी मैं दिल्ली विद्यालय शिक्षा शुल्क निर्धारण एवं विनिमय में पारदर्शिता विधेयक–2025 (वर्ष 2025 के विधेयक संख्या–3)[10] को इन्ट्रोड्यूज़ करने की आपसे अनुमति चाहता हूं, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने हैः–

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें
जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें
(सदस्यों के हाँ कहने पर)
हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता
प्रस्ताव पारित हुआ।

अब माननीय शिक्षा मंत्री विधेयक को सदन में इन्ट्रोड्यूज करेंगे।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, माइक खोलो।

सुश्री आतिशी(माननीया नेता प्रतिपक्ष): रूल–1, एक मिनट शांति शांति।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट ये रूल बुक उसके अंदर ही है आपके।

[10] दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–23414 पर उपलब्ध।

सुश्री आतिशीः हां, नहीं वो।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं उसमें देखिये ना आप तो कम्प्यूटर की मास्टर हैं, आप खोलिये उसको।

....व्यवधान........

सुश्री आतिशीः रूल–141 में।

....व्यवधान........

माननीय अध्यक्षः अब आगे से जिसको रूल बुक की बात करनी है वो आई पैड से ही खोलेगा, आज लास्ट टाइम मैं आपको मौका दे रहा हूं।

सुश्री आतिशीः आई पैड, आई पैड से ही करेंगे। अध्यक्ष महोदय रूल बुक।

माननीय अध्यक्षः रूकिये मैं भी रूल बुक खोल लूं।

सुश्री आतिशीः रूल–141 में ही है स्पष्ट तौर पर।

माननीय अध्यक्षः एक सैकेन्ड–एक सैकेन्ड।

सुश्री आतिशीः जी, रूल–141 Notice of an amendment.

श्री अरविन्दर सिंह लवलीः This is not amendment

सुश्री आतिशीः नहीं मैं उसके बारे में कुछ कह रही हूं ना मुझे दिस इज नॉट, अरे आप मेरी बात तो, अरे मुझे अमेंडमेंट के लिये मूव करना है।

माननीय अध्यक्षः जी हां बताईये, 141।

सुश्री आतिशीः अध्यक्ष महोदय, जो notice for amendment है उसमें मिनिमम समय दो दिन का है इन्होंने आज शिक्षा मंत्री जी ने बिल पेश किया कल इस पर चर्चा।

माननीय अध्यक्षः पेश कहां किया अभी तो पेश करेंगे।

सुश्री आतिशीः एक सैकेंड इसमें इर्म्पोटेंट चीज़ है ना क्योंकि चर्चा इसकी कल के लिये चर्चा और passing scheduled है हमें इसमें एमेंडमेंट मूव करना है कि इस बिल को Select Committee में भेजा जाये लेकिन मिनिमम दो दिन का समय उसके लिये चाहिये उस अमेंडमेंट को मूव करने के लिये।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट।

सुश्री आतिशीः तो इसलिये।

माननीय अध्यक्षः ये 141, बताईये आप।

श्री अभय वर्मा(चीफ व्हीप): अध्यक्ष जी, बिल देखिये मैडम, मैडम।

सुश्री आतिशीः तो इसलिये हमारा, हमारा आपसे ये आग्रह है।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट एक मिनट अभय जी, अभय जी एक मिनट।

सुश्री आतिशीः वो सिर्फ इनके टेबल करने के बाद हो सकता है।

माननीय अध्यक्षः आप एक मिनट एक मिनट, आप पहले अपनी बात कहिये फिर आप कहियेगा।

सुश्री आतिशीः तो हमारी, तो 141 का जो नोटिस है वो बिल टेबल करने के बाद हो सकता है वो हम कोशिश कर रहे हैं उसको बार–बार पिछले दो दिन से अपलोड करने की, वो इसलिये अपलोड नहीं हो रहा था क्योंकि बिल अभी टेबल नहीं हुआ था ई–विधानसभा में।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं अपलोडिड था वो।

सुश्री आतिशीः नहीं टेबल नहीं हुआ था इसलिये वो अमेंडमेंट का नोटिस एक्सेप्ट नहीं कर रहा है ई–विधानसभा।

माननीय अध्यक्षः मैं बताता हूं आपको।

सुश्री आतिशीः तो इसलिये हमारी ये मांग है कि इस बिल को consideration की बजाय Select Committee में भेजा जाये क्योंकि इसकी कोई public consultation नहीं हुआ।

माननीय अध्यक्षः अभी तो इन्ट्रोड्यूज़ ही नहीं हुआ अरे objection over rule. बैठिये आप।

सुश्री आतिशीः और fee hike को 2024–25 के लैवल पर freeze किया जाये। इस साल जो बढ़ी हुई फीस है वो कोई भी स्कूल चार्ज न कर सके।

माननीय अध्यक्षः चलिए बैठिये, बैठिये आप।

सुश्री आतिशीः तो हम यह चाहते हैं आप मोशन लेकर आईये।

माननीय अध्यक्षः बड़ी हैरानी की बात है कि अभी बिल इंट्रोड्यूज ही नहीं हुआ, अभी तो परमीशन दी है उससे पहले ही आपने अपना आब्जेक्शन शुरु कर दिये। अब आप बैठ जाईये।

सुश्री आतिशीः अध्यक्ष महोदय, हम यह चाहते हैं कि इस बिल को सिलेक्ट कमेटी में भेजा जाए।

माननीय अध्यक्षः अभी इंट्रोड्यूज तो होने दीजिए तभी तो अगली बात आएगी। अरे बिल तो इंट्रोड्यूज होने दीजिए न। चलिए, मंत्री जी। मंत्री जी आप बिल इंट्रोड्यूज करिये। इनके आब्जेक्शन में इसलिए कोई दम नहीं है कि अभी बिल इंट्रोड्यूज ही नहीं हुआ। अभी तो परमीशन दी है मैंने। बिल इंट्रोड्यूज होगा तो कोई बात आती है। आईये जी, शुरु करिये।

श्री आशीष सूद (शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष जी, जैसा मैंने आपसे पहले कहा था इस बिल को रोकने की तमाम कोशिशें क्योंकि हम नहीं कर पाए, मेरी कमीज तेरी कमीज से सफेद कैसे की तर्ज पर इसको रोकने का काम दिल्ली के अभिभावकों को।

माननीय अध्यक्षः अब एक मिनट मंत्री जी, माननीय मंत्री जी एक मिनट आप बैठिये। अब माननीय शिक्षा मंत्री विधेयक को सदन में इंट्रोड्यूज करेंगें।

श्री आशीष सूद (शिक्षा मंत्री): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं सदन की अनुमति से दिल्ली विद्यालय शिक्षा शुल्क निर्धारण एवं विनियमन में पारदर्शिता विधेयक 2025, (वर्ष 2025 का विधेयक संख्या 03) को सदन में इंट्रोड्यूज करता हूं।

माननीय अध्यक्षः चलिये, अब मैं सदन की अनुमति से सदन का समय आधा घंटा आगे बढ़ाया जाता है। सदन की अनुमति से ये प्रस्ताव सदन के समक्ष है सदन का समय आधा घंटा आगे बढ़ाने का प्रस्ताव मंजूर है, ठीक है। अब 280 पर बातचीत होगी।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः अब 280 पर आईये।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः ये जो अल्पकालिक चर्चा है ये पोस्टपोंन कर रहा हूं।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः श्री सूर्य प्रकाश खत्री 280 पर बोलेंगे।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः आदरणीय अध्यक्ष जी।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः बैठिये, बैठिये, बैठिये, करिये 280।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अध्यक्ष जी, हाउस आर्डर में करो नही ंतो इनको मार्शल बुलाओ बाहर भेजो इनको।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः देखिये अभी इंट्रोड्यूज हुआ है आप जब चर्चा होगी जब बात करना। इंट्रोडक्शन पर ही थोड़े न कुछ होता है। जब इंट्रोड्यूज होता है तो एक दिन का समय दिया जाता है न। आप जल्दबाजी कर रही हैं।

सुश्री आतिशीः कोई consultation इस बिल पर नहीं हुआ है आप आज लेकर आ रहे हैं कल पास कर देंगे ...।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः अभी तो कंसीड्रेशन के लिए आएगा न कल। अभी इंट्रोड्यूज हुआ है कंसीड्रेशन कल होगा जब बात करना आप।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आप कंसीड्रेशन जब आएगा जब बात करना।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः ये बिल्कुल नावाजिब बात है जब चर्चा के लिए आएगा तब आप बात करना, अभी तो इंट्रोड्यूज हुआ है।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः सूर्य प्रकाश खत्री जी।

.... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आप नहीं चाहते जनता के मुद्दे उठें। आप नहीं चाहते, आप नहीं चाहते।

श्री अभय वर्माः शिक्षा मंत्री जी ने इन लोगों की पोल खोल दी है इसलिए ये वॉकआउट करने का बहाना ढूंढ़ रहे हैं अध्यक्ष जी। ये सिर्फ वॉकआउट करने का बहाना ढूंढ़ रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः अभी बिल इंट्रोड्यूज हुआ है।

श्री अभय वर्माः सदन से भागने का बहाना ढूंढ़ रहे हैं और कुछ नहीं कर रहे हैं।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः आतिशी जी अगर आपने जाना है चले जाओ बाहर।

माननीय अध्यक्षः मैं आपको मार्शल आउट नहीं करूंगा। आप गलतफहमी में हो। बैठिये आप। बैठना पड़ेगा आपको।

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अरे दो–दो आदमी भेजूं आपको छोड़ने के लिए बाहर।

माननीय अध्यक्षः बैठिये। बैठिये। चलिए।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आप शुरू करिये। आप ये चाहते हैं कि आपको मैं मार्शल आउट करूं। ठीक है ना। क्योंकि आप जनहित के मुद्दों पर बात नहीं करने देना चाहते विधायकों को।

..... व्यवधान .....

(विपक्ष के सदस्यों द्वारा नारेबाजी की गई।)

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अरे थक जाओगे बैठ जाओ।

माननीय अध्यक्षः क्योंकि यहां पर मैं बिना 280 कराये, सदन की कार्यवाही को स्थगित नहीं करूंगा, क्योंकि 280 में सभी सदस्य अलग–अलग विषय जनहित के उठाने वाले हैं और वो उनका पहला हक है इस सदन में। समझ लो आप। आप 280 को होने दीजिए। बैठिये। अभी बिल consideration के लिए कल आयेगा।

(विपक्ष के सदस्य नारेबाजी करते हुए)

माननीय अध्यक्षः आप मुझे मजबूर मत करिये। बैठ जाईये, बैठ जाईये।

(विपक्ष के सदस्य नारेबाजी करते हुए)

माननीय अध्यक्षः बैठिये, बैठिये। बैठिये।

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हिप) : अरे बिना चर्चा के कैसे भेजोगे? अरे नेता, प्रतिपक्ष बिना चर्चा के कैसे भेजोगे? चर्चा तो होने दो।

माननीय अध्यक्षः देखिये 280 important factor है। अब ये देखिये डयूसिब पर बात करना चाहते हैं। आप उनको करने नहीं दे रहे। ये 280 में ड्यूसिब पर बात करना चाहते हैं सदस्य।

(विपक्ष के सदस्य नारेबाजी करते हुए)

माननीय अध्यक्ष : चलिए शुरु करिये।

.......व्यवधान...........

(प्रतिपक्ष के सदस्य विधेयक को सेलेक्ट कमेटी में भेजने के संबंध में नारे लगाने लगे)

( विपक्ष के सदस्यों द्वारा सदन से वॉक आउट किया गया। )

माननीय अध्यक्ष : चलिए। बहुत ही दुख की बात है। बहुत दुख की बात है कि 280 जैसे महत्वूपर्ण जिसमें विशेष उल्लेख होता है और सूर्य प्रकाश जी के बाद आले मोहम्मद इकबाल और जरनैल सिंह, इनको विषय रखने थे, इनका जनहित के मुद्दों से कोई लेना देना नहीं है। सभी के मैं ले रहा हूं नाम। हां–हां।

श्री अभय वर्मा : इसमें एक प्रिपोजिशन है कि जब बिल शिक्षा मंत्री जी ने हाउस में रखा तो चर्चा के बिना कैसे सलैक्ट कमेटी में जाएगा।

माननीय अध्यक्ष : वो बैठिये आप, हो गया। हां जी सतीश जी।

श्री सतीश उपाध्याय : अध्यक्ष जी मैं कहना चाहता हूं कि जिस तरीके से विपक्ष ने 280 जो बहुत महत्वपूर्ण विषय है, लोगों का समय खराब किया है और उसमें उनके मेम्बर्स का भी नाम था, अब उनको परमिट न किया जाए 280 में, केवल यहीं के लोगों को परमिट किया जाए, समय उन्होंने खराब किया है।

माननीय अध्यक्ष : चलिए श्री सूर्य प्रकाश खत्री जी।

## विशेष उल्लेख(नियम–280)

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : आदरणीय अध्यक्ष जी। मैं इस सदन में हमारे शहरी विकास मंत्री आशीष सूद जी के संज्ञान में कुछ मंत्री जी के संज्ञान में कुछ चीजें लाना चाहता हूं कि दिल्ली के अंदर एक...

माननीय अध्यक्ष : शुरु करिये सूर्य जी।

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : दिल्ली में, दिल्ली शहर के अंदर एक काफी बड़ा वर्ग हमारा जो कि गरीब वर्ग है वो झुग्गी बस्तियों में रहता है और वहां पर ड्यूसिब

.......व्यवधान...........

श्री सूर्य प्रकाश खत्री : ड्यूसिब जो है, उस बस्ती के अंदर, काफी महत्वपूर्ण रोल रहता है ड्यूसिब का। मैं मंत्री महोदय से ये बताना चाहता हूं कि पिछले 25–30 सालों में जितनी भी झुग्गी बस्तियां हैं इन बस्तियों के अंदर इनकी पिछली सरकारों ने कोई देखभाल नहीं करी और आज वहां पर उनके बीच में, उनके जितने भी चाहे वो शौचालय हैं, चाहे उनके पार्क्स हैं, चाहे वहां पर पेड़ों की समस्या हैं, वो इतनी गंभीर हो गयी है, कि दरख्त भी बड़े–बड़े रूप ले चुके हैं और वहां की सिचुएशन ऐसी है कि कई जगह पर संकरी गलियां हैं, पेड़ गिर सकते हैं और गरीब लोग जो बस्तियों में रहते हैं उनकी जान और माल को प्रॉपर्टी को दोनों को ही खतरा है। मैंने इस बात का संज्ञान लेते हुए जब हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट से बात करी ड्यूसिब के तो मेरे संज्ञान में एक बात आयी जोकि मैं मंत्री महोदय, शहरी विकास मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि बड़े आश्चर्य की बात है पिछले 11 साल में इस सरकार ने ड्यूसिब के अंदर पूरी दिल्ली का कोई अगर एक इंचार्ज है हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट का पूरी दिल्ली में एक एक्सईएन है और वो एक्सईएन महोदय राजौरी गार्डन में बैठते हैं और दिल्ली में मैं समझता हूं कि एक करोड़ की आबादी ऐसी है जो गरीब आबादी है, जो बस्तियों में रहती है और उसके पास कोई भी साधन न तो पेड़ काटने के हैं, न उनके पास उपकरण हैं, न उनके पास मैनपावर है। मंत्री जी इसपे ध्यान दें और उसके साथ साथ जितने भी दिल्ली गवर्नमेंट के स्कूल्स हैं उन स्कूलों में भी उनकी जर्जर हालत हो चुकी है और उनके अंदर भी स्कूलों में चार चार मंजिला पेड़ खड़े हो गये हैं और उन पेड़ों के लिये जब हमने छंटाई के लिये पीडब्ल्यूडी डिपार्टमेंट का हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट से बात की तो उन्होंने ये कहा कि जब तक हमारे पास आदेश उपर से नहीं आयेंगे हम इसपे कोई भी कार्यवाही नहीं कर सकते।

तो मेरी पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर और मेरी शहरी विकास मंत्रालय दोनों से ही प्रार्थना है कि दोनों डिपार्टमेंटों को आप जो है तुरंत आदेश दें ताकि छोटे बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं या गरीब जनता जो डयूसिब के तहत गरीब बस्तियों में रहती है उन लोगों को सुविधा मिल सके, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री राज करन खत्री जी। ये इसपे 280 में जिनका निकला है उन्हीं को मिलेगा ड्रा, आप ड्रा में कल डालिये आपको मिलेगा।

श्री राज करन खत्रीः आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि नरेला विधान सभा क्षेत्र के डिपो व साथ लगते बवाना डिपो, जीटीके डिपो, पुरानी बसों के हट जाने से बसों का भारी अभाव है जिसके कारण आम जनता जिनमें बुजुर्गों, महिलाओं, कर्मचारी, छात्रों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बसों के लिये घंटों इंतजार करना पड़ता है जिसके कारण असुविधा और असंतोष पैदा होता है। क्षेत्र के गांवों में बसों की संख्या न के बराबर है और हमारे देहात में और नरेला विधान सभा क्षेत्र में इन तीन डिपो की जो बसें आती थी वो बसें बंद होने के कारण बहुत ज्यादा दिक्कत है। अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि नये बसों की आपूर्ति शीघ्र की जाये ताकि यातायात की समस्या संबंधी परेशानियों को दूर किया जा सके। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री संदीप सहरावत जी।

श्री संदीप सेहरावतः धन्यवाद आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान हमारी विधान सभा में मीटर न लगने पर देना चाहता हूं। मेरी विधान सभा में लगभग 14 कालोनियां हैं जिसमें साईं बाबा एक्सटेंशन, घासीपुरा, नंगली, सकरावती, नंगली सकरावती इंडस्ट्रियल एरिया, इंद्रप्रस्थ एनक्लेव, खेरा, पपरावत एक्सटेंशन Paprawat Extension, गौतम कालोनी, जैमिनी पार्क, श्याम विहार, श्री साईं पार्क और गंगा विहार इन कालोनियों में मीटर नहीं लग रहे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब मीटर नहीं लगता तो उनमें डेफिशियेंसी निकाली जाती है कि ये 1731 कॉलोनी में है नहीं। दूसरी पी एम उदय के नाम पर उन पर मीटर नहीं लगते।

और एक तीसरा विषय आता है जी लैंड पूलिंग और लैंड पूलिंग का विषय क्या है अध्यक्ष जी, जैसे तीन प्लॉट हैं एक्स, वाई जैड, एक्स में ऑलरेडी मीटर लगा हुआ है, जैड में लगा हुआ है, वाई में मीटर लगता नहीं है, बीच में वो लैंड पूलिंग में आ जाता है। तो इसी तरह जो नंगली इंडस्ट्रियल एरिया है वहां पर भी अभी दो साल पहले एक नई कॉलोनी बसी उसमें ट्रांसफार्मर भी लग गये, मीटर भी लग गये और बिजली भी दे दी गई और उसी के साथ में जो पुराने गांव के लोग हैं जिनके पास पैसे नहीं थे उसको बनाने के, आज उन्होंने अपने मकान बना लिये तो वहां पर मीटर नहीं लग रहे हैं क्योंकि वो लैंड पूलिंग का विषय उसमें आ जाता है।

तो इसी तरह तीसरा एक और विषय है जी एमसीडी बुकिंग का। बहुत सारे लोग गरीब किसान लोग हैं। मेरी विधान सभा में छावला की साइड में लगभग 26 गांव आते हैं, तो 26 गांव में बहुत सारी बिल्डिंग एमसीडी बुक में गांव के मकान भी बुक हो जाते हैं, वो एनओसी भी लेकर आते हैं और उसके बाद भी उनके मीटर नहीं लग रहे।

और एक विषय, बहुत सारे गांव देहात के लोग होते हैं जी तो वहां पर उनका विषय ये आ जाता है कि किसी में पॉलिसी है, पॉलिसी में उसमें किचन चाहिए, बाथरूम चाहिए, पक्का मकान चाहिए तो इन सारी चीजों की रिसर्च की जाए और मीटर के लिए जो उनकी मांग है वो पूरा किया जाए। धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य, श्री अजय कुमार महावर जी।

श्री अजय महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने 280 में बोलने का मौका प्रदान किया। मैं आदरणीय लोक निर्माण विभाग मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूं 280 के माध्यम से कि घोंडा विधान सभा क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वूपर्ण सड़क है गामड़ी रोड जो इस क्षेत्र की जीवन–रेखा है और उसकी स्थिति बहुत खराब है। स्थानीय आरडब्लूऐज, मार्केट एसोसिएशंस और व्यापारी, सभी लोग लंबे समय से इस सड़क की जर्जर स्थिति और प्रतिदिन लगने वाले जाम से परेशान होकर, इसको कुछ एन्क्रोचमेंट हटाकर के और वाइडनिंग करने की बात कही है। सड़क पर यातायात का दबाव लंबे समय से ये सड़क

झेल रही है। 1967 और 2021 के मास्टर प्लान के हिसाब से, जोनल प्लान के हिसाब से और ले–आउट प्लान डीडीए 1980, ये तीनों ही प्लान के अनुसार इसकी मानक चौड़ाई 100 फुट रोड है निर्धारित, लेकिन अभी वर्तमान में इसकी चौड़ाई 30 से 40 फीट रह गई है। पिछले पांच वर्षों में अनेक बार मैंने सदन में ये मुद्दा उठाया है। मुझसे पहले के विधायकों में आदरणीय स्वर्गीय साहिब सिंह चौहान जी से अब तक इस मुद्दे को हम लगातार उठा रहे हैं। 25 अक्टूबर, 2013 में माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय ने भी इस संदर्भ में जनता और RWAs के माध्यम से दायर एक पेटिशन दाखिल करने पर उस संदर्भ में स्थानीय जनता और आरडब्लूए के पक्ष में निर्णय सुनाया था और उसको तुरंत 6 महीने में चौड़ा करने का आदेश दिया था। इसके अतिरिक्त वर्ष 2018 में दिल्ली के चीफ सेक्रेटरी ने दा रॉयल इन्टरप्राइजेज नाम की एक कंपनी को हायर किया, उसको इसका सर्वेक्षण का काम दिया और वह रिपोर्ट भी 2019 में पेश कर दी गई है लेकिन दुर्भाग्यवश उस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। पिछले दिनों माननीय मुख्यमंत्री जी का भी उस सड़क पर जाना हुआ और वहां हजारों लोगों की जनसमूह की भावनाओं को उन्होंने देखा और पूछा और हाथ उठाकर लोगों ने बताया, सभी आरडब्ल्यूएज, मार्केट एसोसिएशन ने कि हां इस सड़क को चौड़ाकरण करने के लिए हम सब लोग तैयार हैं। इस बड़ी जन भावना को देखते हुए हमारे स्थानीय सांसद आदरणीय मनोज तिवारी जी, हमारे सभी निगम पार्षद, सभी लोग उसके चौड़ीकरण के पक्ष में हैं। मैं माननीय लोक विभाग मंत्री जी से आग्रह करता हूं कि इस पर एक विशेष संज्ञान लेकर के, चूंकि एक बहुत ज्यादा लम्बा समय इस पर हो गया है, लम्बित है, इस पर चौड़ीकरण के लिए मार्ग प्रशस्थ करें। आपके मार्गदर्शन में अगर ये काम पूरा होता है तो घोंड़ा विधानसभा की जनता और मैं व्यक्तिगत रूप से भी आपका जीवनभर आभारी रहूंगा, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री हरीश खुराना जी।

श्री हरीश खुरानाः आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यान अभी हाल ही में मेरी विधान सभा मोती नगर में एक गम्भीर जो एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना,

अग्निकांड हुआ जिसमें एक banquet hall में आग लगी और एक व्यक्ति की वहां पर मृत्यू हुई, उस अग्निकांड की वजह से, उसपर ध्यान दिलवाना चाहता हूं। अध्यक्ष जी ये सिर्फ एक व्यक्ति की जान लेने वाली घटना नहीं थी बल्कि दिल्ली में बढ़ते हुए जो अग्नि संवेदनशील ढ़ांचे है और जो पिछली सरकारों के द्वारा जो घोर लापरवाही की गई उसको भी उजागर करते हैं अध्यक्ष जी। अभी एक मीडिया रिपोर्ट आई है अध्यक्ष जी जिसमें ये कहा गया कि दिल्ली के अंदर 125 बैंकेटहॉल बिना फायर एनओसी के चल रहे है। मेरी विधानसभा के अंदर भी जो मेरी सूचना है 37 बैंकेटहॉलों में से 12 बैंकेटहॉल बिना फायर एनओसी के चल रहे हैं। हालत ये है अध्यक्ष जी की ये स्थिति पिछले 11 साल में कोई ठोस कार्रवाई ना होने की वजह से हुई है। दिल्ली फायर सर्विसिसज कहता है कि एक सीढ़ी की चौड़ाई जो है दो मीटर होनी चाहिए, आने–जाने के लिए अलग रास्ता होना चाहिए और अंडरग्राउंड वॉटर टैंक होने चाहिए। लेकिन सच्चाई ये है कि कोई भी banquet hall, 70 प्रसैंट banquet hall.

माननीय अध्यक्षः आपस में बात ना करें कृप्या।

श्री हरीश खुरानाः 70 परसेंट banquet hall किसी भी मानक पर खरे नहीं उतरते हैं। तो मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से एक निवेदन करना चाहूंगा कि जो ये मोती नगर में जो ये घटना हुई है, एक तो उसकी न्यायिक जांच हो, इसके अलावा जो सभी बैंकेटहॉल हैं उसकी जो फायर एनओसीज हैं उसकी दुबारा जांच हो, एनओसी को सार्वजनिक किया जाए और जिनके पास एनओसी नहीं है उनके ऊपर सख्त कार्रवाई की जाए और जो एमसीडी और जो दिल्ली फायर सर्विसिसज का जो घालमेल है जो उसके अधिकारी हैं उसपर कार्रवाई हो ताकि ऐसी घटनाएं दुबारा ना हो, क्योंकि अभी एक साल पहले अभी दो घटनाएं 2023 के अंदर भी पाई गई जिसमें मुखर्जी नगर में भी ऐसी दो घटनाएं हुई थी। ऐसी घटनाएं ना हो इसके लिए सख्त एक्शन हो, मेरा मंत्री जी से निवेदन है।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री तरविंदर सिंह मारवाह जी।

श्री तरविंदर सिंह मारवाहः आज परमिशन नहीं ली आपने आधा घंटा फालतू चल रहा है, हाउस से परमिशन नहीं हुई।

माननीय अध्यक्षः ले ली थी, साढ़े 6 खत्म करना है। 6.30 तक की परमिशन ली हुई है हाउस की, 8 मिनट में खत्म करना है।

श्री तरविंदर सिंह मारवाहः आपको तो 7 खून माफ है, कोई दिक्कत नहीं, क्योंकि अध्यक्ष तो अध्यक्ष होता है।

माननीय अध्यक्षः मारवाह जी रिफ्रैश कर देते हैं सबको।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः माननीय अध्यक्ष जी मेरा निवेदन ये है कि दिल्ली सरकार के अंतर्गत संचालित सभी सरकारी विद्यालय और जो नगर निगम विद्यालय हैं तथा निजी विद्यालयों में प्रतिदिन प्रार्थना सभा के समय सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ करवाया जाए। इससे विद्यार्थियों में आस्था, अनुशासन और ऊर्जा का विकास होगा। साथ ही उनका मानसिक बल भी सुदृढ़ होगा। यह पहल ना केवल संस्कृतिक मूल्यों को समझने में सहायता देगी, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। अतः मेरा दिल्ली सरकार से निवेदन है कृप्या करके एजुकेशन मंत्री जी का जरा इसमें संज्ञान होना चाहिए जिससे कि लोगों में एक हनुमान चालिसा जी का पाठ जाए। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्रीमती शिखा राय जी। ये अंतिम वक्ता है और घड़ी की सूई जो है दो मिनट दिखा रहा है अगर दो मिनट में आप खत्म करेंगे तो सदन का समय।

श्रीमती शिखा रायः जी बिल्कुल अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः जी, जी धन्यवाद।

श्रीमती शिखा रायः मैं तो दो मिनट में ही कर दूंगी बस मिल जाए मुझे वो। अध्यक्ष जी मैं समाप्त कर दूं दो मिनट।

माननीय अध्यक्षः नहीं अभी तो एक मिनट अभी 10 लोग विशेष उल्लेख में हर प्रतिदिन होते हैं। हमारे मोहन सिंह बिष्ट जी कह रहे हैं कि 5 और ले लीजिए। जबकि साढ़े छः बज चुके हैं। अगर 5 और लेंगे तो आधा घंटा, सदन इजाजत नहीं दे रहा। चलिए पूरा करिए। पूरा करिए, पूरा करिए।

श्रीमती शिखा रायः जी धन्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी मेरा विषय विधानसभा में आने वाली एक रोड़ के ऊपर का है जी जिसको बीआरटी की रोड़ कहते हैं।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट पूरा करिए फिर खत्म। पूरा करिए।

श्रीमती शिखा रायः जी अध्यक्ष जी ऐसे तो बात करी ही नहीं जायेगी ना एकदम। मैं विषय लेना चाह रही हूँ जी अपने यहां की बीआरटी की रोड़ का। अभी अगले फेस में मेट्रो की जो नेस्ट फेस में आ रहा है मूलचंद से लेकर के खानपुर तक,कॉरिडोर मेट्रो का नया बन रहा है। अटैच हो रहा है मूलचंद से खानपुर तक और ये सारा का सारा जो मेट्रो है वो बीआरटी की रोड़ से जिसको बीआरटी रोड़ कहते हैं वो आगे तक उसपे जा रहा है। बीच में चिराग दिल्ली का एक इन्टरसेक्शन आता है, चौराहा आता है उसके ऊपर से चिराग दिल्ली का पुल जाता है और नीचे से ट्रैफिक जाता है। उस रोड पर पीक हावर्स नहीं रूटीन में भी उस चौराहे पर इतना बड़ा जाम होता है कि पीछे मूलचंद ही नहीं डिफैंस कॉलोनी तक वो जाम पीक हावर्स में तो बहुत ही पीछे तक चला जाता है। मैं पीडब्लुडी मिनिस्टर साहब से ये निवेदन करना चाहती हूँ कि हमारे सभी जो आरडब्लुऐज हैं वहां पर बहुत सारे और अन्य लोगों के उसमें प्रस्ताव ये आया है कि उस बीआरटी की रोड पे उस इन्टरसेक्शन पर एक बाइपास होना चाहिए। जब मेट्रो बन रहा होगा। मेट्रो अथॉरिटी से बात हुई तो उन्होंने कहा कि इस समय जब प्रपोजल बन रही है तो अगर पीडब्लुडी डिपार्टमेंट इसमें हमारे साथ बातचीत करके कर लेगा तो हम अंडरपास की भी प्रोविजन कर सकते हैं और शायद वो मेट्रो बनाते हुए खुद ही उस अंडरपास को बनाने के लिए भी तैयार हों या जो भी उसमें आपकी वो बनती है मेरा निवेदन है अध्यक्ष जी आपके माध्यम से मंत्री जी से कि उस अगर अंडरपास को, आज की नहीं बहुत देर की मांग है अब तो मेट्रो आने के कारण वो और कंजेशन उस रोड पे बढ़ जायेगी सरफेस के ऊपर। तो मैं निवेदन करती

हूँ कि वो अंडरपास वहां पर मंजूर किया जाए और उसको आप आगे बढ़ाकर बनवाने की कृपा करें।

माननीय अध्यक्षः अब सदन की कार्यवाही मंगलवार दिनांक 05 अगस्त, 2025 को अपराह्न 2 बजे तक के लिए स्थिगित की जाती है। धन्यवाद।

( सदन की कार्यवाही मंगलवार दिनांक 05 अगस्त, 2025 को अपराह्न 2 बजे तक के लिए स्थिगित की गई।)

......................समाप्त.....................